

अनंत शशांत

(अनंत जन्माला)

मुफारीजलालद्दीन अल्हाद अमजदी

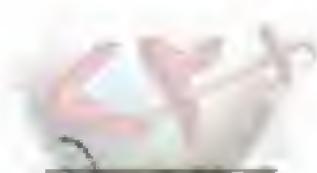


www.jannatikaun.com

अनवारे शरीअत

उफ्फ

अट्ठी नमाज़



लेखक

मुफ्ती जलालुद्दीन अहमद अनजदी
दारुल ऊलूम अमजदिया हैदरपुर
ओड्डा गंज, जि० बल्ली

हिन्दी कर्ता

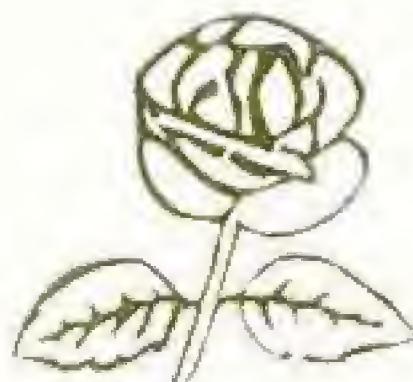
मौलाना अलाउद्दीन साबिर बस्तवी
हैदर पुर ओड्डा गंज बस्ती

इनतिसाब

अपने वालिदैन करीमैन के नाम । जिनके तक़वा परहेज़गारी और दुआए सुब्हगाहो की बरकत से मैं तदरीस, तसनीफ और इफ्ता की स्विदमत के लाइक हुआ । खुदाए तआला उनकी क़ब्रों पर रहमत के फूल बरसाये ।



जलालुदीन अहमद अमजदी



अरबी हुरफ़ हिन्दी में

س	ت	ث	ب	پ	ا
د	خ	خ	ح	ح	ج
س	ج	ن	ر	ر	ذ
ت	ج	ض	س	ص	ش
ف	غ	ع	م	ع	ظ
م	ل	ل	ک	ل	ک
ي	ه	ه	و	و	ن
	ت	ت			

फिहरिस्ते-माज़ामीन

नू	मज़मून	पेज
1.	अल्लाह के बारे में अक़ीदा	10
2.	फ़रिशते	11
3.	खोदाये तज़ाला की किताबें	12
4.	रसूल और नबी	13
5.	हमारे नबी अलैहिस्सलाम	13
6.	क़ियामत का बयान	15
7.	तक़दीर का बयान	16
8.	मरने के बाद ज़िन्दा होता है?	17
9.	शिर्क व कुफ़्र का बयान	18
10	बिदअ़त का बयान	21
11	कुजूू का बयान	25
12	गुस्ल का बयान	28
13	तयम्मुम का बयान	30
14	इस्तिन्जा का बयान	33
15	पानी और जान्वरों के झूटे का बयान	34
16	कूपें का बयान	36
17	नजासत का बयान	38

नं०	मज़्मून	पेज
18	हैज़ व नेफ़ास व जनाबत का बयान	40
19	नमाज़ के वक्तों का बयान	42
20	मकरूह वक्तों का बयान	44
21	अज़ान व इकामत का बयान	45
22	अज़ान के बाद की दुआ	48
23	तादादे रकअत और नियत का बयान	48
24	नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा	54
25	नमाज़ के बाद की दुआ	57
26	औरतों के लिये नमाज़ के मख़्सूस मसाइल	57
27	नमाज़ की शर्तें	58
28	इस्तिलाहाते शरअीया	59
29	नमाज़ के फ़राइज़	61
30	नमाज़ के वाजिबात	63
31	नमाज़ की सुन्नतें	64
32	क़िराअत का बयान	66
33	जमात और इमामत का बयान	68
34	नमाज़ फ़ासिद करने वाली चीज़ें	70
35	नमाज़ के मकरूहात	72

मज़्बून

नू	पेज	
36	विना का बयान	74
37	सुन्नत और नफल का बयान	75
38	तहीयतुल दुजू	77
39	नमाज़े इशाराक	77
40	नमाज़े चाश्त	78
41	नमाज़े तहज्जुद	78
42	सलातुल्लसबीह	79
43	नमाज़े हाजत	80
44	तरावीह का बयान	80
45	क़ज़ा नमाज़ का बयान	83
46	सजदये सह्व का बयान	86
47	बीमार की नमाज़ का बयान	90
48	सजदये तिलावत	92
49	मुसाफिर की नमाज़ का बयान	95
50	जुमा का बयान	97
51	ईद और बकरईद का बयान	102
52	कुर्बानी का बयान	105
53	अकीका का बयान	106

JANMATI KAUN?

नू.	मज़्मून	पैज
54	नमाज़े जनाज़ा का बयान	109
55	ज़कात का बयान	111
56	उश्र का बयान	114
57	ज़कात का माल किन लोगों पर सर्फ़ किया जाये।	115
58	सदक़ये फिन्न का बयान	117
59	रोज़ा का बयान	119
60	रोज़ा तोड़ने और न तोड़ने वाली चीज़ें	121
61	रोज़ा के मकरूहात	122
62	निकाह का बयान ATI KAUN?	123
63	निकाह पढ़ाने का तरीक़ा	125
64	तलाक़ का बयान	126
65	इहत का बयान	127
66	खाने का बयान	128
67	पीने का बयान	129
68	लिबास का बयान	129
69	ज़ीनत (शृंगार) का बयान	130
70	सोने का बयान	131

नं०	मज़्मून	पेज
71	फातिहा का आसान तरीका	132
72	इस्लामी कलमे	133
73	ईमाने मुजमल व मुफस्सल	134
74	दुरूद शारीफ और मुफीद दुआयें	134



पहली नज़र

अनवारे शारीअत उर्फ अच्छी नमाज़ जिसमें ज़रूरी अक़ीदे और रोज़ाना पेश आने वाले नमाज़ वगैरह के शरआती मसाइल का बयान है। और जिसे हमने बीस साल फ़तावा लिखने के तजरबा के बाद मुरत्तब किया है। इसका उर्दू एडीशन कई बार छप कर बे इन्टिहा मक़बूल हुआ। कुछ लोगों ने इस किताब को हिन्दी में छापने की ख्वाहिश ज़ाहिर की ताकि हिन्दी जानने वाले लोग भी इस किताब से फ़ायदा उठा सकें। मगर बहुत दिनों तक इस काम के लिए कोई मुनासिब आदमी न मिल सका आखिर मौलाना अलाउद्दीन साहिब मुदर्रिस मदरसा अमाजदिया अरशादुल अलूम ओझागंज ज़िला बस्ती ने इस किताब को हिन्दी में कर दिया जिसे हम छापते हुए बड़ी खुशी महसूस कर रहे हैं और दुआ करते हैं कि खोदाए तआला मुसलमानों को इस हिन्दी एडीशन से भी, ज़्यादह से ज़्यादह फ़ायदा उठाने की तौफ़ीक अता फ़रमाये और आखिरत में हमारे लिए इस किताब को बख़्शिश का सामान बनाये। आमीन

जलालुद्दीन अहमद अमजदी

15 रबिअुल आख़र 1400 हिजरी 3 मार्च 1980 ईसवी

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहस्यत वाला है ।

अल्लाह तआला

सवाल:- अल्लाह तआला के बारे में कैसा अकीदा रखना चाहिए?

जवाब:- अल्लाह तआला एक है उसका कोई शरीक नहीं । आसमान व ज़मीन और सारी मख़्लूकात का पैदा करने वाला वही है । वही इबादत के लाइक है दूसरा कोई इबादत के लाइक नहीं है । वही सबको रोज़ी देता है । अमीरी ग़रीबी और इज़ज़त व ज़िल्लत सब उसके इखतियार में है । जिसे चाहता है इज़ज़त देता है । और जिसे चाहता है ज़िल्लत देता है । उसका हर काम हिक्मत है । बंदो की समझ में आये या न आये वह हर कमाल व खूबी वाला है । झूट, दग्धा, ख़ियानत, जुल्म जिह्ल वगैरह हर ऐब से पाक है । उसके लिए किसी ऐब का मानना कुफ्र है ।

सवाल:- क्या अल्लाह तआला को बुढ़ऊ कहना जाइज़ है?

जवाब:- अल्लाह तआला की शान में ऐसा लफ़ज़ बोलना कुफ्र है ।

सवाल:- बाज़ लोग कहते हैं कि “ऊपर वाला जैसा चाहेगा वैसा होगा” और कहते हैं “ऊपर अल्लाह है नीचे तुम हो” या इस तरह कहते हैं कि “ऊपर अल्लाह नीचे पंच हैं”

जवाबः- यह सब जुमले गुमराही के हैं, मुसलमानों को इन से बचना निहायत जुरुरी है।

फ़रिश्ते

सवालः- फ़रिश्ते क्या चीज़ हैं ?

जवाबः- फ़रिश्ते इन्सान की तरह एक मख़्लूक हैं लेकिन वह नूर से पैदा किए गए हैं। न वह मर्द हैं। न औरत हैं न कुछ खाते हैं न कुछ पीते हैं। जितने काम खुदायेतआला ने उनके सिपुर्द किया है उसी में लगे रहते हैं। कुछ फ़रिश्ते बंदों का अच्छा बुरा अ़मल लिखने पर मुकर्रर हैं जिनको किरामन कातिबीन कहा जाता है। कुछ फ़रिश्ते क़ब्र में मुर्दों से सुवाल करने पर मुकर्रर हैं, जिनको मुनकर नकीर कहा जाता है। और कुछ फ़रिश्ते हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम के दरबार में मुसलमानों के दुरुद व सलाम पहुंचाने पर मुकर्रर हैं, उनके अलावा और भी बहुत से काम हैं जो फ़रिश्ते अनजाम देते रहते हैं। उनमें चार फ़रिश्ते बहुत मशहूर हैं, अब्बल हज़रते जिबरील अलैहिस्सलाम जो अल्लाह तआला के अ़हकाम पैग़म्बरों तक पहुंचाते थे दूसरे हज़रते इसराफ़ील अलैहिस्सलाम जो कियामत के दिन सूर फूंकेंगे तीसरे हज़रते मीकाईल अलैहिस्सलाम जो पानी बरसाने और रोज़ी पहुंचाने पर मुकर्रर हैं, और चौथे हज़रते इज़राईल अलैहिस्सलाम जो लोगों की जान निकालने पर मुकर्रर हैं। जो शर्क्स यह कहे फ़रिश्ता कोई चीज़ नहीं या यह कहे कि फ़रिश्ता

नेकी को कूवत का नाम है तो वह काफ़िर है ।

खुदाये तआला की किताबें

सवालः- खुदाये तआला की किताबें कितनी हैं ?

जवाबः- खुदाये तआला की छोटी बड़ी बहुत सी किताबें नाज़िल हुई बड़ी किताब को किताब और छोटी को सहीफ़ह कहते हैं, उनमें चार किताबें बहुत मशहूर हैं अब्बल तौरेत जो हज़रते मूसा अलैहिस्सलाम पर नाज़िल हुई दूसरे ज़बूर जो हज़रते दाऊद अलैहिस्सलाम पर नाज़िल हुई और तीसरे इन्जील जो हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम पर नाज़िल हुई चौथे कुरान मजीद जो हमारे नबी سल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पर नाज़िल हुआ ।

सवालः- पूरा कुरान मजीद एक दफ़ा नाज़िल हुआ या थोड़ा-थोड़ा ?

जवाबः- पूरा कुरान मजीद एक दफ़ा इकट्ठा नहीं नाज़िल हुआ बल्कि ज़रूरत के मुताबिक् 23 तेईस बरस में थोड़ा-थोड़ा नाज़िल हुआ ।

सवालः- क्या कुरान मजीद की हर सूरत और हद आयत पर ईमान लाना ज़रूरी है ?

जवाबः- हाँ कुरान मजीद की हर सूरत पर ईमान लाना ज़रूरी है अगर एक आयत का भी इन्कार कर देया यह कहे कि कुरान जैसा नाज़िल हुआ था अब वैसा नहीं है, बल्कि घटा बढ़ा दिया

गया है तो वह काफिर है।

रसूल और नबी

सवालः- रसूल और नबी कौन होते हैं ?

जवाबः- रसूल और नबी खुदयेतआला के बन्दे और इन्सान होते हैं। अल्लाह तआला ने उनको इन्सान की हिदायत के लिए दुनिया में भेजा है। वह बंदों तक खुदायेतआला का पैग़ाम पहुंचाते हैं। मुअजिज़े दिखाते हैं और गैब की बातें बताते हैं झूट कभी नहीं बोलते वह हर गुनाह से पाक साफ़ होते हैं। उनकी तादाद कुछ कम व वेश एक लाख चौबीस हज़ार या तक़रीबन दो लाख चौबीस हज़ार है, सब से पहले नबी हज़रते आदम अलैहिस्सलाम हैं और सबसे आखिरी नबी हमारे पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम हैं।

सवालः- क्या हम हिन्दुओं के पेशवावों को नबी कह सकते हैं!

जवाबः- किसी शरू़स को नबी कहने के लिए कुरान व हदीस से सुबूत चाहिए और हिन्दुओं के पेशवावों के नबी होने पर कुरान व हदीस से कोई सुबूत नहीं मिलता इस लिए हम उन्हें नबी नहीं कह सकते।

हमारे नबी

सवालः- हमारे नबी कौन हैं ? उनका कुछ हाल बयान कीजिए ?

जवाबः- हमारे नबी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम हैं, जो 12 रबीउल अब्वल मुताबिक़ 20 अप्रैल सन् 571 ई० में मक्का शरीफ़ में पैदा हुए उनके बालिद का नाम हज़रते अब्दुल्लाह और बालिद का नाम हज़रते आमिना है (रज़ियल्लाह तआला अनहुमा) आप की ज़ाहिरी ज़िन्दगी तिरस्थ (63) बरस की हुई तिरफ़न (53) बरस की उम्र तक मक्का शरीफ़ में रहे फिर दस साल मदीना तैयिबा में रहे 12 रबीउल अब्वल सन् 11 हिजरी मुताबिक़ 12 जून सन् 632 ई० में वफ़ात पाई, आपका मज़ारे मुबारक मदीना शरीफ़ में है। जो मक्का शरीफ़ से तक़रीबन 320 किलो मीटर उत्तर है।

सवालः- हमारे नबी की कुछ खूबियां बयान कीजिए ?

जवाबः- हमारे नबी सैयिदुल अबिया और नबीयुल अबिया हैं यानी अबियाएं किराम के सरदार हैं और तमाम अबिया हुजूर के उम्मती हैं। आप खातमुन्बिर्बोईन हैं यानी आप के बाद कोई नबी नहीं पैदा होगा जो शरूस आप के बाद नबी होने को जाइज़ समझे वह काफ़िर है सारी मख़्लूक़ात खुदायेतआला की रज़ा चाहिती है और खुदायेतआला हुजूर की रज़ा चाहता है। हुजूर की फ़रमांबरदारी अल्लाहतआला की फ़रमाबरदारी है ज़मीन व आसमान की सारी चीज़ें आप पर जाहिर थीं दुनियां के हर गोशे और हर कोने में कियामत तक जो कुछ होने वाला है हुजूर उसे इस तरह मुलाहिजा फ़रमाते हैं जैसे कोई अपनी हथेली देखौं, ऊपर नीचे आगे और पीठ के पीछे यकसां देखते थे। आप के

लिए कोई चीज़ आँड़ नहीं बन सकती हुजूर जानते हैं कि ज़मीन के अन्दर कहाँ क्या हो रहा है ।

खुशू जो दिल की एक कैफियत का नाम है हुजूर उसे भी मुलाहजा फ़रमाते हैं, हमारे चलने फिरने उठने बैठने और खाने पीने वगैरा हर कौल व फ़ेल की हुजूर को हर वक्त ख़बर है ।

सवालः- क्या हमारे नबी ज़िन्दा हैं ?

जवाबः- हमारे नबी और तमाम अबियाये किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम ज़िन्दा हैं । हदीस शरीफ में है कि सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम ने फ़रमाया कि खुदायेतआला ने ज़मीन पर अबियाये किराम अलैहिमुस्सलाम के जिस्मों को खाना हराम फ़रमा दिया है । तो अल्लाह के नबी ज़िन्दा हैं रोज़ी दिये जाते हैं, (मिश्कात 121 पृ०)

सवालः- जो शर्ख़स अबियाएँ किराम के बारे में कहे कि मर कर मिट्टी में मिल गए तो उसके लिए क्या हुक्म है ?

जवाबः- ऐसा कहने वाला गुमराह बदमज़्हब ख़बीस है ।

क़ियामत का व्यापार

सवालः- क़ियामत किसे कहते हैं ?

जवाबः- क़ियामत उस दिन को कहते हैं जिस दिन हज़रते इसराफ़ील अलैहिस्सलाम सूर फूंकेंगे सूर सींग के शक्ल की एक चीज़ है जिसकी आवाज़ सुनकर सब आदमी और तमाम जानवर मर जाएंगे ज़मीन, आसमान, चांद, सूरज और पहाड़ वगैरह दुनिया की हर चीज़ टूट फूट कर फ़ना हो जाएंगी यहाँ तक कि

सूर भी खत्म हो जाएगा और इसराफ़ील अलैहिस्सलाम भी फ़ना हो जाएंगे यह वाकिअह मुहर्रम की दसवीं तारीख जुमा के दिन होगा ।

सवाल:- क़ियामत की कुछ निशानियां बयान कीजिए ?

जवाब:- जब दुनियां में गुनाह ज्यादा होने लगे 'हराम' कामों को लोग खुल्लमखुल्ला करने लगें मां बाप को तकलीफ़ दें और गैरों से मेल जोल रख्खें अमानत में खियानत करें "ज़कात देना लोगों पर गिरां गुज़रे" दुनियां हासिल करने के लिए इल्मेदीन पढ़ा जाए "नाच माने का रवाज ज्यादा हो जाए" बदकार लोग क़ौम के पेशवा और लीडर हो जाएं चरवाहे बगैरह कम दर्जा के लोग बड़ी बड़ी बिल्डिंगों और कोठियों में रहने लगें तो समझ लो कि क़ियामत क़रीब आ गई है ।

सवाल:- जो शरूस क़ियामत का इन्कार करे उसके लिए क्या हुक्म है ?

जवाब:- क़ियामत क़ाइम होना हक़ है उसका इन्कार करने वाला काफ़िर है ।

तक़दीर का बयान

सवाल:- तक़दीर किसे कहते हैं ?

जवाब:- दुनियां में जो कुछ होता है और बन्दे जो कुछ भलाई बुराई करते हैं खुदायेतआला ने उसे अपने इल्म के मुआफ़िक़

पहले से लिख लिया है उसे तक़दीर कहते हैं।

सवालः- क्या अल्लाहतआला ने जैसा हमारी तक़दीर में लिख दिया है हमें मजबूरन वैसा करना पड़ता है ?

जवाबः- नहीं अल्लाहतआला के लिख देने से हमें मजबूरन वैसा करना नहीं पड़ता है बल्कि हम जैसा करने वाले थे अल्लाह तआला ने अपने इत्म से वैसा लिख दिया अगर किसी की तक़दीर में बुराई लिखी तो इस लिए कि वह बुराई करने वाला था अगर वह भलाई करने वाला होता तो खुदाये तआला उसकी तक़दीर में भलाई लिखता खुलासह यह कि खुदायेतआला के लिख देने से बन्दा किसी काम के करने पर मजबूर नहीं किया गया। तक़दीर हक़ है उसका इन्कार करने वाला गुमराह बदमज़हब है।

JANNATI KAUN?

मरने के बाद ज़िन्दा होना

सवालः- मरने के बाद ज़िन्दा होने का मतलब क्या है ?

जवाबः- मरने के बाद ज़िन्दा होने का मतलब यह है कि कियामत के दिन जब ज़मीन, आसमान, इन्सान और फ़रिश्ते वगैरा सब फ़ना हो जाएंगे तो फिर खुदायेतआला जब चाहेगा हज़रते इसराफ़ील अलैहिस्सलाम को ज़िन्दा फ़रमाएगा वह दोबारा सूर फूंकेंगे तो सब चीजें तो सब चीजें मौजूद हो जाएंगी। फ़रिश्ते और आदमी वगैरा सब ज़िन्दा हो जाएंगे मुरदे अपनी अपनी क़बरों से उठेंगे, हश्र के मैदान में खुदायेतआला के सामने

पेशी होगी, हिसाब लिया जाएगा और हर शख्स को अच्छे बुरे कामों का बदला दिया जाएगा यानी अच्छों को जन्नत मिलेगी और बुरों को जहन्नम में भेज दिया जाएगा हिसाब और जन्नत व दोज़ख हक़ हैं उनका इन्कार करने वाला काफ़िर है।

शिर्क व कुफ़ का व्याख्यान

सवालः- शिर्क किसे कहते हैं ?

जवाबः- खुदायेतआला की ज़ात व सिफ़ात में किसी को शरीक ठहराना शिर्क है। ज़ात में शरीक ठहराने का मतलब यह है कि दो या दो से ज़ियादा खुदा माने जैसे ईसाई कि तीन खुदा मान कर मुश्विरक हुए और जैसे हिन्दू कि कई खुदा मानने के सबब मुश्विरक हैं। और सिफ़ात में शरीक ठहराने का मतलब यह है कि खुदायेतआला की सिफ़ात की तरह किसी दूसरे के लिए कोई सिफ़त सावित करे मसलन सुनना और देखना बगैर जैसा कि खुदायेतआला के लिए बगैर किसी के दिए ज़ाती तौर पर सावित है उसी तरह किसी दूसरे के लिए सुनना और देखना बगैर ज़ाती तौर पर माने कि बगैर खुदा के दिए उसे यह सिफ़तें खुद हासिल हैं तो शिर्क है और आगर किसी दूसरे के लिए अताई तौर पर माने कि खुदायेतआला ने उसे यह सिफ़तें अ़ता की हैं तो शिर्क नहीं जैसा कि अल्लाहतआला ने खुद इन्साफ़ के बारे में पारा 29 रुकू 19 में फ़रमाया जिसका तर्ज़मा यह है कि हमने

इन्सान को सुनने वाला, देखने वाला बनाया ।

सवाल:- कुफ्र किसे कहते हैं ?

जवाब:- ज़रूरियाते दीन में से किसी एक बात का इन्कार करना कुफ्र है ज़रूरियाते दीन में से किसी एक बात का इन्कार करना कुफ्र है ज़रूरियाते दीन बहुत हैं उनमें से कुछ यह है खुदायेतआला को एक और वाजिबुलबजूद मानना, उसकी ज़ात व सिफात में किसी को शारीक न समझना, जुल्म और झूट बगैरा तमाम उद्दूब से उसको पाक मानना, उसके मलाइका और उसकी तमाम किताबों को मानना, कुरान मजीद की हर आयत को हक़ समझना, हुजूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम और तमाम अबियायेकिराम की उद्दूवत को तस्लीम करना उन सबको अज़मत वाला जानना, उन्हें ज़लील और छोटा न समझना उनकी हर बात जो क़तई और यकीनी तौर पर साबित हो उसे हक़ जानना हुजूर अलैहिस्सलाम को खातमुभवीयीन मानना उनके बाद किसी नबी के पैदा होने को जाइज़ न समझना, क़ियामत हिसाब व किताब और जन्नत व दोज़ख को हक़ मानना, नमाज़ व रोज़ा और हज व ज़कात की फ़रज़ीयत को तस्लीम करना, जिना, चोरी और शराब नोशी बगैरा हराम क़तई की हुरमत का इतिकाद करना और काफ़िर को काफ़िर जानना बगैरा ।

सवाल:- किसी से शिर्क या कुफ्र हो जाए तो क्या करे ?

जवाबः- तौबा और तजदीदे ईमान करे बीबी वाला हो तो तजदीदे निकाह करे और मुरीद हो तो तजदीदे बैअूत भी करे ।

सवालः- शिर्क और कुफ्र के अलावा कोई दूसरा गुनाह हो जाए तो मुआफ़ी की क्या सूरत है ?

जवाबः- तौबा करे खुदायेतआला की बारगाह में रोये गिड़गिड़ाये अपनी ग़लती पर नादिम व पशीमा हो और दिल में पवका अहद करे कि अब कभी ऐसी ग़लती न करूँगा सिर्फ़ जुबान से तौबा तौबा कह लेना तौबा नहीं है ।

सवालः- क्या हर किस्म का गुनाह तौबा से मुआफ़ हो सकता है ?

जवाबः- जो गुनाह किसी बन्दा की हक़तलफ़ी से हो मसलन किसी का माल ग़सब कर लिया, किसी पर तुहसत लगाई या जुल्म किया तो इन गुनाहों की मुआफ़ी के लिए ज़रूरी है कि पहले उस बन्दे का हक़ वापस किया जाए या उससे मुआफ़ी मांगी जाए फिर खुदायेतआला से तौबा करे तो मुआफ़ हो सकता है । और जिस गुनाह का तज़ल्लुक़ किसी बन्दा की हक़तलफ़ी से नहीं है बल्कि सिर्फ़ खुदायेतआला से है उसकी दो किस्में हैं एक वह जो सिर्फ़ तौबा से मुआफ़ हो सकता है जैसे शराब नोशी का गुनाह और दूसरे वह जो सिर्फ़ तौबा से मुआफ़ नहीं हो सकता है जैसे नमाज़ों के न पढ़ने का गुनाह इसके लिए ज़रूरी है कि वक़त पर नमाज़ों के अदा न करने का जो गुनाह हुआ उससे

तौबा करे और नमाजों की कज़ा पढ़े अगर आखिरे उम्र में कुछ कज़ा रह जाए तो उनके फ़िदयह की वसीयत कर जाए ।

बिदअ़त का बयान

सवाल:- बिदअ़त किसे कहते हैं । और उसकी कितनी किस्में हैं ।

जवाब:- इसतिलाहे शरा (इस्लामी बूली) में बिदअ़त ऐसी चीज़ के ईजाद करने को कहते हैं जो हुजूर अलैहिस्सलाम के ज़ाहिरी ज़माना में न हो ख्वाह वह चीज़ दीनी हो या दुनियावी (अशिअ़तुल्लमआत जिल्द अब्बल सफ़ा 125) और बिदअ़त की तीन किस्में हैं । बिदअते हसना, बिदअते सय्येआ, बिदअते मुबाहा बिदअते हसना वह बिदअत है जो कुरान व हदीस के वसूल व क़वाइद के मुताबिक़ हो और उन्हीं पर कियास किया गया हो उस की दो किस्में हैं । अब्बल बिदअतेवाजिबा जैसे कुरान व हदीस समझने के लिए इल्मे नहूव् का सीखना और गुमराह फ़िरके मसलन खारजी, राफ़जी, कादियानी और वहाबी वगैरा पर रद के लिए दलाइल कायम करना ।

दोम बिदअते मुस्तहब्बा जैसे मदरसों की तामीर और हर वह नेक काम जिसका रवाज इबतिदाए ज़माना में नहीं था जैसे अज़ान के बाद सलात पुकारना, दुर्ए मुख़तार बाबुल अज़ान में हैं कि अज़ान के बाद अस्सलातु वस्सल्लमु अलैक या रसूलल्लाह पुकारना, माहे रबीउल आख़र सन् 781 हिजरी में जारी हुआ

और यह बिदअते हसना है।

सवालः- बिदअते सथ्येआ किसे कहते हैं। और उसकी कितनी किस्में हैं।

जवाबः- बिदअते सथ्येआ वह बिदअत है जो कुरान व हदीस के उसूल व क़वाइद के मुख्यालिफ़ हो (अशिअतुल्लम आतजिल्द अब्बल सफ़ा 125) उसकी दो किस्में हैं।

अब्बल बिदअते मुहर्रमा जैसे हिन्दुस्तान की मुख्यजा ताज़ियादारी (फ़तावा अज़ीज़िया रिसाला ताज़ियादारी आला हज़रत) और जैसे अहलेसुन्नत व जमाअत के ख़िलाफ़ नए अक़ीदा वालों के मज़ाहिब (अशिअतुल्लमआत जिल्द अब्बल सफ़ा 125) दो में बिदअते मकरुहा जैसे जुमा व ईदैन का खुतबा गैरे अरबी में पढ़ना।

सवालः- बिदअते मुबाहा किसे कहते हैं।

जवाबः- जो चीज़ हुजूर अलैहिस्सलाम के ज़ाहिरी ज़माना में न हो और जिसके करने न करने पर सवाब व अज़ाब न हो उसे बिदअते मुबाहा कहते हैं (अशिअतुल्लमआत जिल्द अब्बल सफ़ा 125) जैसे खाने पीने में कुशादगी इख़तियार करना और रेल गाड़ी बैरा में सफ़र करना।

सवालः- हदीस शारीफ़ में है कि हर बिदअत गुमराही है तो इससे कौन सी बिदअत मुराद है।

जवाबः- इस हदीस शारीफ़ से सिर्फ़ बिदअते सथ्येआ मुराद है

दिखिए मिरकात शरह मिशाक़ात जिल्द अब्बल सफ़ा 179 और अशिअतुल्लमआत जिल्द अब्बल सफ़ा 125)इसलिए कि अगर बिदअ़त की तमाम क़िस्में मुराद लो जाएं जैसे कि जाहिरे हृदीस से मफ़्हूम होता है तो फ़िक़ह, इल्मे कलाम और सर्फ़ व नहू व वग़ैरा की तदवीन और उनका पढ़ना पढ़ाना सब ज़लालत व गुमराही हो जाएगा ।

सवालः- क्या बिदअ़त का हसना और सव्येजा होना हृदीस शरीफ़ से भी साबित है ।

जवाबः- हाँ बिदअ़त का हसना और सव्येजा होना हृदीस से भी साबित है तिरमिज़ी शरीफ़ में है कि हज़रते उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहुत्तमाता अनहू ने तरावीह की बाक़ायदा जमाअ़त काइम करने के बाद फ़रमाया कि यह बहुत अच्छी बिदअ़त है (मिशाकात सफ़ा 115) और मुस्लिम शरीफ़ में हज़रते जरीर रज़ियल्लाहुअनहू से रिवायत है कि रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया कि जो इस्लाम में किसी अच्छे तरीक़ को राइज करेगा तो उसको अपने राइज करने का भी सवाब मिलेगा और उन लोगों के अमल करने का भी सवाब मिलेगा जो उसके बाद उस तरीक़ पर अमल करते रहेंगे और अमल करने वालों के सवाब में कोई कमी भी न होगी और जो शारूस मज़हबे इस्लाम में किसी बुरे तरीक़ को राइज करेगा तो उस शारूस पर उसके राइज करने का भी गुनाह होगा

और उन लोगों के अमल करने का भी गुनाह होगा जो उसके बाद उस तरीका पर अमल करते रहेगे और अमल करने वालों के गुनाह में कोई कमी भी न होगी (मिशनात सफा 33)

सवाल:- क्या मीलाद शरीफ की महफिल मुनअ़किद करना बिदअ़ते सच्चेआ है ।

जवाब:- मीलाद शरीफ की महफिल मुनअ़किद करना उस में हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम की पैदाइश के हालात और दीगर फ़ज़ाइल व मनाकिब बयान करना बरकत का बाइस है । उसे बिदअ़ते सच्चेआ कहना गुमराही व बदमज़हबी है ।

सवाल:- क्या हुजूर अलैहिस्सलाम के ज़माने में मथित का तीजा होता था ।

जवाब:- मथित का तीजा और इसी तरह दसवां, बीसवां और चालीसवां बगैरह हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम के ज़ाहिरी ज़माना में नहीं होता था बल्कि यह सब बाद की ईजाद हैं और बिदअ़ते हसना हैं इसलिए कि इनमें मथित के ईसाले सवाब के लिए कुरान ख्वानी होती है । सदक़ा खैरात किया जाता है और गुरबा व मसाकीन को खाना खिलाया जाता है और यह सब सवाद के काम हैं । हाँ इस मौक़ा पर दोस्त व अहबाब और अज़ीज़ व अकारीब की दावत करना ज़रूर बिदअ़ते सच्चेआ है (शामी जिल्द अन्वल सफा स० 629 फ़तहुल क़दीर जिल्द दोम सफा 102)

किताबुल आमाल

बजू का बयान

सवालः- बजू करने का तरीका क्या है।

जवाबः- बजू करने का तरीका यह कि पहले तस्मिया (बिस्मिल्लह) पढ़े फिर मिसवाक करे अगर मिसवाक न हो तो उंगली से दांत मसले फिर दोनों हाथों को गद्दों तक तीन बार धोए पहले दाहिने हाथ पर पानी डाले फिर बाएं हाथ पर दोनों हाथों को एक साथ न धोए फिर दाहिने हाथ से तीन बार कुल्ली करे फिर बाएं हाथ की छोटी उंगली से नाक साफ करे और दाहिने हाथ से तीन बार नाक में पानी चढ़ाए फिर पूरा चेहरा धोए यानी पेशानी पर बाल उगने की जगह से ढोड़ी के नीचे तक और एक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक हर हिस्सा पर तीन बार पानी बहाए इसके बाद दोनों हाथ कुहनियों समेत तीन बार धोए उंगलियों की तरफ से कुहनियों के ऊपर तक पानी डाले कुहनियों की तरफ से न डाले फिर एक बार दोनों हाथ से पूरे सर का मसह करे फिर कानों का और गर्दन का एक एक बार मसह करे फिर दोनों पांव टखनों समेत तीन बार धोए।

सवालः- धोने का क्या मतलब क्या है।

जवाबः- धोने का मतलब यह है कि जिस चीज़ को धोवो उसके हर हिस्सा पर पानी बह जाए।

सवालः- अगर कुछ हिस्सा भीग गया मगर उस पर पानी नहीं बहा तो बजू होगा या नहीं ।

जवाबः- इस तरह बजू हरगिज़ न होगा भीगने के साथ हर हिस्सा पर पानी बह जाना ज़रूरी है ।

सवालः- बजू में कितनी चीजें फ़र्ज हैं ।

जवाबः- बजू में चार चीजें फ़र्ज हैं । अब्बल मुंह धोना यानी बाल निकलने की जगह से ठोड़ी के नीचे तक और एक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक दूसरे कुहनियों समेत दोनों हाथ धोना तीसरे चौथाई सर का मसह करना यानी भीगा हुआ हाथ फेरना चौथे दोनों पांव टखनों समेत धोना ।

सवालः- बजू में सुन्नतें कितनी हैं ।

जवाबः- बजू में सुन्नतें सोलह हैं नीयत करना, तस्मिया पढ़ कर शुरू करना, दोनों हाथों को गद्दों तक तीन बार धोना, मिसवाक करना, दाहिने हाथ से तीन बार कुल्लियां करना दाहिने हाथ से तीन बार नाक में पानी चढ़ाना, बाएं हाथ से नाक साफ़ करना, दाढ़ी का खिलाल करना, हाथ पांव की उंगलियों का खिलाल करना हर उज्ज्व को तीन तीन बार धोना, पूरे सर का एक बार मसह करना, कानों का मसह करना, तरतीब से बजू करना, दाढ़ी के जो बाल मुंह के दायरे के नीचे हैं उनका मसह करना, आज़ा को पैदर पै धोना, हर मकरुह बात से बचना ।

सवालः- बजू में कितनी बातें मकरुह हैं ।

जवाब:- वजू में इककीस बातें मकरह हैं। औरत के गुस्त या वजू के बचे हुए पानी से वजू करना। वजू के लिए नजिस जगह बैठना, नजिस जगह वजू का पानी गिराना, मस्जिद के अन्दर वजू करना, वजू के आज़ा से बरतन में क़तरे टपकाना, पानी में रीठ या खंकार डालना। किंविला की तरफ़ थूक या खंकार डालना या कुल्ली करना। बेज़रूरत दुनियां की बातें करना, ज़रूरत से ज्यादा पानी खर्च करना, पानी इस क़दर कम खर्च करना कि सुन्नत अदा न हो, मुंह पर पानी मारना, मुंह पर पानी डालते बक़त फूंकना, सिर्फ़ एक हाथ से मुंह धोना, गले का मसह करना, बांए हाथ से कुल्ली करना या नाक में पानी डालना, दाहिने हाथ से नाक साफ़ करना, अपने लिए कोई लोटा बगैरह खास कर लेना, तीन नए पानियों से तीन बार सर का मसह करना जिस कपड़े से इस्तिनजा का पानी खुश्क किया हो उससे आज़ाए बुजू पोंछना, धूप के गर्म पानी से वजू करना, किसी सुन्नत को छोड़ देना।

सवाल:- किन चीज़ों से वजू दूट जाता है।

जवाब:- पाखाना या पेशाब करना, पाखाना पेशाब के रास्ते से किसी और चीज़ का निकलना, पाखाना के रास्ते से हवा का निकल जाना, बदन के किसी मुक़ाम से खून या पीप निकलकर ऐसी जगह बहना कि जिसका वज़ या गुस्त में धोना फ़र्ज़ है, खाना पानी या सफ़रा की मुंह भर कै आना, इस तरह सो जाना कि जिसम के जोड़ ढीले पड़ जाएं बेहोश होना जुनून होना, गशी

होना, किसी चीज़ का इतना नशा होना कि चलने में पांव लड़खड़ाएं, रुकू और सज्दा वाली नमाज़ में इतनी ज़ोर से हँसना कि आस पास वाले सुनें, दुखती आंख से आंसू बहना, इन तमाम बातों से बजू दूट जाता है।

गुस्त्ल का बयान

सवाल:- गुस्त्ल करने का तरीक़ा क्या है।

जवाब:- गुस्त्ल करने का तरीक़ा यह है कि पहले गुस्त्ल की नीयत करके दोनों हाथ गँड़ों तक तीन बार धोए फिर इसतिनजा की जगह धोए उसके बाद बदन पर अगर कहों नजासते हकीकीया यानी पेशाब या पाख़ाना बगैरह हो तो उसे दूर करे फिर नमाज़ जैसा बज करे मगर पांव न धोए हाँ अगर चौंकी या पत्थर बगैरह कँची चीज़ पर नहाए तो पांव भी धोले। इसके बाद बदन पर तेल की तरह पानी चुपड़े फिर तीन बार दाहिने कंधे पर पानी बहाए और फिर तीन बार बायें कंधे पर फिर सर पर और तमाम बदन पर तीन बार पानी बहाए तभाम बदन पर हाथ फेरे और मले फिर नहाने के बाद कौरन कपड़ा पहन ले।

सवाल:- गुस्त्ल में कितनी बातें फ़र्ज़ हैं ?

जवाब:- गुस्त्ल में तीन बातें फ़र्ज़ हैं कुल्ली करना, नाक में सरूल हँड़ी तक पानी चढ़ाना, तभाम ज़ाहिर बदन पर सर से पांव तक पानी बहाना।

सवाल:- गुस्तु में कितनी बातें सुन्नत हैं !

जवाब:- गुस्तु में यह बातें सुन्नत हैं। गुस्तु की नीयत करना दोनों हाथ गट्ठों तक तीन बार धोना। इसतिनजा की जगह धोना। बदन पर जहाँ कहीं नजासत हो उसे दूर करना। नमाज़ जैसा बजू करना। बदन पर तेल की तरह पानी चुपड़ना। दाहिने मोढ़े फिर बांए मोढ़े फिर सर पर और तमाम बदन पर तीन बार पानी बहाना तमाम बदन पर हाथ फेरना और मलना। नहाने में किंबला रुख़ न होना और कपड़ा पहन कर नहाना हो तो कोई हर्ज़ नहीं। ऐसी जगह नहाना कि कोई न देखे। नहाते वक्त किसी किस्म का बलाम न करना। कोई दुआ न पढ़ना। औरतों को बैठकर नहाना। नहाने के बाद फौरन कपड़ा पहन लेना। **JANNATI KAUN?**

सवाल:- किन सूरतों में गुस्तु करना फ़र्ज़ है।

जवाब:- मनी का अपनी जगह से शहवत के साथ जुदा होकर उज्ज्व से निकलना, इहतिलाम, हशफ़ा यानी सरे ज़कर का औरत के आगे या पीछे या मर्द के पीछे दाखिल होना दोनों पर गुस्तु फ़र्ज़ करता है। हैज़ से फ़ारिग़ होना। निफ़ास का खत्म होना।

सवाल:- किन वक्तों में गुस्तु करना सुन्नत है।

जवाब:- जुमा, ईद, बक़राईद अ़फ़ा के दिन और इहराम बांधते वक्त नहाना सुन्नत है।

सवाल:- किन सूरतों में गुस्तु करना मुस्तहब्ब है।

जवाबः- बकूफे अफ़ाति, बकूफे मुजदलफ़ा, हाज़रीये हरम, हाज़रीये सरकारे आज़म सल्लल्लाहु तज़ाला अलैहिवसल्लम तवाफ़, दुखूलेमिना, तीनों दिन जमरों पर कंकरियां मारने के लिए, शबेबराजत, शवे क़द्द, अर्फा की रात, मजलिसे मीलाद शरीफ़ और दोगर मजलिसे खैर की हाज़िरी के लिए मुर्दा नहलाने के बाद, मजनून को जुनून जाने के बाद, ग़शी से इफ़ाक़ा के बाद, नशा जाते रहने के बाद, गुनाह से तौबा करने के लिए नया कपड़ा पहनने के लिए सफ़र से वापसी के बाद, इस्तिहाज़ा बन्द होने के बाद। नमाज़े कुसूफ़, खुसूफ़, इस्तिसक़ा, खौफ़, तारीकी और सख्त आंधी के लिए बदन पर नजासत लगी हो और यह सालूम न हो कि किस जगह है। इन सब सूरतों में गुस्त करना मुस्तहब है। **ATI KAUN?**

तयम्मुम का बयान

सवालः- तयम्मुम करने का तरीक़ा क्या है।

जवाबः- तयम्मुम करने का तरीक़ा यह है कि अब्बल दिल में नीयत करे फिर दोनों हाथ की उंगलियां कुशादा करके ज़मीन पर मारे और ज़्यादा गर्द लग जाए तो झाड़ ले फिर उससे सारे मुँह का मसह करे फिर दोबारा दोनों हाथ ज़मीन पर मारकर दाहिने हाथ को बाएं हाथ से और बाएं हाथ को दाहिने हाथ से कुहनियां समेत मले।

सवालः- जुबान से तयम्मुम की नीयत अदा करते वक्त व्या कहे ।

जवाबः- यह कहे नीयत की मैंने तयम्मुम की अल्लाह तज़ाता का तक़र्ब हासिल करने के लिए ।

सवालः- तयम्मुम का यह तरीक़ा वजू के लिए है या गुस्ल के लिए ।

जवाबः- तयम्मुम का यही तरीक़ा वजू और गुस्ल दोनों के लिए है ।

सवालः- तयम्मुम में कितनी बातें फ़र्ज़ हैं ।

जवाबः- तयम्मुम में तीन बातें फ़र्ज़ हैं, नीयत करना, पूरे मुंह पर हाथ फेरना, दोनों हाथों का कुहनियों समेत मसह करना, अगर आंगूठी पहने हो तो उसके नीचे हाथ फेरना फर्ज़ है । और औरत अगर चूड़ी या ज़ेवर पहने हो तो उसे हटा कर हर हिस्सा पर हाथ फेरना फर्ज़ है ।

सवालः- किन चीज़ों से तयम्मुम करना जाइज़ है ।

जवाबः- पाक मिट्टी, पत्थर, रेत, मुलतानी मिट्टी, गेरु, कच्ची या पक्की ईंट, मिट्टी और ईंट पत्थर या चूना की दीवारों से तयम्मुम करना जाइज़ है ।

सुवालः- किन चीज़ों से तयम्मुम करना जाइज़ नहीं ।

जवाबः- सोना, चांदी, तांबा, पीतल, लोहा, लकड़ी, अलमूनियम, जस्ता, कपड़ा, राख, और हर किसी के ग़ल्ला से तयम्मुम करना

जाइज़ नहीं। यानी जो चीज़ें आग में पिघल जाती हैं या जलकर राख हो जाती हैं उन चीजों से तयम्मुम करना जाइज़ नहीं।

सवाल:- तयम्मुम करना कब जाइज़ है।

जवाब:- जब पानी पर कुदरत न हो तो तयम्मुम करना जाइज़ है।

सवाल:- पानी पर कुदरत न होने की क्या सूरत है।

जवाब:- पानी पर कुदरत न होने की यह सूरत है कि ऐसी बीमारी हो कि वज़ या गुस्सा से उसके ज्यादा हो जाने का सहीह अन्देशा हो या ऐसे मुक़ाम पर मौजूद हो कि वहाँ चारों तरफ एक एक मील तक पानी का कहीं पता न हो या इतनी सरदी हो कि पानी के इस्तेमाल से मर जाने या बीमार हो जाने का कृवी अन्देशा हो या कुआं मौजूद है मगर डोल व रस्सी नहीं पाता है। इनके अलावा पानी पर कुदरत न होने की और भी सूरतें हैं जो बहारे शरीअत बगैरा बड़ी किताबों से मालूम की जा सकती हैं।

सवाल:- किन चीजों से तयम्मुम ढूट जाता है।

जवाब:- जिन चीजों से वज़ ढूट जाता है या गुस्सा वाजिब होता है उनसे तयम्मुम भी ढूट जाता है। अलावा इनके पानी पर कुदरत हो जाने से भी तयम्मुम ढूट जाता है।

इस्तिनजा का बयान

सवालः- इस्तिनजा का तरीका क्या है ?

जवाबः- पेशाब के बाद इस्तिनजा करने का तरीका यह है कि पाक मिट्टी, कंकर या फटे पुराने कपड़े से पेशाब सुखाये फिर पानी से धो डाले और पाखाना के बाद इस्तिनजा करने का तरीका यह है कि मिट्टी, कंकर या पत्थर के तीन, पांच या सात टुकड़ों से पाखाना की जगह साफ़ करले फिर पानी से धो डाले ।

सवालः- इस्तिनजा का ढेला और पानी किस हाथ से इस्तेमाल करना चाहिए ?

जवाबः- बाएं हाथ से। **SHAMATI KAUN?**

सवालः- किन चीजों से इस्तिनजा करना मना है ?

जवाबः- किसी किस्म का खाना, हड्डी, गोबर लीद, कोयला, और जानवर का चारा, इन सब चीजों से इस्तिनजा करना मना है ।

सवालः- किन जगहों पर पेशाब पाखाना करना मना है ।

जवाबः- कुएं या हौज़ या चश्मा के किनारे, पानी में अगर चे बहता हुआ हो, धाट पर, फलदार दररक्त के नीचे, ऐसे खेत में कि जिसमें खेती मौजूद हो, साया में जहाँ लोग उठते बैठते हों, मस्जिद या ईदगाह के पहलू में, क्रिस्तान या रास्ते में, जिस

जगह जानवर बंधे हों और जहां वजू या गुस्ल किया जाता हो इन सब जगहों में पाख़ाना पेशाब करना मना है।

सवालः- पाख़ाना या पेशाब करते वक्त मुंह किस तरफ़ होना चाहिए।

जवाबः- पाख़ाना या पेशाब करते वक्त किंवला की तरफ़ मुंह या पीट करना मना है हमारे मुल्क में उत्तर या दक्षिण जानिब मुंह करना चाहिए।

पानी और जानवरों के झूटे का बयान

सवालः- किन पानियों से वजू करना जाइज़ है।

जवाबः- बरसात का पानी, नदी, नाले, चश्मे, समुन्दर, दरया और कुयें का पानी, पिघली हुई बर्फ़ या ओले का पानी, तालाब या बड़े हौज़ का पानी, इन सब पानियों से वजू करना जाइज़ है।

सवालः- किन पानियों से वजू करना जाइज़ नहीं।

जवाबः- फल और दररक्त का निचोड़ा हुआ पानी या वह पानी कि जिसमें कोई पाक चीज़ मिल गई और नाम बदल गया जैसे शर्वत, शोरबा, चाय वगैरा या बड़े हौज़ और तालाब का ऐसा पानी कि जिसका रंग या बू या मज़ा किसी नापाक चीज़ के मिल जाने से बदल गया और छोटे हौज़ या घड़े का वह पानी कि जिसमें कोई नापाक चीज़ गिर गई हो या ऐसा जानवर मर गया

हो कि जिसमें बहता हुआ खून हो अगर पानी का रंग या बूँया मज़ा न बदला हो और वह पानी कि जो बजूँया गुस्सा का धोवन है। इन सब पानियों से बजूँ करना जाइज़ नहीं।

सवाल:- क्या बजूँ और गुस्सा के पानी में कुछ अर्क है।

जवाब:- नहीं, जिन पानियों से बजूँ जाइज़ है उनसे गुस्सा भी जाइज़ है और जिन पानियों पे बजूँ नाजाइज़ है गुस्सा भी नाजाइज़ है।

सवाल:- किन जानवरों का झूटा शाक है

जवाब:- जिन जानवरों का गोप्त खाया जात है उनका झूटा शाक है। जैसे गाय, बैल, भैंस, बकरी, कबूतर और फ़ारला वगैरा।

सवाल:- किन जानवरों का झूटा मकरूह है।

जवाब:- घर में रहने वाले जानवर जैसे बिल्ली, चूहा, सांप, छिपकली और उड़ने वाले शिकारी जानवर जैसे शिकरा, बाज़, बहरी, चील और कौआ वगैरा। और वह मुर्गी जो छूटी फिरती हो और नजासत पर मुँह डालती हो और वो गाय जिसकी आदत गलीज़ खाने की हो इन सब का झूटा मकरूह है।

सवाल:- किन जानवरों का झूटा नापाक है।

जवाब:- सूअर, कुत्ता, शेर, चीता, भेड़िया, हाथी, गोदड़ और दूसरे शिकारी चौपाये का झूटा नापाक है।

कुर्यें का बयान

सवालः- कुआं कैसे नापाक हो जाता है।

जवाबः- कुएं में आदमी, बैल, भैंस या बकरी गिर कर मर जाए या किसी किस्म की कोई नापाक चीज़ गिर जाए तो कुआं नापाक हो जाता है।

सवालः- कुएं में अगर कोई जानवर गिर जाए और ज़िन्दा निकाल लिया जाए तो कुआं नापाक होगा या नहीं।

जवाबः- अगर कोई ऐसा जानवर गिर गया कि उसका झूटा नापाक है जैसे कुत्ता और गीदड़ वगैरा तो कुआं नापाक हो जाएगा। और अगर वह जानवर गिरा कि जिस का झूटा नापाक नहीं जैसे गाय और बकरी वगैरा और उनके बदन पर नजासत भी न लगी हो तो गिर कर ज़िन्दा निकल आने की सूरत में जब तक उनके पाखाना पेशाब कर देने का यक़ीन न हो कुआं नापाक न होगा।

सवालः- कुआं अगर नापाक हो जाए तो कितना पानी निकाला जाएगा।

जवाबः- अगर कुएं में नजासत पड़ जाए या आदमी, बैल, भैंस, बकरी या इतना ही बड़ा कोई दूसरा जानवर गिर कर मर जाए या दो बिल्लियां मर जाएं या मुर्गी और बतख की बोट गिर जाए या मुर्गी, मुर्गी बिल्ली, चूहा, छिपकली या और कोई बहते

हुए खून वाला जानवर कुएं में गिर कर फूल जाए या फट जाए या ऐसा जानवर गिर जाए कि जिस का झूटा नापाक है अगर वे ज़िन्दा निकल आए जैसे सूअर और कुत्ता वगैरा तो इन सब सूरतों में कुल पानी निकाला जाएगा ।

सवालः- अगर चूहा या बिल्ली कुएं में में गिर कर मर जाए और फूलने फटने से पहले निकाल ली जाए तो क्या हुक्म है ।

जवाबः- चूहा, छधूंदर, गौरव्या चिड़िया, छिपकली, गिरगिट या इनके बराबर या इनसे छोटा कोई बहते हुए खून वाला जानवर कुएं में गिर कर मर जाए और फूलने फटने से पहले निकाल लिया जाए तो बीस डोल से तीस डोल तक पानी निकाला जाएगा । और अगर बिल्ली, कबूतर, मुर्गी या इतना ही बड़ा कोई दूसरा जानवर कुएं में गिर कर मर जाए और फूले फटे नहीं तो चालिस से साठ डोल तक पानी निकाला जाएगा ।

सवालः- डोल कितना बड़ा होना चाहिए ।

जवाबः- जो डोल कुएं पर पड़ा रहता है वही डोल मुतबर है और आगर कोई डोल खास न हो तो ऐसा डोल होना चाहिए कि जिसमें तकरीबन सवा पांच किलो पानी आ जाए ।

सवालः- कुएं का पानी पाक हो जाने के बाद कुआं की दीवार और डोल रस्सी भी पाक करना पड़ेगा या नहीं ।

जवाबः- कुआं की दीवार और डोल रस्सी नहीं पाक करना पड़ेगा, पानी पाक होने के साथ यह सब चीजें भी पाक हो

जाएंगी ।

नजासत का बयान

सवालः- नजासत की कितनी किस्में हैं ।

जवाबः- नजासते हकीकीया की दो किस्में हैं । नजासते ग़लीज़ा, नजासते खफ़ीफ़ा ।

सवालः- नजासते ग़लीज़ा क्या चीज़े हैं ।

जवाबः- इन्सान के बदन से ऐसी चोज निकले कि उससे बजूया गुस्सा वाजिब हो जाता हो तो वह नजासते ग़लीज़ा है जैसे पाख़ाना, पेशाब, बहता खून, पीप, मुंह भर के और दुखती आंख का पानी वगैरा, और हराम चौपाये जैसे कुत्ता, शेर, लोमड़ी, बिल्ली, चूहा, गधा, खच्चर, हाथी और सूअर वगैरा का पाख़ाना पेशाब और घोड़े की लीद और हर हलाल चौपाये का पाख़ाना जैसे गाय भैंस का गोबर बकरी और ऊंट की मेंगनी, मुर्गा और बतख की बीट, हाथी के सूँड की रत्बूबत और शेर कुत्ता वगैरा दरिन्दे चौपायों का लुआब यह सब नजासते ग़लीज़ा है । और दूध पीता लड़का हो या लड़की उनका पेशाब भी नजासते ग़लीज़ा है (बहारे शरीअत)

सवालः- नजासते खफ़ीफ़ा क्या चीज़े हैं ।

जवाबः- जिन जानवरों का गोश्त हलाल है जैसे गाय, बैल भैंस बकरी और भेड़ वगैरा इनका पेशाब नीज़ घोड़े का पेशाब, और

जिस परिन्द का गोश्त हराम हो जैसे कौआ, चील, शिकरा, बाज़ और बहरी बगैरा की बीट यह सब नजासते खफ़ीफ़ा हैं।

सवालः- अगर नजासते ग़लीज़ा बदन या कपड़े पर लग जाए तो क्या हुक्म है।

जवाबः- अगर नजासते ग़लीज़ा एक दिरहम से ज़्यादा लग जाए तो उसका पाक करना फ़र्ज़ है कि बगैर पाक किए नमाज़ पढ़ ली तो नमाज़ होगी ही नहीं, और अगर नजासते ग़लीज़ा एक दिरहम के बराबर लग जाए तो उसका पाक करना वाजिब है कि बगैर पाक किए पढ़ ली तो नमाज़ मकर्ख तहरीमी हुई यानी ऐसी नमाज़ का दोबारा पढ़ना वाजिब है और अगर नजासते ग़लीज़ा एक दिरहम से कम लगी है तो उसका पाक करना सुन्नत है। कि बगैर पाक किए नमाज़ पढ़ ली तो हो गई मगर खिलाफ़े सुन्नत हुई ऐसी नमाज़ का दोबारा पढ़ना बेहतर है (बहारे शरीअत)

सवालः- अगर नजासते खफ़ीफ़ा लग जाए तो उसका क्या हुक्म है।

जवाबः- नजासते खफ़ीफ़ा कपड़े या बदन के जिस हिस्सा में लगी है अगर उसकी चौथाई से कम है। मसलन दामन में लगी है तो दामन की चौथाई से कम है या आसतीन में लगी है तो उसकी चौथाई से कम में लगी है या हाथ में हाथ की चौथाई से कम लगी है तो मुआफ़ है और अगर पूरी चौथाई में लगी

हो तो बगैर धोए नमाज़ न होगी ।

सवालः- अगर कपड़े में नजासत लग जाए तो कितनी बार धोने से पाक होगा ।

जवाबः- अगर नजासत दलदार है जैसे पाखाना और गोबर बगैरह तो उसके धोने में कोई गिनती मुकर्रर नहीं बल्कि उसको दूर करना ज़रूरी है अगर एक बार धोने से दूर हो जाए तो एक ही मर्तबा धोने से पाक हो जाएगा और अगर चार पांच मर्तबा धोने से दूर हो तो चार पांच मर्तबा धोना पड़ेगा । हाँ अगर तीन मर्तबा से कम में नजासत दूर हो जाए तो तीन बार पूरा कर लेना बेहतर है, और अगर नजासत पतली हो जैसे पेशाब बगैरा तो तीन मर्तबा धोना और तीनों मर्तबा कूवत के साथ निचोड़ने से कपड़ा पाक हो जाएगा।

हैज़, निफ़ास और जनाबत का बयान

सवालः- हैज़ और निफ़ास किसे कहते हैं ।

जवाबः- बालिग़ा औरत के आगे के मकाम से जो खून आदि तौर पर निकलता है और बीमारी या बच्चा पैदा होने के सबब से न हो तो उसे हैज़ कहते हैं, उसकी मुद्दत कम से कम तीन दिन और ज़्यादा से ज़्यादा दस दिन है, इससे कम या ज़्यादा हो तो बीमारी यानी इस्तिहाज़ा है, और बच्चा पैदा होने के बाद जो खून आता है उसे निफ़ास कहते हैं, निफ़ास में कमी

की जानिब कोई मुद्दत मुकर्रर नहीं और ज्यादा से ज्यादा उसका ज़माना चालीस दिन है चालीस दिन के बाद जो खून आए वह इस्तिहाज़ा है।

सवाल:- हैज़ व निफ़ास का हुक्म क्या है?

जवाब:- हैज़ व निफ़ास की हालत में रोज़ा रखना और नमाज़ पढ़ना हराम है उन दिनों में नमाज़े मुआफ़ हैं उनकी कज़ा भी नहीं मगर रोज़ों की कज़ा और दिनों में रखना फ़र्ज़ है और हैज़ व निफ़ास वाली औरत को कुरआन मजीद पढ़ना हराम है ख्वाह देख कर पढ़े या जुबानी और उसका छूना अगर चे उसकी जिल्द या हाशिया को हाथ या उंगली की नोक या बदन का कोई हिस्सा लगे सब हराम है। हां जुज़दान में कुरआन मजीद हो तो उस जुज़दान के छूने में हर्ज़ नहीं।

सवाल:- जिसे इहतिलाम हुआ और ऐसे मर्द व औरत कि जिन पर गुस्सा फ़र्ज़ है उनके लिए क्या हुक्म है।

जवाब:- ऐसे लोगों को गुस्सा किए बगैर नमाज़ पढ़ना, कुरआन मजीद देख कर या जुबानी पढ़ना उसका छूना और मस्जिद में जाना हराम है।

सवाल:- क्या जिस पर गुस्सा फ़र्ज़ हो वह मस्जिद में नहीं जा सकता।

जवाब:- जिस पर गुस्सा फ़र्ज़ हो उसे मस्जिद के उस हिस्सा में जाना हराम है कि जो दाखिले मस्जिद है यानी नमाज़ के

लिए बनाया गया है और वह हिस्सा कि जो फनाए मस्जिद है यानी इस्तिंजा खाना, गुस्त खाना और वजू गाह वगैरा तो उस जगह जाने में कोई हर्ज नहीं बशर्ते कि उनमें जाने का रास्ता दाखिले मस्जिद से होकर न गुज़रता हो ।

सवालः- ऐसे मर्द व औरत कि जिन पर गुस्त फर्ज है वह कुरआन की तालीम दे सकते हैं या नहीं ।

जवाबः- ऐसे लोग एक एक कलिमह सांस तोड़ तोड़ कर पढ़ा सकते हैं और हिज्जे करने में कोई हर्ज नहीं ।

सवालः- बे वजू कुरआन शारीफ छूना व पढ़ना जाइज़ है या नहीं ।

जवाबः- बे वजू कुरआन शारीफ छूना हराम है बे छुए जुबानी या देखकर पढ़े तो कोई हर्ज नहीं ।

सवालः- बे वजू पारये अम्म या किसी दूसरे पारह का छूना कैसा है ।

जवाबः- बे वजू पारये अम्म या किसी दूसरे पारह का छूना भी हराम है ।

नमाज़ के वक्तों का बयान

सवालः- दिन व रात में कुल कितनी नमाजें फर्ज हैं ।

जवाबः- दिन व रात में कुल पांच नमाजें फर्ज हैं । फ़ज्र, जुहर, अस्ता, मग़रिब, और इशा ।

सवालः- फ़ूज़ का वक़्त कब से कब तक है।

जवाबः- उजाला होने से फ़ूज़ का वक़्त शुरू होता है और सूरज निकलने से पहले तक रहता है लेकिन खूब उजाला होने पर पढ़ना मुसतहब है।

सवालः- ज़ुहर का वक़्त कब से कब तक रहता है।

जवाबः- ज़ुहर का वक़्त सूरज ढलने के बाद शुरू होता है और ठीक दोपहर के वक़्त किसी चीज़ का जितना साया होता है उसके अलावा उसी चीज़ का दोगुना साया हो जाए तो ज़ुहर का वक़्त खत्म हो जाता है। मगर छोटे दिनों में अच्छे वक़्त और बड़े दिनों में आखिरे वक़्त पढ़ना मुसतहब है।

सवालः- अस्त्र का वक़्त कब से कब तक रहता है।

जवाबः- ज़ुहर का वक़्त खत्म हो जाने से अस्त्र वक़्त शुरू हो जाता है और सूरज ढूबने से पहले तक रहता है, मगर अस्त्र में ताखीर हमेशा मुसतहब है लेकिन न इतनी ताखीर कि सूरज की टिकिया में ज़ारी आ जाए।

सवालः- मगरिब का वक़्त कब से कब तक रहता है।

जवाबः- मगरिब का वक़्त सूरज ढूबने के बाद से शुरू हो जाता है, और उत्तर दक्षिण फैली हुई सफ़ेदी के ग्रायब होने से पहले तक रहता है। मगर अच्छे वक़्त पढ़ना मुसतहब और ताखीर मकरुह।

सवालः- इश्या का वक़्त कब से कब तक रहता है।

जवाबः- इशां का वक्त उत्तर दक्षिखन फैली हुई सफेदी के ग्रायब होने से शुरू होता है और सुबह उजाला होने से पहले तक रहता है लेकिन तिहाई रात तक ताखीर मुसतहब और आधी रात तक मुबाह और आधी रात के बाद मकरूह है।

मकरूह वक्तों का व्याख्यान

सवालः- क्या रात और दिन में कुछ वक्त ऐसे भी हैं जिन में नमाज़ पढ़ना जाइज़ नहीं।

जवाबः- जी हां सूरज निकलने के वक्त, सूरज इबने के वक्त और दोपहर के वक्त किसी किस्म की कोई नमाज़ पढ़ना जाइज़ नहीं। हां अगर उस दिन अख्ल की नमाज़ नहीं पढ़ी है तो सूरज इबने के वक्त पढ़ ले भगव इतनी देर करना सख्त गुनाह है।

सवालः- सूरज निकलने के वक्त कितनी देर नमाज़ पढ़ना जाइज़ नहीं?

जवाबः- जब सूरज का कनारा ज़ाहिर हो उस वक्त से लेकर तक़रीबन बीस मिनट तक नमाज़ पढ़ना जाइज़ नहीं।

सुवालः- सूरज इबने के वक्त कब से कब तक नमाज़ पढ़ना जाइज़ नहीं है।

जवाबः- जब सूरज पर नज़र ठहरने लगे उस वक्त से लेकर इबने तक नमाज़ पढ़ना नहीं जाइज़ है और यह वक्त भी तक़रीबन बीस (20) मिनट है।

सवालः- दोपहर के बक्त बब से कब तक नमाज़ पढ़ना जाइज़ नहीं ।

जवाबः- ठीक दोपहर के बक्त तक रीबन चालीस (40) पचास (50) मिनट तक नमाज़ पढ़ना जाइज़ नहीं ।

सवालः- मकरूह बक्त में नमाज़ जनाज़ा पढ़ना कैसा है ।

जवाबः- आगर मकरूह बक्तों में जनाज़ा लाया गया तो उसी बक्त पढ़ें कोई कराहत नहीं । कराहत उस सूरत में है कि पहले से जनाज़ा तैयार मौजूद है और ताखीर की यहां तक कि बक्ते कराहत आ गया (बहारे शरीअत, आलमगीरी)

सवालः- इन मकरूह बक्तों में कुरआन शरीफ़ पढ़ना कैसा है ।

जवाबः- इन मकरूह बक्तों में कुरआन शरीफ़ न पढ़े तो बेहतर है और पढ़े तो कोई हर्ज़ नहीं (अनवारूल हदीस)

अज़ान व इकामत का बयान

सवालः- अज़ान कहना फ़र्ज़ है या सुन्नत ।

जवाबः- फ़र्ज़ नमाजों को जमाअत के साथ मस्जिद में अदा करने के लिए अज़ान कहना सुन्नते मुअक्कदा है मगर उस का हुक्म मिसल वाजिब के है यानी आगर अज़ान न कहीं गई तो वहां के सब लोग गुनाहगार होंगे ।

सवालः- अज़ान किस बक्त कहनी चाहिए ।

जवाबः- जब नमाज़ का बक्त हो जाए तो अज़ान कहनी

चाहिए। वक्त से पहले जाइज़ नहीं अगर वक्त से पहले कही गई तो वक्त होने पर लौटाई जाए।

सवालः- फर्जी नमाज़ों के अलावा और भी किसी वक्त अज्ञान कही जाती है।

जवाबः- हाँ, बच्चे और मग्नमूम (फिक्रमन्द) के कान में, मिरगी वाले गज़बनाक और बदमिजाज़ आदमी या जानवर के कान में, सख्त लड़ाई और आग लगने के वक्त, मर्याद को दफ़न करने के बाद। जिन्न की सरकशी के वक्त और जंगल में जब रास्ता भूल जाए और कोई बताने वाला न हो इन सूरतों में अज्ञान कहना मुस्तहब है (बहारे शारीअत, शामी जिल्द अब्बल सफ़ा 258)

JANNATI KAUN?

सवालः- अज्ञान का बेहतर तरीका क्या है।

जवाबः- मस्जिद के सहन से बाहर किसी बुलन्द जगह पर किंबला की तरफ़ मुँह करके खड़ा हो और कलिमह की दोनों उंगलियों को कानों में डालकर बुलंद आवाज़ से अज्ञान के कलिमात को ठहर ठहर कर कहे जल्दी न करे और हय्य अलस्सलातु कहते वक्त दाहिनी जानिब और हय्य अललफ़लाह कहते वक्त बाएं जानिब मुँह फेरे।

सवालः- अज्ञान के जवाब का क्या मसला है।

जवाबः- अज्ञान के जवाब का मसला यह है कि अज्ञान कहने वाला जो कलिमह तो सुनने वाला भी वही कलिमह कहे कहे

मगर हय्य अलस्सलात और हय्य अललफ़लाह के जवाब में लाहौल वला कूवत इल्ला बिल्लाह कहे और बेहतर यह है कि दोनों कहे । और फ़ज्ज की अज़ान में अस्सलातु खैरूम मिनन्नौम के जवाब में सदक़ त व बरर त व बिलहक़िक नतक त कहे ।

सवालः- खुतबा की अज़ान का जवाब देना कैसा है ।

जवाबः- खुतबा की अज़ान का जुबान से जवाब देना मुक़्तदियों को जाइज़ नहीं ।

सवालः- तकबीर यानी इक़ामत कहना कैसा है ।

जवाबः- इक़ामत कहना भी सुन्नते मुअक्कदा है उसकी ताकीद अज़ान से ज्यादा है ।

सवालः- क्या अज़ान कहने वाला ही इक़ामत कहे दूसरा न कहे ।

जवाबः- हाँ, अज़ान कहने वाला ही इक़ामत कहे । उसकी इजाज़त के बगैर दूसरा न कहे अगर बगैर इजाज़त दूसरे ने कही और अज़ान देने वाले को नागवार हो तो मकरूह है ।

सवालः- अज़ान व इक़ामत के दरमियान सलात पढ़ना कैसा है ।

जवाबः- सलात पढ़ना यानी “अस्सलातु वस्सलामु अलै क या रसूलल्लाह” कहना जाइज़ व मुस्तहसन है इस सलात का नाम इस्तिलाहे शरा में तसवीब है और तसवीव नमाज़ें मग़रिब के अलावा बाकी नमाज़ों के लिए मुस्तहसन है (आलम गीरी) तमबीह (1) जो अज़ान के वक़्त बातों में मशागूल रहे उस पर मआज़ल्लाह ख़ातिमा बुरा होने का ख़ौफ़ है (बहारे शरीअत

बहवाला फ़तावा रज्जीया)

(2) जब अज्ञान खत्म हो जाए तो मुअज्जिन और अज्ञान सुनने वाले दुर्लभ शारीफ़ पढ़ें फिर अज्ञान के बाद की यह दुआ पढ़ें।
 अल्लाहुम्म रब्ब हाजिहीद्दूज् व तित्ताम्मति वस्सलातिल
 क़ाइमति आति सव्विदना मुहम्मद बिल वसील त वल फ़ज़ील
 त वद्दरज तर्रफ़ीज त बबअ़सहु मक़ामम्मह मूद निल्लज़ी
 वअत्तहू वरजु कना शफ़ा अत्तहू योमल कियामति इन्न के ला
 तुखलिफुल मीआद।

(3) जब मुअज्जिन “अशहदु अन्न मुहम्मदर्द सूलुल्लाह” कहे तो
 सुनने वाला दुर्लभ शारीफ़ पढ़े और मुस्तहब्ब है कि अगूंठों को
 चूमकर आंखों से लगाले और कहे “कुर्तु ऐ नीबि क या
 रसूलल्लाहि अल्लाहुम्म मत्तिअनी बिस्समज़ि वलबसरि” (बहारे
 शारीअत, शामी)

तादादे रक्खात और नीयत का व्याख्यान

सवालः- फ़ज़्ज के वक्त कितनी रक्खात नमाज़ पढ़ी जाती है।
 जवाबः- कुल चार रक्खात। पहले दो रक्खात सुन्नत फिर दो
 रक्खात फर्ज़।

सवालः- दो रक्खात सुन्नत की नीयत किस तरह की जाएगी।
 जवाबः- नीयत की मैंने दो रक्खात नमाज़ सुन्नत फ़ज़्ज की
 अल्लाह तआला के लिए सुन्नत रसूलल्लाह की मुँह मेरा तरफ़

काबा शारीफ के अल्लाहु अकबर ।

सवालः- दो रक्ऊत फर्ज की नीयत किस तरह की जाएगी ।

जवाबः- नीयत की मैंने दो रक्ऊत नमाज़ फर्ज फ़ज़ा की अल्लाह तआला के लिए (मुक़्तदी इतना और कहे पीछे इस इमाम के) मुंह मेरा तरफ़ काबा शारीफ के अल्लाहु अकबर ।

सवालः- ज़ुहर के वक्त कुल कितनी रक्ऊत नमाज़ पढ़ी जाती है ।

जवाबः- बारह (12) रक्ऊत । पहले चार रक्ऊत सुन्नत फिर चार रक्ऊत फर्ज फिर दो रक्ऊत सुन्नत फिर दो रक्ऊत नफ़ल ।

सवालः- चार रक्ऊत सुन्नत की नीयत किस तरह की जाएगी ।

जवाबः- नीयत की मैंने चार रक्ऊत नमाज़ सुन्नत ज़ुहर की अल्लाह तआला के लिए सुन्नत रसूलुल्लाह की मुंह मेरा तरफ़ काबा शारीफ के अल्लाहु अकबर ।

सवालः- फिर चार रक्ऊत फर्ज की नीयत किस तरह की जाएगी ।

जवाबः- नीयत की मैंने चार रक्ऊत नमाज़ फर्ज ज़ुहर की अल्लाह तआला के लिए (मुक़्तदी इतना और कहे पीछे इस इमाम के) मुंह मेरा तरफ़ काबा शारीफ के अल्लाहु अकबर ।

सवालः- और दो रक्ऊत सुन्नत की नीयत किस तरह की जाएगी ।

जवाबः- नीयत की मैंने दो रक्ऊत नमाज़ सुन्नत ज़ुहर की

अल्लाह तआला के लिए सुन्नत रसूलुल्लाह की मुंह मेरा तरफ काबा शरीफ के अल्लाहु अकबर ।

सवाल:- फिर दो रक्ऊत नफ़्ल की नीयत कैसे करे ।

जवाब:- नीयत की मैंने दो रक्ऊत नमाज़ नफ़्ल की अल्लाह तआला के लिए मुंह मेरा तरफ काबा शरीफ के अल्लाहु अकबर ।

सवाल:- अस्त्र के वक्त कुल कितनी रक्ऊत नमाज़ पढ़ी जाती है ।

जवाब:- आठ रक्ऊत पहले चार रक्ऊत सुन्नत फिर चार रक्ऊत फर्ज़ ।

सवाल:- चार रक्ऊत सुन्नत की नीयत किस तरह की जाएगी ।

जवाब:- नीयत की मैंने चार रक्ऊत नमाज़ सुन्नत अस्त्र की अल्लाह तआला के लिए सुन्नत रसूलुल्लाह की मुंह मेरा तरफ काबा शरीफ के अल्लाहु अकबर ।

सवाल:- फिर चार रक्ऊत फर्ज़ की नीयत कैसे करे ।

जवाब:- नीयत की मैंने चार रक्ऊत नमाज़ फर्ज़ अस्त्र की अल्लाह तआला के लिए (मुक़्तदी इतना और कहे पीछे इस इमाम के) मुंह मेरा तरफ काबा शरीफ के अल्लाहु अकबर ।

सवाल:- मग़रिब के वक्त कुल कितनी रक्ऊत नमाज़ पढ़ी जाती है ।

जवाब:- सात (7) रक्ऊत । पहले तीन रक्ऊत फर्ज़ फिर दो रक्ऊत सुन्नत फिर दो रक्ऊत नफ़्ल ।

सवालः- तीन (3) रक्ऊत फ़र्ज़ की नीयत किस तरह की जाएगी ।

जवाबः- नीयत की मैंने तीन रक्ऊत नमाज़ फ़र्ज़ मग़रिब की अल्लाह तआला के लिए (मुक़तदी इतना और कहे पीछे इस इसाम के) मुंह मेरा तरफ़ काबा शरीफ़ के अल्लाहु अकबर ।

सवालः- और दो रक्ऊत सुन्नत की नीयत कैसे करे ।

जवाबः- नीयत की मैंने दो रक्ऊत नमाज़ सुन्नत मग़रिब की अल्लाह तआला के लिए सुन्नत रसूलुल्लाह की मुंह मेरा तरफ़ काबा शरीफ़ के अल्लाहु अकबर ।

सवालः- फिर दो रक्ऊत नफ़ल की नीयत कैसे - ने ।

जवाबः- नीयत की मैंने दो रक्ऊत नमाज़ नफ़ल अल्लाह तआला के लिए मुंह मेरा तरफ़ काबा शरीफ़ के अल्लाहु अकबर ।

सवालः- इशा के वक़्त कुल कितनी रक्ऊत नमाज़ पढ़ी जाती है ।

जवाबः- सत्तरह (11) रक्ऊत । पहले चार रक्ऊत सुन्नत, फिर चार रक्ऊत फ़र्ज़, फिर दो रक्ऊत सुन्नत, फिर दो रक्ऊत नफ़ल । इसके बाद फिर तीन रक्ऊत वित्र वाजिब फिर दो रक्ऊत नफ़ल ।

सवालः- चार रक्ऊत सुन्नत की नीयत किस तरह की जाएगी ।

जवाबः- नीयत की मैंने चार (4) रक्ऊत नमाज़ सुन्नत इशा की अल्लाह तआला के लिए सुन्नत रसूलुल्लाह की मुंह मेरा तरफ़

काबा शारीफ के अल्लाहु अकबर ।

सवालः- फिर चार (4) रक्खत फर्ज की नीयत कैसे करे ।

जवाबः- नीयत की मैंने चार (4) रक्खत नमाज़ फर्ज इशा की अल्लाह तआला के लिए मुक़्तदी इतना और कहे (पीछे इस इमाम के) मुंह मेरा तरफ़ काबा शारीफ के अल्लाहु अकबर ।

सवालः- फिर दो (2) रक्खत सुन्नत की नीयत किस तरह की जाएगी ।

जवाबः- नीयत की मैंने दो (2) रक्खत नमज़ा सुन्नत इशा की अल्लाह तआला के लिए सुन्नत रसूलुल्लाह की मुंह मेरा तरफ़ काबा शारीफ के अल्लाहु अकबर ।

सवालः- फिर दो रक्खत नफ़ल की नीयत किस तरह की जाएगी । **JANNATI KAUN?**

जवाबः- नीयत की मैंने दो (2) रक्खत नमज़ा नफ़ल की अल्लाह तआला के लिए मुंह मेरा तरफ़ काबा शारीफ के अल्लाहु अकबर ।

सवालः- वित्र की नीयत किस तरह की जाएगी ।

जवाबः- नीयत की मैंने तीन (3) रक्खत नमाज़ वाजिब वित्र की अल्लाह तआला के लिए मुंह मेरा तरफ़ काबा शारीफ के अल्लाहु अकबर ।

सवालः- फिर दो (2) रक्खत नफ़ल की नीयत कैसे करे ।

जवाबः- नीयत की मैंने दो (2) रक्खत नमाज़ नफ़ल अल्लाह तआला के लिए मुंह मेरा तरफ़ काबा शारीफ के अल्लाहु अकबर ।

सवालः- अगर नीयत के अलफ़ाज़ भूल कर कुछ के कुछ जुबान से निकल गए तो नमाज़ होगी या नहीं ।

जवाबः- नीयत दिल के पक्के इरादा को कहते हैं यानी नीयत में जुबान का एतबार नहीं तो अगर दिल में मसलन ज़ुहर का इरादा किया और जुबान से लफ़ज़े अल्ला निकल गया तो ज़ुहर की नमाज़ हो जाएगी ।

सवालः- क़ज़ा नमाज़ की नीयत किस तरह करनी चाहिए ।

जवाबः- जिस रोज़ और जिस वक्त की नमाज़ क़ज़ा हो उस रोज़ और उस वक्त की नीयत क़ज़ा में ज़रूरी है मसलन अगर जुमा के रोज़ फ़ज़्र की नमाज़ क़ज़ा हो गई तो इस तरह नीयत करे कि नीयत की मैंने दो (2) रक़अत नमाज़े क़ज़ा जुमा के फ़ज़्र फ़र्ज़ की अल्लाह तआला के लिए मुँह मेरा तरफ़ काबा शरीफ़ के अल्लाहु अकबर ।

सवालः- अगर कई साल की नमाजें क़ज़ा हों तो नीयत कैसे करे ।

जवाबः- ऐसी सूरत में जो नमाज़ मसलन ज़ुहर की क़ज़ा पढ़नी है तो इस तरह नीयत करे नीयत की मैंने चार (4) रक़अत नमाज़ क़ज़ा जो मेरे ज़िम्मे बाकी है उनमें से पहले ज़ुहर फ़र्ज़ की अल्लाह तआला के लिए मुँह मेरा तरफ़ काबा शरीफ़ के अल्लाहु अकबर । इसी पर दूसरी क़ज़ा नमाजों की नीयतों को कियास करना चाहिए ।

सवालः- पांच वक्त की नमाजों में कुल कितनी रक़अत क़ज़ा

पढ़ी जाएगी ।

जवाबः- बीस (20) रक्खत दो (2) रक्खत फ़र्ज, चार (4) रक्खत जुहर चार (4) रक्खत अस्त्र तीन (3) रक्खत मगरिब चार (4) रक्खत इशा और तीन (3) रक्खत वित्र खुलासा यह कि फर्ज और वित्र की कज़ा है सुन्नत नमाज़ों की कज़ा नहीं है ।

नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा

सवालः- नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा क्या है ।

जवाबः- नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा यह है कि बा बजू किब्लारू दोनों पांव के पंजों में चार उंगल का फ़ासिला करके खड़ा हो और दोनों हाथ कान तक ले जाए कि अंगूठे कान की लौ से छू जाएं इस हाल में कि हथेलियां किब्ला रुख़ हों फिर नीयत करके अल्लाहु अकबर कहता हुआ हाथ नीचे लाकर नाफ़ के नीचे बांध ले और सना पढ़े । सुबहा न क अल्लाहुम्म व बिहम्दि क व तबा र कस्मु क व तआला जहु क व लाइलाह गैरु क फिर तआौउज़ यानी अऊजु बिल्लाहि मिनश्शैता निरजीम फिर तसमियह यानी बिस्मिल्लाहिर्रहमानिरहीम पढ़ कर अलहस्तु पढ़े आमीन आहिस्ता कहे उसके बाद कोई सूरत या तीन आयतें पढ़े या एक आयत जो कि छोटी तीन आयतों के बराबर हो । अब अल्लाहु अकबर कहता हुआ रुकू में जाए और घुटनों को हाथ

से पकड़ ले इस तरह कि हथेलियां घुटने पर हों। उंगलियां खूब फैली हों। पीठ बिछी हो और सर पीठ के बराबर हो ऊँचा नीचा न हो और कम से कम तीन बार “सुबहान रब्बियल अज़ीम” कहे फिर “समि अल्लाहु लिमन हमिदह” कहता हुआ सीधा खड़ा हो जाए और अकेले नमाज़ पढ़ता हो तो उसके बाद “रब्बना लकल हम्दु” कहे फिर अल्लाहु अकबर कहता हुआ सजदा में जाए इस तरह कि पहले घुटने ज़मीन पर रखे फिर हाथ फिर दोनों हाथों के बीच में नाक फिर पेशानी रखे इस तरह कि पेशानी और नाक की हड्डी ज़मीन पर जमाए और बाजुओं को करवटों और पेट को रानों और रानों को पिंडलियों से जुदा रखे और दोनों पांव की सब उंगलियों के पेट किबलारू जमे हों। और हथेलियां बिछी हों और उंगलियां किबला की हों और कम से कम तीन बार “सुबहान रब्बियल अअला” कहे फिर सर उठाए फिर हाथ। और दाहिना क़दम खड़ा करके उसकी उंगलियां किबलारख़ करे और बाया क़दम बिछा कर उस पर खूब सीधा बैठ जाए और हथेलियां बिछा कर रानों पर घुटनों के पास रखे फिर अल्लाहु अकबर कहता हुआ सजदा में जाए और पहले की तरह सजदा करके फिर सर उठाए फिर हाथ को घुटनों पर रख कर पंजों के बल खड़ा हो जाए अब सिर्फ़ बिस्मिल्ला हिर्रहमानिर्रहीम पढ़ कर किराअत शुरू करे फिर पहले की तरह रुक् सजदा करके बायां क़दम बिछा कर बैठ जाए और तशहहुद पढ़े “अत्तही यातुलिल्लाहि वस्सलवातु वत्तय्यिबातु अस्सलामु

अलैक अव्युहन्नबीयू व रहमतुल्लाहि व बर कातुहु अस्सलामु
 अलैना वअला अेबादिल्ला हिस्सालिहीन अशहदु अललइलाह
 इल्लाहु व अशहदु अन न मुहम्मदन अब्दुहु व रसूलहु” तशहहुद
 पढ़ते हुए जब कलिमए “ला” के करीब पहुंचे तो दाहिने हाथ
 की बीच की उंगली और अंगूठे का हल्का बनाए और छंगुलिया
 और उसके पास वाली को हथेली से मिलादे और लफ़ज़े “ला”
 पर कलिमह की उंगली उठाए मगर उसको हिलाए नहीं । और
 कलिमए “इल्ला” पर गिरा दे और सब उंगलियां फौरन सीधी
 कर ले अब अगर दो से ज्यादा रक्खत पढ़नी है तो उठ खड़ा
 हो और इसी तरह पढ़े मगर फ़र्जों की उन रक्खतों में अलहम्दु
 के साथ सूरत मिलाना ज़रूरी नहीं अब पिछला कादा (बैठक)
 जिसके बाद नमाज़ खत्म करेगा उस में तशहहुद के बाद दुरुद
 शरीफ पढ़े ।

“अल्लाहुम्म सल्लिअला सैय्यिदिना मुहम्मदिं वअला आलि
 सैय्यिदिना मुहम्मदिन कमा सल्लै त अला सैय्यिदिना इब्राहीम
 वअला आलि सैय्यिदिना इब्राहीम इन्न क हमीदुम्मजीद ।

अल्लाहुम्म बारिक अला सैय्यिदिना मुहम्मदिंब्वअला आलि
 सैय्यिदिना मुहम्मदिन कमा बारक त अआ सैय्यिदिना इब्राहीम
 व अला आलि सैय्यिदिना इब्राहीम इन्न क हमीदुम्मजीद ।

फिर दुआए मासूरा पढ़े

“अल्लाहुम्मग़ फ़िरली वलिवालिद्व्य वलिमन तवाल

दवलिजमीअिल मूमिनी न बलमूमिनाति बल मुसलिमीन बल
मुसलिमातिल अहयाइमिनहुम बल अम्वाति इन्ल क मुजीबुद्धअवाति
बिरह मति क या अरहमर्राहिमीन ।”

या कोई और दूसरी दुआए मासूरा पढ़े । इसके बाद दाहिने मोढे
की तरफ मुंह करके अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह कहे फिर
बाएं तरफ । अब नमाज़ पूरी हो गयी ।

नमाज़ के बाद की दुआ

“अल्लाहुम्म अन्तस्सलाम वमिन कस्सलाम वइलै क यराजिउ
स्सलाम फ़हैयिना रब्बना बिस्सलाम वअदखिल ना दारस्सलाम
व तबारक त रब्बना बतआलै त या ज़लजलालि बल इकराम ।

JANNATI KAUN?

औरतों के लिए नमाज़ के मख़सूस

मसाइल

औरतें तकबीरे तहरीमा के वक्त कानों तक हाथ न उठायें बल्कि
मोढे तक उठायें हाथ नाफ़ के नीचे न बांधें बल्कि बाईं हथेली
सीना पर छाती के नीचे रख कर उसकी पीठ पर दाहिनी हथेली
रखें । रुकू में ज्यादा न झुकें बल्कि थोड़ा झुकें यानी सिर्फ़ इस
क़दर कि हाथ घुटनों तक पहुंच जाए, पीठ सीधी न करें और
घुटनों पर ज़ोर न दें बल्कि महज़ हाथ रख दें और हाथों की
उंगलियां मिली हुई रखें और पांव कुछ झुका रखें मर्दों की तरह

खूब सीधा न कर दें। औरतें सिमट कर सजदा करें यानी बाजू करवटों से मिला दें। और पेट रान से और रान पिंडलियों से पिंडलियां ज़मीन से। और क़ादा (बैठक) में बाएं क़दम पर न बैठें बल्कि दोनों पांव दाहिनी जानिब निकाल दें और बाएं सुरीन (पुट्ठना) पर बैठें। औरतें भी खड़ी होकर नमाज़ पढ़ें। फर्ज और वाजिब जितनी नमाजें बगैर उज्ज्व बैठकर पढ़ चुकी हैं उनकी कज़ा करें और तौबा करें। औरत मर्द की इमामत हरगिज़ नहीं कर सकती और सिर्फ़ औरतें जमाऊत करें यह मकरूह तहरीमी और नाजायज़ है। औरतों पर जुमा और ईदैन की नमाज़ वाजिब नहीं।

नमाज़ की शर्तें

सवाल:- नमाज़ की शर्तें कितनी हैं।

जवाब:- नमाज़ की शर्तें छः (6) हैं जिनके बगैर नमाज़ सिरे से होती ही नहीं। (1) तहारत यानी नमाज़ी के बदन, कपड़े और उस जगह का पाक होना कि जिस पर नमाज़ पढ़े। (2) सत्रे औरत यानी मर्द को नाफ़ से घुटनों तक छुपाना और औरत को सिवाये चेहरा, हथेली और क़दम के पूरा बदन छुपाना। औरत अगर इतना बारीक दोपट्टा ओढ़ कर नमाज़ पढ़े कि जिस से बाल की स्याही चमके तो नमाज़ न होगी जब कि उस पर कोई ऐसी चीज़ न ओढ़े कि जिस से बाल का रंग छुप जाय

(आलमगीरी) (3) इस्तिव्वाले किंबला यानी नमाज़ में किंबला की तरफ़ मुंह करना । अगर किंबला की सम्म में शुब्हा हो तो किसी से दर्याप्रित करले अगर कोई दूसरा मौजूद न हो तो गौरो फिक्र के बाद जिधर दिल जमे उसी तरफ़ मुंह करके नमाज़ पढ़ले । फिर अगर बादे नमाज़ मालूम हुआ कि किंबला दूसरी सम्म था तो कोई हर्ज़ नहीं नमाज़ हो गई ।

(4) वक़्त लिहाज़ा वक़्त से पहले नमाज़ पढ़ी तो न हुई जिसका व्यान तफ़सील के साथ पहले गुज़र चुका है ।

(5) नीयत यानी दिल के पक्के इरादा के साथ नमाज़ पढ़ना ज़रूरी है और ज़बान से नीयत के अलफ़ाज़ कह लेना मुस्तहब्ब है इस में अरबी की कुछ तख्सीस नहीं उर्दू गैरा में भी हो सकती है । और यूं कहे नीयत की मैने नीयत करता हूं न कहे (6) तक्बी रेतहरीमा यानी नमाज़ के शुरू में अल्लाहु अकबर कहना शर्त है ।

इस्तिलाहाते शरअ़ीया का व्यानः

सवालः- फ़र्ज़ और वाजिब किसे कहते हैं ।

जवाबः- फ़र्ज़ वह काम है कि उसको जान बूझकर छोड़ना सख्त गुनाह और जिस इबादत के अन्दर वह हो बगैर उसके वह इबादत दुरुस्त न हो । और वाजिब वह काम है कि उसको जान बूझकर छोड़ना गुनाह और नमाज़ में कस्तूर छोड़ने से नमाज़ का दोबारा

पढ़ना ज़रूरी और भूल कर छूट जाए तो सजदयेसह व लाज़िम ।

सवालः- सुन्नते मुअब्कदा और गैर मुअब्कदा किसे कहते हैं ।

जवाबः- सुन्नते मुअब्कदा वह काम है कि जिस का छोड़ना बुरा और करना सवाब है और इत्तिफ़ाक़न छोड़ने पर जिताब और छोड़ने की आदत कर लेने पर मुस्तहिकके अज़ाब । और सुन्नते गैर मुअब्कदा वह काम है कि उसका करना सवाब और न करना अगरचे आदतन हो जिताब नहीं मगर शरअन ना पसन्द हो ।

सवालः- मुस्तहब और मुबाह किसे कहते हैं ।

जवाबः- मुस्तहब वह काम है कि जिसका करना सवाब और न करने पर कुछ गुनाह नहीं । और मुबाह वह काम है कि जिसका करना और न करना बराबर हो ।

सवालः- हराम और मकरुह तहरीमी किसे कहते हैं ।

जवाबः- हराम वह काम है कि जिसका एक बार भी जान बूझ कर करना सख्त गुनाह है । और उससे बचना फ़र्ज़ और सवाब है । और मकरुह तहरीमी वह काम है कि जिसके करने से इबादत नाकिस हो जाती है और करने वाला गुनाहगार होता है अगरचे उसका गुनाह हराम से कम है ।

सवालः- मकरुह तंज़ीही और स्थिलाफ़े औला किसे कहते हैं ।

जवाबः- मकरुह तंज़ीही वह काम है कि जिस का करना शारीअत को पसन्द न हो और उससे बचना बेहतर और सवाब हो । और स्थिलाफ़े औला वह काम है कि जिसका न करना बेहतर है और

करने में कोई मुज़ाईका (हर्ज) और अिताब नहीं।

नमाज़ के फ़राइज़

सवालः- नमाज़ में कितनी चीजें फ़र्ज़ हैं।

जवाबः- नमाज़ में छः (6) चीजें फ़र्ज़ हैं। (1) कियाम (2) किराअत (3) रुकू (4) सज्दा (5) कादये अख़ीरा (6) खुरुजबिसुनजिही।

सवालः- कियाम फ़र्ज़ है इसका क्या मतलब है।

जवाबः- इसका मतलब यह है कि खड़े हो कर नमाज़ अदा करना ज़रूरी है तो अगर किसी ने बगैर उज्ज़ बैठ कर नमाज़ पढ़ी तो न हुई। ख्वाह औरत हो या मर्द। हाँ नफ़्ल नमाज़ बैठ कर पढ़ना जाइज़ है। **JANNATI KAUN?**

सवालः- किराअत फ़र्ज़ है इसका क्या मतलब है।

जवाबः- इसका मतलब यह है कि फ़र्ज़ की दो रक़अतों में और वित्र सुन्नत और नफ़्ल की हर रक़अतों में कुरान शारीफ पढ़ना ज़रूरी है तो अगर किसी ने इनमें कुरान न पढ़ा तो नमाज़ न होगी।

सवालः- कुरान मजीद आहिस्ता पढ़ने का अदना (कम) दर्जा क्या है।

जवाबः- आहिस्ता पढ़ने का अदना दर्जा यह है कि खुद सुने अगर इस क़दर आहिस्ता पढ़ा कि खुद न सुना तो नमाज़ न होगी।

सवालः- रुकू का अदना (कम) दर्जा क्या है ।

जवाबः- रुकू का अदना दर्जा यह है कि हाथ धुटने तक पहुंच जाए और पूरा रुकू यह है कि पीठ सीधी बिछादे और सर पीठ के बराबर रखे ऊँचा नीचा न रखे ।

सवालः- सजदा की हकीकत क्या है ।

जवाबः- पेशानी ज़मीन पर जमना सजदा की हकीकत है । और पांव की एक उंगली का पेट ज़मीन से लगना शर्त है तो अगर किसी ने इस तरह सजदा किया कि दोनों पांव ज़मीन से उठे रहे तो नमाज़ न हुई बल्कि अगर सिर्फ़ उंगली की नोक ज़मीन से लगी जब भी नमाज़ न हुई (बहारे शरीअत)

सवालः- कितनी उंगलियों का पेट ज़मीन से लगना वाजिब है ।

जवाबः- दोनों पांव की तीन-तीन उंगलियों का पेट ज़मीन से लगना वाजिब है ।

सवालः- कादए अखीरा का क्या मतलब है ।

जवाबः- नमाज़ की रक्तजलों पूरी करने के बाद अत्तहीयातु व रसूलुहू तक पढ़ने की मिक़दार तक बैठना फ़र्ज़ है ।

सवालः- खुरूजबिसुनअिही किसे कहते हैं ।

जवाबः- कादये अखीरा के बाद क़सदन मनाफ़ीये नमाज़ कोई काम करने को खुरूजबिसुनअिही कहते हैं । लेकिन सलाम के अलावा कोई दूसरा मनाफ़ी क़सदन पाया गया तो नमाज़ का दोबारा पढ़ना वाजिब है ।

नमाज़ के वाजिबात

सवालः- नमाज़ में जो चीजें वाजिब हैं उन्हें बताइए।

जवाबः- नमाज़ में यह चीजें वाजिब हैं। तकबीरे तहरीमा में लफ़ज़े अल्लाहु अकबर होना, अलहम्दु पढ़ना, फ़र्ज़ की दो पहली रक्ऊतों में और सुन्नत, नफ़्ल और वित्र अकी हर रक्ऊत में अलहम्दु के साथ सूरत या तीन छोटी आयत मिलाना, फ़र्ज़ नमाज़ में दो पहली रक्ऊतों में क़िराऊत करना, अलहम्दु का सूरत से पहले होना। हर रक्ऊत में सूरत से पहले एक ही बार अलहम्दु पढ़ना, अलहम्दु व सूरत के दरमियान किसी अजनबी का फ़ासिल न होना, क़िराऊत के बाद मुत्सिलन (फ़ौरन) रुकु करना, सजदा में दोनों पांव की तीन तीन उंगलियों का पेट ज़मीन पर लगना दोनों सजदा के दरमियान कोई रुकन फ़ासिल न होना, तादील अरकान, कौमा यानी रुकु से सीधा खड़ा होना, जलसा यानी दोनों सजदों के दरमियान सीधा बैठना, क़ादपेऊला में तशह्हुद के बाद कुछ न पढ़ना, हर क़ादा में पूरा तशह्हुद पढ़ना, लफ़ज़े अस्सलाम दो बार कहना, वित्र में दुआये कुनूत पढ़ना। तकबीरे कुनूत, ईदैन की छओं तकबीरें, ईदैन में दूसरी रक्ऊत की तकबीरे रुकु और उस तकबीर के लिए लफ़ज़े अल्लाहु अकबर होना, हर जहरी नमाज़ में इमाम को जहर से क़िराऊत करना और गैरे जहरी में आहिस्ता, हर वाजिब और फ़र्ज़ का उसकी जगह पर होना, रुकु का हर रक्ऊत में एक ही बार होना और

सूजूद का दो ही बार होना, दूसरी से पहले कादा न करना और चार रक्खत बाली में तीसरी पर कादा न होना, आयते सजदा पढ़ी तो सजदये तिलावत करना और सहव हो तो सजदये सहव करना दो फ़र्ज़ या दो वाजिब या वाजिब फ़र्ज़ के दरमियान तीन तस्वीह की मिक़दार वक्फ़ा न होना, इमाम जब क़िराअत करे बुलन्द आवाज़ से र्खाह आहिस्ता उस वक्त मुक़तदी का चुप रहना और सिवाये क़िराअत के तमाम वाजिबात में इमाम की पैरवी करना ।

नमाज़ की सुन्नतें

सवालः— नमाज़ में सुन्नतों का बयान फ़रमाइए ।

जवाबः— नमाज़ की सुन्नतें यह हैं। तहरीमा के लिए हाथ उठाना और हाथों की उंगलियां अपने हाल पर छोड़ना तकबीर के वक्त सर न झुकाना और हथेलियों और उंगलियों के पेट का क़िबला रुख़ होना, तकबीर से पहले हाथ उठना इसी तरह तकबीरे कूनूत व तकबीराते ईदैन में कानों तक हाथ ले जाने के बाद तकबीर कहना, औरतों को सिर्फ़ मोढ़ों तक हाथ उठाना, इमाम का अल्लाहु अकबर, समिअल्लाहुलिमन हमिदह और सलाम बुलन्द आवाज़ से कहना तकबीर के बाद हाथ लटकाए बगैर फ़ौरन बांध लेना, सना, तओउज़ तस्मिया पढ़ना और आमीन कहना और इन सब का आहिस्ता होना पहले सना पढ़ना फिर तओउज़ फिर तस्मिया और हर एक के बाद दूसरे को फ़ौरन

पढ़ना। रुकु में तीन बार सुबहान रब्बियल अज़ीम कहना और घुटनों को हाथें से पकड़ना और उंगलियां खूब खुली रखना, औरतों को घुटनों पर हाथ रखना और उंगलियां कुशादा (खुली) न रखना, हालते रुकु में टांगें सीधी होना, रुकु के लिए अल्लाहु अकबर कहना, रुकु में पीठ खूब बिछी रखना, रुकु से उठने पर हाथ लटका हुआ छोड़ देना, रुकु से उठने में इमाम को समिअल्लाहु लिमन हमिदह कहना, मुक़्तदी को रब्बना लकलहम्दु कहना और अकेले को दोनों कहना, सजदा के लिए और सजदा से उठने के लिए अल्लाहु अकबर कहना, सजदा में कम से कम तीन बार सुबहान रब्बियल अअला कहना, सजदा करने के लिए पहले घुटना फिर हाथ फिर नाक फिर पेशानी (माथा) ज़मीन पर रखना और सजदा से उठने के लिए पहले पेशानी (माथा) फिर नाक फिर हाथ फिर घुटना ज़मीन से उठाना, सजदा में बाजू करवटों से और पेट रानों से अलग होना और कुत्ते की तरह कलाइयां ज़मीन पर न बिछाना, औरत का बाजू करवटों से पेट रानों से रान पिंडलियों से और पिंडलियां ज़मीन से मिला देना, दोनों सजदों के दरमियान (बीच) तशहहुद की तरह बैठना और हाथों को रानों पर रखना, सजदों में हाथों की उंगलियों का किलाला रख होना और मिली हुई न होना, और पांव की दसों उंगलियों के पेट ज़मीन पर लगना, दूसरी रक्त अत के लिए पंजों के बल घुटनों पर हाथ रख कर उठना, क़ादा में बायां पांव बिछा कर दोनों सुरीन (कुल्हा) उसपर रख कर बैठना,

दाहिना पैर खड़ा रखना और दाहिने पैर की उंगलियां किंबला रख (किंबला की तरफ़) करना, और त को दोनों पांव दाहिनी तरफ़ निकाल कर बायें सुरीन (कूल्हे) पर बैठना, दाहिना हाथ दाहिनी रान पर और बायां हाथ बाईं रान पर रखना और उंगलियों को अपनी हालत पर छोड़ना, शहादत पर इशारा करना, कादए अखोरा में तशहुद के बाद दुर्दश शरीफ़ और दुआएं मासूरा पढ़ना ।

किराअत का व्यान

सवालः- अगर सूरए फ़ातिहा पढ़ने के बाद सूरत मिलाना भूल जाए और रुकु में याद आए तो क्या करे ।

जवाबः- अगर सूरत मिलाना भूल जाए फिर रुकु में याद आए तो खड़ा हो जाए और सूरत मिलाए फिर रुकु करे और आखिर में सजदए सह्व करे ।

सवालः- फ़र्ज की पहली दो रक्अत में सूरत मिलाना भूल जाए तो क्या करे ।

जवाबः- फ़र्ज की पहली दो रक्अतों में सूरत मिलाना भूल जाए और रुकु के बाद याद आए तो पिछली दो रक्अतों में पढ़े और सजदए सह्व करे और मगरिब की पहली दो रक्अतों में भूल जाए तो तीसरी में पढ़े और एक रक्अत की सूरत जाती रही । आखिर में सजदए सह्व करे ।

सवालः- अगर फ़र्ज की पहली दो रक्अतों में से किसी एक में

सूरत मिलाना भूल जाए और रुकु के बाद याद आए तो क्या करे ।

जवाबः- तीसरी या चौथी में सूरए फ़ातिहा के साथ सूरत मिलाए और सजदए सहव करे ।

सवालः- अगर सुन्नत या नफ़्ल में सूरत मिलाना भूल जाए और रुकु के बाद सजदा वगैरा में याद आए तो क्या करे ।

जवाबः- अख़ीर में सजदए सहव करे ।

सवालः- पहली रक्ऊत में जो सूरत पढ़ी फिर उसी को दूसरी रक्ऊत में भूल कर शुरू कर दी तो क्या करे ।

जवाबः- फिर उसी सूरत को शुरू कर दी तो उसी को पढ़े और क़सदन (जान बूझकर) ऐसा करना मकरूह तनज़ीही है हाँ अगर दूसरी याद न हो तो हर्ज नहीं ।

सवालः- दूसरी रक्ऊत में पहली वाली से ऊपर की सूरत पढ़ी यानी पहली में कुल या अय्युहत काफ़िरून और दूसरी में “इन्ना आतैना क” पढ़ी तो क्या हुक्म है ।

जवाबः- दूसरी रक्ऊत में पहली वाली से ऊपर की सूरत या आयत पढ़ना मकरूह तहरीमी और गुनाह है मगर भूल कर ऐसा हो तो न गुनाह है और न सजदए सहव ।

सवालः- भूल कर दूसरी रक्ऊत में ऊपर की सूरत शुरू कर दी फिर याद आया तो क्या करे ।

जवाबः- जो शुरू कर चुका है उसी को पूरी करे अगरचे अभी

एक ही हफ्फ़ पढ़ा हो ।

सवालः- पहली में “अलम त र कैफ़” और दूसरी में “लिइलाफ़ि” छोड़ कर “अरऐतल्लजी” पढ़ना कैसा है ।

जवाबः- दूसरी में एक छोटी सूरत छोड़ कर पढ़ना मना है और भूल कर शुरू कर दी तो उसी को खत्म करे छोड़ने की इजाज़त नहीं ।

जमाऊत और इमामत का व्यान

सवालः- जमाऊत फ़र्ज़ है या वाजिब ।

जवाबः- जमाऊत वाजिब है, जमाऊत के साथ एक नमाज़ पढ़ने से सत्ताइस (27) नमाज़ों का सवाब मिलता है । बगैर उज्ज़ एक बार भी छोड़ने वाला गुनाहगार और छोड़ने की आदत कर लेने वाला फ़ासिक़ है ।

सवालः- जमाऊत छोड़ने के उज्ज़ क्या क्या हैं ।

जवाबः- अंधा या अपाहिज होना, इतना बूढ़ा या बीमार होना कि मसिजद तक जाने से मजबूर हो, सख्त बारिश या शदीद कीचड़ का हाइल होना, आंधी या सख्त अंधेरी या सख्त सर्दी का होना और पाखाना व पेशाब की सख्त हाजत (ज़रूरत) होना वगैरा ।

सवालः- इमामत का सब से ज़्यादा हक़दार कौन है ।

जवाबः- इमामत का सबसे ज़्यादा हक़दार वह शाख़ा है जो

नमाज़ व तहारत के अहकाम सब से ज्यादा जानता हो । फिर वह शरूस जो तजवीद यानी कि राजत की जानकारी ज्यादा रखता हो । अगर कई शरूस इन बातों में बराबर हो तो वह शरूस ज्यादा हक़दार है जो ज्यादा मुत्तकी हो अगर इस में भी बराबर हों तो ज्यादा उम्म वाला फिर जिस के अखलाक ज्यादा अच्छे हों फिर ज्यादा तहज्जुद गुज़ार । गरज़े कि चन्द आदमी बराबर हो तो उन में जो शरज़ी तरजीह रखता हो वही ज्यादा हक़दार है ।

सवालः- किन लोगों को इमाम बनाना गुनाह है ।

जवाबः- फ़ासिके मोलिन जैसे शराबी, जुआरी, ज़िनाकार, सूदखोर, चुग्लखोर और दाढ़ी मुंडाने वाला या कटा कर एक मुश्त (मुद्ठी) से कम रखने वाला और वह बद मज़हब कि जिस की बद मज़हबी हृदे कुफ्र को न पहुंची हो । उन लोगों को इमाम बनाना गुनाह है । और उनके पीछे नमाज़ मकरूह तहरीमी वाजिबुल इज़ादा है ।

सवालः- वहाबी देवबन्दी के पीछे नमाज़ पढ़ना कैसा है ।

जवाबः- वहाबी देवबन्दी के अकीदे कुफ्री हैं मस्तन उन लोगों का अकीदा यह है कि जैसा इल्म हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हासिल है ऐसा इल्म तो बच्चों, पागलों और जानवरों को भी हासिल है जैसा कि उनके पेशावा मोलवी अशरफ़ अली थानवी ने अपनी किताब हिफ़ज़ुल ईमान में सफहान, 8 पर हुजूर अलैहिस्सातु वस्सलाम के लिए कुल इलमे गैब का

इन्कार करते हुए सिर्फ बाज़ इलमे गैब के बारे में यूँ लिखा है कि “इस में हुजूर की क्या तख्सी है ऐसा इल्म तो जैद व उमर बल्कि हर सबी (बच्चा) मजनून बल्कि जमीअ है वानात व बहायम के लिए भी हासिल है” मआज़ अल्लाहि रब्बिल आलमीन ।

इसी तरह उनके पेशवाओं की किताबों में बहुत से कुफ्री अकीदे हैं जिन्हें वह हक़ मानते हैं इसलिए उनके पीछे नमाज़ पढ़ना नाजायज़ व गुनाह है अगर किसी ने ग़लती से पढ़ ली हो तो फिर से पढ़े अगर दोबारा नहीं पढ़ेगा तो गुनाहगार होगा । (बहारे शरीअत)

सवाल:- किन लोगों को इमाम बनाना मकरूह है ।

जवाब:- गंवार, अंधे, बलदुज़िज़ना, अमरद, कोढ़ी, फ़ालिज की बीमारी वाले, बर्स (कोढ़) वाला जिस का बर्स ज़ाहिर हो । इन सबको इमाम बनाना मकरूह तनज़ीही है और कराहत उस वक्त है जबकि जमाअत में और कोई उनसे बेहतर हो और अगर वही मुस्तहिक के इमामत है तो कराहत नहीं । और अंधे की इमामत में तो खफ़ीफ़ कराहत है । (बहारे शरीअत)

नमाज़ फ़ासिद करने वाली चीज़ें

सवाल:- किन चीज़ों से नमाज़ फ़ासिद हो जाती है ।

जवाब:- कलाम करने से ख़बाह अमदन (जानबूझकर) हो या ग़लती या भूल कर । अपनी खुशी से बात करे या किसी के मजबूर

करने पर बहर सूरत नमाज़ जाती रहेगी। जुबान से किसी को सलाम करे जान कर या भूल कर नमाज़ फ़ासिद हो जाएगी इसी तरह जुबान से सलाम का जवाब देना भी नमाज़ को फ़ासिद कर देता है। किसी की छोंक के जवाब में “यरहमुकल्लाह” कहा या खुशी की खबर सुन कर जवाब में “अलहम्दुलिल्लाह” कहा या तअज्जुब में डालने वाली खबर सुन कर जवाब में “सुबहानल्लाह” कहा या बुरी खबर सुन कर जवाब में “इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिझून” कहा तो इन तमा मशकलों में नमाज़ जाती रहेगी। लेकिन अगर खुद उसी को छोंक आई तो हुक्म है कि चुप रहे और अगर “अलहम्दुलिल्लाह” कह लिया तो भी नमाज़ में हरज नहीं। नमाज़ पढ़ने वाले ने अपने इमाम के अलावा दूसरे की लुक़सा दिया (याद दिलाया) तो नमाज़ फ़ासिद हो गई। इसी तरह अपने मुक़तदी के अलावा दूसरे का लुक़मा लेना भी नमाज़ को फ़ासिद कर देता है। और ग़लत लुक़मा देने से लुक़मा देने वाले की नमाज़ जाती रहती है। “अल्लाहु अकबर” की अलिफ़ को खिंच कर “आललाहु अकबर” या आकबर या अकबार कहना नमाज़ को फ़ासिद कर देता है इसी तरह “अल्लाहु अकबर” की ‘र’ को ‘द’ पढ़ने से नमाज़ फ़ासिद हो जाती है। और “नस्तअीन” को “नस्ताअीन” पढ़ने से नमाज़ जाती रहती है। और अनअम्त की त को ज़बर के बजाय ज़ेर या पेश पढ़ने से नमाज़ फ़ासिद हो जाती है। आह, ओह, उफ़ तुफ़ दर्द या मुसीबत की वजह से कहे या आवाज़ के

साथ रोए और हुरूफ़ (अक्षर) पैदा हुए तो इन सब सूरतों में नमाज़ जाती रहेगी। लेकिन अगर मरीज़ की जुबान से बे इखतियार “आह” या “ओह” निकले तो नमाज़ फ़ासिद न हुई इसी तरह छोंक, खांसी, जमाही, और डेकार में जितने हुरूफ़ मजबूरन निकलते हैं मुआफ़ हैं। दातों के अन्दर खाने की कोई चीज़ रह गई थी उस को निगल गया अगर चने से कम है तो नमाज़ मकरूह हुई और चने के बराबर है तो फ़ासिद हो गई। औरत नमाज़ पढ़ रही थी बच्चा ने उसकी छाती चूसी अगर दूध निकल आया तो नमाज़ जाती रही। नमाज़ी के आगे से गुज़रना नमाज़ को फ़ासिद नहीं करता स्वाह गुज़रने वाला मर्द हो या औरत मगर गुज़रने वाला सरक्त गुनाहगार होता है। हदीस शारीफ़ में है कि नमाज़ी के आगे से गुज़रने वाला अगर जानता कि इस पर क्या गुनाह है तो ज़मीन में धंस जाने को गुज़रने से अच्छा जानता।

नमाज़ के मकरूहात

सवाल:- नमाज़ के अन्दर जो बातें मकरूह हैं उन्हें बताइए।
 जवाब:- कपड़े, बदन या दाढ़ी के साथ खेलना कपड़ा समेटना जैसे सजदा में जाते बक़ूत आगे या पीछे से उठाना, कपड़ा लटकाना यानी सर या मोढ़े पर इस तरह डालना कि दोनों कनारें लटकते हों, किसी आसतीन का आधी कलाई से ज्यादा चढ़ाना। दामन समेट कर नमाज़ पढ़ना, शिद्दत का (ज़ोरदार) पाख़ाना

पेशाब मालूम होते वक्त या ग़ल्बये रियाह के वक्त नमाज़ पढ़ना मर्द का जूँड़ा बांधे हुए नमाज़ पढ़ना, उंगलियाँ चटकाना, उंगलियों की केंची बांधना, कमर पर हाथ रखना, इधर उधर मुंह फेर कर देखना, आसमान की तरफ़ निगाह उठाना। तशहुूद या सजदों के दरमियान कुते की तरह बैठना, मर्द का सजदा में कलाइयों का बिछाना, किसी शरूस के मुंह के सामने नमाज़ पढ़ना, कपड़े में इस तरह लिपट जाना कि हाथ भी बाहर न हो। पगड़ी इस तरह बांधना कि बीच सर पर न हो नाक और मुंह को छिपाना बे ज़रूरत खंकार निकालना, बिलकुस्त जमाही लेना और खुद आए तो हर्ज नहीं, जिस कपड़े पर जानदार की तस्वीर (फोटो) हो उसे पहन कर नमाज़ पढ़ना, तस्वीर का नमाजी के सर पर यानी छत में होना या लटका होना या सजदा करने की जगह में होना कि उस पर सजदा वाक़े हो, नमाजी के आगे या दाहिने या बायें या पीछे तस्वीर का होना जब कि लटकी हो या नसब हो या दीवार वगैरा में मनकूशा हो (दीवार पर खोद कर या वैसे ही किसी जानदार की तस्वीर बनी होना) उलटा कुरआन मजीद पढ़ना, किसी वाजिब को तर्क करना (छोड़ना) क़ियाम के अलावा किसी और मौक़ा पर कुरआन पढ़ना रुकु में क़िराअत को खत्म करना, इमाम से पहले मुक़्तदी का रुकु व सुजूद वगैरा में जाना या उससे पहले सर उठाना यह तमाम बातें मकरूह तहरीमी हैं।

वित्र का बयान

सवालः- नमाजे वित्र किस तरह पढ़ी जाती है।

जवाबः- नमाजे वित्र भी उसी तरह पढ़ी जाती है जिस तरह और नमाज पढ़ी जाती है। लेकिन वित्र की तीसरी रक्खत में अलहम्दु और सूरत पढ़ने के बाद कानों तक दोनों हाथ ले जाये और अल्लाहु अकबर कहता हुआ हाथ वापस लाए और नाफ़ (ढोंडी) के नीचे बांध ले। फिर दुआए कुनूत पढ़े फिर उसके बाद और नमाजों की तरह रुकु और सजदा वगैरा करके सलाम फेर दे।



दुआए कुनूत

JAUNAT KUNOOT?

“अल्लाहुम्म इन्ना नस्तअीनु क व नस्तग़फ़िरु क व नुमिनु बि
क व नतवक्कलु अलै क व नुसनी अलैकल खेर व नशाकुरुक वला
नकफुरुक व नखलउ व नतुरुकु मैयफजुरु क अल्ला हुम्म ईया
का नअबुदु व ल क नुसल्ली व नसजुदु व इलैक नसआ व नह
फिदु व नरजू रहमत क व नखूशा अज़ाब क इन्न अज़ाब क बिल
कुफ़्कारि मुलहिक”

सवालः- जिस शर्क्स को दुआए कुनूत याद न हो वह क्या पढ़े।

जवाबः- जिस शर्क्स को दुआए कुनूत याद न हो वह यह दुआ पढ़े।

“अल्लाहुम्म रब्बना आतिना फ़िदुनयां ह़स नतौं वफ़िल

आखिरति हः स नतौं वकिना अजाबन्नार”

सवालः- अगर दुआए कुनूत न पढ़े तो क्या हुक्म है।

जवाबः- अगर दुआए कुनूत कः सदन (जान बूझ) कर न पढ़े तो नमाज़े वित्र फिर से पढ़े और अगर भूल कर न पढ़े तो आखिर में सजदए सहव करे।

सवालः- अगर दुआए कुनूत पढ़ना भूल जाए और रुकु में याद आए तो क्या करे।

जवाबः- अगर दुआए कुनूत पढ़ना भूल जाए और रुकु में याद आए तो न कियाम की तरफ़ लौटे और न रुकु में पढ़े बल्क आखिर में सजदये सहव करे।

सुन्नत और नफ़ल का बयान

सवालः- कितनी नमाज़ें सुन्नते मुअक्कदा हैं।

जवाबः- दो रक्अत फ़ज्ज के फ़र्ज से पहले, चार रक्अत जुहर के फ़र्ज से पहले और दो रक्अत जुहर फ़र्ज के बाद, दो रक्अत मग़रिब फ़र्ज के बाद, दो रक्अत इश्या फ़र्ज के बाद, चार रक्अत जुमा फ़र्ज से पहले और चार रक्अत रक्अत जुमा फ़र्ज के बाद, इन सुन्नतों को “सुन्ननतुलहुदा” भी कहा जाता है।

सवालः- कितनी नमाज़ें सुन्नते गैर मुअक्कदा हैं।

जवाबः- चार रक्अत अल्ल के फ़र्ज से पहले, चार रक्अत इश्या फ़र्ज के पहले, जुहर फ़र्ज के बाद दो के बजाय चार इसी तरह

इशां फर्ज के बाद दो के बजाय चार रक्खत, मगरिब के बाद छः (6) रक्खत सलातुल अब्बाबीन, दो रक्खत तहीयतुल मस्जिद, दो रक्खत तहीयतुल वजू दो रक्खत नमाज़े इशाराक कम से कम दो रक्खत नमाज़े चाशत और ज्यादा से ज्यादा बारह (12) रक्खत, कम से कम दो रक्खत नमाज़े तहज्जुद और ज्यादा से ज्यादा आठ रक्खत, सलातुत्तसबीह, नमाज़े इसतिखारा और नमाज़े हाजत बगैरा इन सुन्नतों को सुननुज्ज़वाइद और कभी मुसतहब भी कहते हैं।

सवाल:- जमाअत खड़ी होने के बाद किसी सुन्नत का शुरू करना जाइज़ है या नहीं।

जवाब:- जमाअत खड़ी हो जाने के बाद फज्ज की सुन्नत के अलावा किसी सुन्नत का शुरू करना जाइज़ नहीं। अगर यह जाने कि फज्ज की सुन्नत पढ़ने के बाद जमाअत मिल जाएगी अगर चे क़ादा (बैठक) ही में शामिल होगा तो सुन्नत पढ़ ले मगर सफ़ (लाइन) के बराबर खड़े होकर पढ़ना जाइज़ नहीं बल्कि सफ़ (लाइन) से दूर हट कर पढ़े।

सवाल:- किन वक्तों में नफ़ल नमाज़ पढ़ना जाइज़ नहीं।

जवाब:- तुलू व गुरुब (निकलना सूरज का और ढूबना सूरज का) और दोपहर इन तीनों वक्तों में कोई नमाज़ जाइज़ नहीं। न फर्ज न वाजिब और न नफ़ल। हाँ अगर उस रोज़ अस्त्र की नमाज़ नहीं पढ़ी है तो सूरज ढूबने के वक्त पढ़ले। और तुलूए

फ़ज्ज से तुलूए आफ़ताब (सूरज) के दरमियान सिवाय दो रक्खत सुन्नते फ़ज्ज के तहीयतुल मस्जिद और तहीयतुलवजू वगैरा कोई नफ़ल जाइज़ नहीं और नमाज़े अल्ल से मगरिब की फ़र्ज़ पढ़ने के दरमियान नफ़ल मना है और खुतबा के बक्त और और नमाज़े ईदन से पेश्तर (पहले) नफ़ल मकरूह है। चाहे घर में पढ़े या ईदगाह व मस्जिद में और नमाज़े ईदन के बाद भी नफ़ल मकरूह है जब कि ईदगाह या मस्जिद में पढ़े घर में पढ़ना मकरूह नहीं है।

सवाल:- नफ़ल नमाज़ बैठ कर पढ़ सकते हैं या नहीं।

जवाब:- बैठ कर पढ़ सकते हैं मगर जबकि कुदरत (ताक़त) हो तो खड़े होकर पढ़ना अफ़ज़ल है।

JANNATI KAUN?

तहीयतुलवजू

मुस्लिम शरीफ में है कि नबीये करीम سल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो शर्क्स वजू करे और अच्छा वजू करे और ज़ाहिर व बातिन से मुतवज्जेह होकर दो रक्खत (नमाज़ तहीयतुलवजू) पढ़े उसके लिए जन्नत वाजिब हो जाती है।

नमाज़े इशाराक़

तिर्मिज़ी शरीफ में है कि हुजूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि जो फ़ज्ज की नमाज़ जमाइत से पढ़ कर खुदा का ज़िक्र करता

रहे यहां तक कि सूरज बुलन्द हो जाए फिर दो रक्खत (नमाज़े इशाराक) पढ़े तो उसे पूरे हज और उमरा का सवाब मिलेगा ।

नमाज़े चाश्त

चाष्ट की नमाज़ मुस्तहब है कम से कम दो और ज्यादा से ज्यादा बारह (12) रक्खतें हैं तिर्मिज़ी और इब्ने माज़ा में है कि हुजूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया जो चाष्ट की दो रक्खतों पर मुहाफ़ज़त करे उसके गुनाह बरखा दिए जाएंगे अगरचे समुन्दर के झाग बराबर हो ।

नमाज़े तहज्जुद

तहज्जुद की नमाज़ का वक्त इश्या की नमाज़ के बाद सो कर उठे उस वक्त से तुलूये सुबह सादिक तक है तहज्जुद की नमाज़ कम से कम दो रक्अत है और हुजूर अलैहिस्सालाम से आठ तक साबित है। हदीस शारीफ में इस नमाज़ की बड़ी फ़ज़ीलत (बड़ाई) आई है नसई और इब्ने माजा ने अपनी सुनन में रिवायत की कि रसूलुल्लाह सलल्लाहु अलैहिवसल्लम ने फ़रमाया जो शर्क्स रात में बेदार हो (जागे) और अपने अहल को जगाए फिर दोनों दो-दो रक्अत पढ़ें तो कसरत से याद करने वालों में लिखे जायेंगे।

सलातुत्तसबीह

सलातुत्तसबीह में बे इन्तेहा सवाब है। बाज़ मुहकिमीन फ़रमाते हैं कि उसकी बुजुरगी सुनकर तर्क न करेगा मगर दीन में सुस्ती करने वाला हदीस शारीफ़ में है कि हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहिवसल्लम ने हज़रते अब्बास रज़ियल्ला हुतआला अनहु से फ़रमाया कि ऐ चचा। अगर तुम से हो सके तो सलातुत्तसबीह हर रोज़ एक बार पढ़ो। और अगर रोज़ न हो सके तो हर जुमा को एक बार पढ़ो। और यह भी न हो सके तो हर महीना में एक बार। और यह भी न हो सके तो साल में एक बार और यह भी न हो सके तो उम्र में एक बार। इस नमाज़ की तरकीब सुन ने तिर्मिज़ी में हज़रते अब्दुल्लाह इब्ने मुबारक से इस तरह मज़कूर है कि तकबीर तहरीमा के बाद सना पढ़े फिर पन्द्रह (15) बार यह तस्बीह पढ़े।

“सुबहानल्लाहि वलहम्दु लिल्लाहि वलाइला-ह-इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर। फिर तओउज, तसमिया, सूरये फ़ातिहा और सूरत पढ़ कर दस बार ऊपर वाली तस्बीह पढ़े फिर रुकू करे और रुकू में दस बार पढ़े फिर रुकू से सर उठाए और तसमीअ-ब-तहमीद के बाद दस बार वाही तस्बीह पढ़े फिर सजदा को जाए और उसमें दस मरतबा पढ़े फिर सजदा से सर उठाए तो दस बार दस बार पढ़े फिर दूसरे सजदा में जाए तो दस बार पढ़े। इसी तरह चार रुकूअत पढ़े और रुकू व सुजूद में सुबहा न

रब्बियल अज़ीम और सुबहान रब्बियल अज़ला कहने के बाद तस्वीहात पढ़े ।

नमाज़े हाजत

अबूदाऊद में है हज़रते हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अनहु फ़रमाते हैं कि जब हुजूर अलैहिस्सलातु बस्सलाम को कोई अहम मुआमिला पेश आता तो आप उसके लिए दो या चार रक्खत नमाज़ पढ़ते । हदीस शरीफ़ में है कि पहली रक्खत में सूरए फ़ातिहा और तीन बार आयतल कुर्सी पढ़े और बाकी तीन रक्खतों में सूरए फ़ातिहा, कुलहुवल्लाहु, कुलअऊजु बिरब्बिल फ़लक और कुल अऊजु बिरब्बिन्नास एक एक बार पढ़े तो यह ऐसी है जैसे शबे क़द्र में चार रक्खतें पढ़ी । मशाइख़ फ़रमाते हैं कि हमने यह नमाज़ पढ़ी और हमारी हाजते (ज़रूरतें) पूरी हुई ।

तरावीह का बयान

सवालः— तरावीह सुन्नत है या नफ़्ल ।

जवाबः— तरीवीह मर्द व औरत सब के लिए सुन्नते मुअविकदा है । उसका छोड़ना जाइज़ नहीं ।

सवालः— तरावीह की कितनी रक्खतें हैं ।

जवाबः— तरावीह की बीस (20) रक्खतें हैं ।

सवालः- बीस रक्खतें तरावीह में क्या हिक्मतें हैं।

जवाबः- बीस रक्खत तरावीह में हिक्मत यह है कि सुन्नतों से फ़राइज़ और वाजिबात की तकमील होती है और सुबह से शाम तक फ़र्ज़ व वाजिब कुल बीस रक्खतें हैं तो मुनासबि हुआ कि तरावीह भी बीस (20) रक्खतें हो ताकि मुकम्मल करने वाली सुन्नतों की रक्खत और जिनकी तकमील होती है यानी फ़र्ज़ व वाजिब की रक्खत की तादाद बराबर हो जाए।

सवालः- तरावीह की बीस रक्खतें किस तरह पढ़ी जाएं।

जवाबः- बीस रक्खतें दस सलाम से पढ़ी जाएं यानी हर दो रक्खत पर सलाम फेरे और हर तरावीह यानी चार रक्खत पर इतनी देर बैठना मुस्तहब है कि जितनी देर में चार रक्खतें पढ़ी हैं।

JANNATI KAUN?

सवालः- तरावीह की नीयत किस तरह की जाए।

जवाबः- नीयत की मैंने दो रक्खत नमाज़ तरावीह सुन्नत रसूलुल्लाह की अल्लाह तआला के लिए (मुक़्तदी इतना और कहे पीछे इस इमाम के) मुंह मेरा तरफ़ काब्बा शरीफ़ के अल्लाह अकबर।

सवालः- तरावीह की हालत में चुपका बैठा रहे या कुछ पढ़े।

जवाबः- इखतियार है चाहे चुपका बैठा रहे चाहे कलिमह या दुर्दश शरीफ़ पढ़े और आम तौर से यह दुआ पढ़ी जाती है।

“सुबहा न जिलमुल्किवल मलकूति सुबहा न जिल इज़्जति वल

अजमति वल हैबति वल कुदरति वल किबरियाइ वल जबरुत ।
सुबहा नलमलिकिल हैयिल्लजी ला यनामु वलायमूत । सुब्बूहुन
कुद्दसुन रब्बुना व रब्बुल मलाइकति बरूह”

सवाल:- तरावीह जमाअत से पढ़ना कैसा है ।

जवाब:- तरावीह जमाअत से पढ़ना सुन्नते किफाया है । यानी अगर मस्जिद में तरावीह की जमाअत न हुई तो मुहल्ला के सब लोग गुनाहगार हुए और अगर कुछ लोगों ने मस्जिद में जमाअत से पढ़ ली तो सब लोग छुटकारा पा गए ।

सवाल:- तरावीह में कुरआन मजीद खत्म करना कैसा है ।

जवाब:- पूरे महीने की तरावीह में एक बार कुरआन मजीद खत्म करना सुन्नते मुअक्कदा है । और दो बार खत्म करना अफ़ज़ल है और तीन बार खत्म करना मज़ीद (ज्यादा) फ़ज़ीलत रखत है बशर्ते कि मुक़्तदियों को तकलीफ़ न हो मगर एक बार खत्म करने में मुक़्तदियों का लिहाज़ नहीं किया जाएगा ।

सवाल:- बिला उज़् (सज्बूरी) बैठ कर तरावीह पढ़ना कैसा है ।

जवाब:- बिला उज़् बैठ कर तरावीह पढ़ना मकरूह है बल्कि बाज़ फुक़हाये किराम के नज़दीक तो नमाज़ होगी ही नहीं (बहारे शरीअत)

सवाल:- बाज़ लोग शुरू रक़अत से शरीक नहीं होते बल्कि जब इमाम रुकू में जाने लगता है तो शरीक होते हैं उनके लिए क्या हुक्म है ।

जवाबः- नाजाइज़ है ऐसा हरगिज़ नहीं करना चाहिए कि इसमें
मुनाफ़िकीन से मुशाबहत पाई जाती है

क़ज़ा नमाज़ का बयान

सवालः- अदा और कज़ा किसे कहते हैं।

जवाबः- किसी इबादत को उसके वक़्ते मुकर्ररह पर करने को
अदा करते हैं और वक़्त गुज़र जाने के बाद अमल करने को कज़ा
कहते हैं।

सवालः- किन नमाजों की कज़ा ज़बरी है।

जवाबः- फ़र्ज़ नमाजों की कज़ा फ़र्ज़ है, विन की कज़ा वाजिब
है और फ़ज़ की सुन्नत आगर फ़र्ज के साथ कज़ा हो और ज़बाल
से पहले पढ़े तो फ़र्ज के साथ सुन्नत भी पढ़े और ज़बाल के बाद
पढ़े तो सुन्नत की कज़ा नहीं और चुहर या जुमा के पहले की
सुन्नतें कज़ा हो गई और फ़ज़ पढ़ली अगर वक़्त खत्म हो गया
हो तो इन सुन्नतों की कज़ा नहीं और अगर वक़्त बाकी है तो
पढ़े और अफ़ज़ल पढ़ है कि पिछली सुन्नतें पढ़ने के बाद उनको
पढ़े।

सवालः- हूटी हुई नमाज़ किस वक़्त पढ़नी चाहिए।

जवाबः- छः (6)या उससे ज्यादा हूटी हुई नमाजें पढ़ने के लिए
कोई वक़्त मुकर्रर नहीं है हाँ जल्द पढ़ना चाहिए ताखीर (दिरी)
नहीं करना चाहिए और उम्र में जब भी पढ़ेगा छुटकारा पा

जायेगा लेकिन सूरज निकलने सूरज छूबने और ज़बाल के बक्त
क़ज़ा नमाज़ पढ़ना जाइज़ नहीं।

सवाल:- अगर पांच या इससे कम नमाज़ें क़ज़ा हों तो उन्हें कब
पढ़ना चाहिए।

जवाब:- जिस शूल्स की पांच या उससे कम नमाज़ें क़ज़ा हों
वह साहबे तरतीब है। उस पर लाज़िम है कि बक्ती नमाज़ से
पहले क़ज़ा नमाज़ें बित्ततरतीब पढ़े अगर बक्त में गुंजाइश होते
हुए बक्ती नमाज़ पहले पढ़ली तो न हुई इस मसला की मज़ीद
तफ़सील बढ़ारे शरीअत में देखनी चाहिए।

सवाल:- अगर कोई नमाज़ क़ज़ा हो जाए जैसे फ़ज़्र की नमाज़
तो नीयत किस तरह करनी चाहिए।

जवाब:- जिस रोज़ और जिस बक्त की नमाज़ क़ज़ा हो उस
रोज़ और उस बक्त की नीयत क़ज़ा में ज़रूरी है। जैसे अगर¹
जुमा के रोज़ फ़ज़्र की नमाज़ क़ज़ा हो गई तो इस तरह नीयत
करें। नीयत की धैर्य हो रक्खना नमाज़ क़ज़ा जुमा के फ़ज़्र फ़र्ज़
की अवधार दरक़ात के लिए मुंह मेरा काबा शारीफ के अल्लाह
अक्बर इसी दृष्टि से ज़्यादा नमाज़ों की नीयतों को समझा लेना
चाहिए।

सवाल:- ज़रूर धैर्य हो महीना या साल हो साल की नमाज़ें
क़ज़ा हो जाएं तो नीयत किस तरह करनी चाहिए।

जवाब:- ऐसो सूरत में जो नमाज़ जैसे जुहर की क़ज़ा पढ़नी

है तो इस तरह नीयत करे । नीयत की मैंने चार रक्खत नमाज़ क़ुर्ज़ा जो मेरे ज़िम्मे बाकी है उनमें से पहले जूहर फ़र्ज़ की अल्लाह तआला के लिए मुंह मेरा तरफ़ काबा शारीफ़ के अल्लाहु अकबर । और मग़रिब की पढ़नी हो तो यूँ नीयत करे नीयत की मैंने तीन रक्खत नमाज़ क़ुर्ज़ा जो मेरे ज़िम्मे बाकी है उनमें से पहले मग़रिब फ़र्ज़ की अल्लाह तआला के लिए मुंह मेरा तरफ़ काबा शारीफ़ के अल्लाहु अकबर । इसी तरीके पर दूसरी क़ुर्ज़ा नमाज़ों की नीयतों को समझना चाहिए ।

सवाल:- क्या क़ुर्ज़ा नमाज़ों की रक्खतें भी खाली और भरी यानी बगैर सूरत और सूरत के साथ पढ़ी जाती है ।

जवाब:- हाँ जो रक्खतें अदा में सूरत के साथ पढ़ी जाती हैं वह क़ुर्ज़ा में भी सूरत के साथ पढ़ी जाती हैं और जो रक्खतें अदा में बगैर सूरत के पढ़ी जाती हैं वह क़ुर्ज़ा में भी बगैर सूरत के पढ़ी जाती हैं ।

सवाल:- बाज़ लोग शबे कदम पा रमज़ान के आखिरी जुमा को क़जाए उम्री के नाम से दो या चार रक्खत पढ़ते हैं और यह समझते हैं कि उस भर की क़ुर्ज़ा इसी एक नमाज़ से अदा हो गई तो उसके लिए क्या हुक्म है ।

जवाब:- यह स्वाल बातिल है । ताक्कते कि हर एक नमाज़ की क़ुर्ज़ा अलग अलग न पढ़ेंगे तो छुटकारा न पाएंगे ।

سجادے سہب کا بیان

سوال:- سجادے سہب کیسے کہتے ہیں ।

جواب:- سہب کے مانا ہیں بھولنے کے । کبھی نماز میں بھول سے کوئی خاص خراہی پیدا ہو جاتی ہے اس خراہی کو دور کرنے کے لیے کاڈا اخربیرا میں دو سجادے کیا جاتے ہیں انکا سجادے سہب کہتے ہیں ।

سوال:- سجادے سہب کا تریکا کیا ہے ।

جواب:- سجادے سہب کا تریکا یہ ہے کہ آخیری کاڈا (بیٹک) میں اٹھی یہ تو بس لڑھ تک پڑنے کے باعث سیف داہنی ترک سلام فر کر دو سجادے کرے فیر تشاہد و گیرا پڑ کر سلام فر دے । **JANNATI KAUN?**

سوال:- کین باتوں سے سجادے سہب واجب ہوتا ہے ।

جواب:- جو باتیں کہ نماز میں واجب ہیں ان میں سے کسی اک کے بھول کر چوت جانے سے سجادے سہب واجب ہوتا ہے । جیسے فرج کی پہلی یا دوسری رکعت میں الہمود یا سوچ پڑنا بھول گیا یا سونت اور نفل کی کسی رکعت میں الہمود یا سوچ پڑنا بھول گیا یا الہمود سے پہلے سوچ پڑ دی تو ان سوچوں میں سجادے سہب کرنا واجب ہوتا ہے ।

سوال:- فرج اور سونت کے چوت جانے سے سجادے سہب واجب ہوتا ہے یا نہیں ।

جواب:- فرج چوت جانے سے نماز فاسید ہو جاتی ہے । سجادے

सह व् से उसकी तलाफ़ी नहीं हो सकती इसलिए फिर से पढ़ना पड़ेगा । और सुन्नत व मुस्तहब जैसेतओउज़ तसमिया, सना आमीन और तकबीरात इन्तिकाल के छूट जाने से सजदये सह व् वाजिब नहीं होता बल्कि नमाज़ हो जाती है मगर दोबारा पढ़ना मुस्तहब है ।

सवाल:- किसी वाजिब को क़सदन (जान बूझकर) छोड़ दिया तो सजदये सह व् से तलाफ़ी होगी या नहीं ।

जवाब:- किसी वाजिब को क़सदन (जान बूझकर) छोड़ दिया तो सजदये सह व् से उस नुक़सान की तलाफ़ी नहीं होगी बल्कि नमाज़ को दोबारा पढ़ना वाजिब होगा । इसी तरह अगर भूलकर किसी वाजिब को छोड़ दिया और सजदये सह व् न किया जब भी नमाज़ का दोबारा पढ़ना वाजिब है ।

सवाल:- एक नमाज़ में कई वाजिब छूट गए तो क्या हुक्म है ।

जवाब:- इस सूरत में भी सह व् के बही दो सजदे काफ़ी हैं ।

सवाल:- फ़र्ज़ या विन में कादये ऊला (पहली बैठक) भूल कर तीसरी रक्झत के लिए खड़ा हो रहा था कि याद आ गया तो इस सूरत में क्या करे ।

जवाब:- अगर अभी सीधा नहीं खड़ा हुआ है तो बैठ जाए और सजदये सह व् न करे । और अगर सीधा खड़ा हो गया तो न लौटे और आखिर में सजदये सह व् करे और अगर लौटा तो इस सूरत में भी सजदये सह व् वाजिब होता है ।

सवालः- रुकू सजदा या कादा में भूल कर कुरआन पढ़ दिया तो क्या हुक्म है।

जवाबः- इस सूरत में भी सजदये सह व् वाजिब है।

सवालः- अगर फ़र्ज़ का कादए अखीरा (पिछली बैठक) नहीं किया और भूल कर खड़ा हो गया तो क्या करे।

जवाबः- जब तक उस रक्खत का सजदा न किया हो लौट आए और अत्तहीयात पढ़ कर दाहिनी तरफ सलाम फेरे और सजदये सह व् करे। और अगर उस रक्खत का सजदा कर लिया तो सजदा से सर उठाते ही वह फ़र्ज़ नफ़ल हो गया इसलिए अगर चाहे तो अलावा मग़रिब के दूसरी नमाज़ों में एक रक्खत और मिलाए ताकि रक्खत ताक न रहे।

सवालः- अगर सुन्नत और नफ़ल का कादा (बैठक) न किया और भूल कर खड़ा हो गया तो क्या करे।

जवाबः- सुन्नत और नफ़ल का हर कादा (बैठक) कादए अखीरा है यानी फ़र्ज़ है। अगर कादा न किया और भूल कर खड़ा हो गया तो जब तक उस रक्खत का सजदा न करे लौट आए और सजदये सह व् करे।

सवालः- अगर कादए अखीरा (पिछली बैठक) में अत्तहीयातु व रसूलुहु तक पढ़ने के बाद भूल कर खड़ा हो गया तो क्या करे।

जवाबः- अगर बक़द्रे तशह्हुद कादए अखीरा करने के बाद भूल

कर खड़ा हो गया तो जब तक उस रक्तात्मक सजदा न किया हो लौट आए और दोबारा अत्तहीयात पढ़े बगैर सजदए सह व करे। फिर ताशह् हुद बगैर पढ़ कर सलाम फेर दे।

सवाल:- कादयेऊला (पहली बैठक) में भूल कर दूर्लुप शरीफ़ भी पढ़ लिया तो क्या हुक्म है।

जवाब:- अगर “अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिन” या “अल्लाहुम्म सल्लि अला सैयिदेना” तक पढ़ा या इस से ज्यादा पढ़ा तो सजदए सह व वाजिब है और अगर उससे कम पढ़ा तो नहीं। मगर यह हुक्म सिर्फ़ फर्ज़, वित्त और जुहर व जुमा की पहली चार रक्तात्मक वाली सुन्नतों के लिए है रहे दीगर सुनन व नवाफ़िल तो उनके कादएऊला में भी दूर्लुप शरीफ़ पढ़ने का हुक्म है।

JANNATI KAUN?

सवाल:- जहरी नमाज़ में भूलकर आहिस्ता पढ़ दिया या सिर्फ़ नमाज़ में जहर से पढ़ दिया तो क्या हुक्म है।

जवाब:- अगर जहरी (आवाज़ से पढ़ने वाली) नमाज़ में हमाम ने भूल कर कम से कम एक आयत आहिस्ता पढ़ दी या सिर्फ़ यानी जिसमें किराअत आहिस्ता पढ़ी जाती है ऐसी नमाज़ में जहर से पढ़ दिया तो सजदए सह व वाजिब है और अगर एक कलिमा पढ़ा तो मुआफ़ है और मुनफ़रिद (अकेला नमाज़ पढ़ने वाला ने सिर्फ़ नमाज़ में एक आयत जहर से पढ़ी तो सजदए सह व वाजिब है और जहर में आहिस्ता पढ़ी तो नहीं।

सवालः- कि रा अत वगैरा किसी मौका पर ठहर कर सोचने लगा तो क्या हुक्म है।

जवाबः- अगर एक रुक्न यानी तीन बार सुब्हानल्लाह कहने की मिक़दार वक़्फ़ा (ठहरना) हुआ तो सजदए सह व वाजिब है।

सवालः- जिस पर सजदए सह व होना वाजिब था अगर सह व होना याद न था और नमाज़ खत्म करने की नीयत से सलाम फेर दिया तो क्या करे।

जवाबः- अगर सह व होना याद न था और सलाम फेर दिया तो अभी नमाज़ से बाहर नहीं हुआ इसलिए जब तक कलाम वगैरा कोई फ़ेल (कार्य) मनाफ़ीए नमाज़ (जो नमाज़ को फ़ासिद करे) न किया हो सजदा करे और फिर तशह्हुद द्वारा पढ़ कर सलाम फेर दे।

बीमार की नमाज़ का बयान

सवालः- अगर बीमारी के सबब खड़े होकर नमाज़ नहीं पढ़ सकता है तो क्या करे ?

जवाबः- अगर खड़े होकर नमाज़ नहीं पढ़ सकता कि मर्ज़ बढ़ जाएगा या देर में अच्छा होगा या चक्कर आता है या खड़े होकर पढ़ने से पेशाब का क़तरा आएगा या बहुत शदीद दर्द नाक़ बिले बदर्शित हो जाएगा तो इन सब सूरतों में बैठ कर नमाज़ पढ़े।

सवाल:- अगर किसी चीज़ की टेक लगाकर खड़ा हो सकता है तो इस सूरत में क्या हुक्म है।

जवाब:- अगर खादिम (नौकर) या लाठी या दीवार वगैरा पर टेक लगाकर खड़ा हो सकता है तो फर्ज़ है कि खड़ा होकर पढ़े। इस सूरत में अगर बैठ कर नमाज़ पढ़ेगा तो नहीं होगी।

सवाल:- अगर कुछ देर खड़ा हो सकता है तो उसके लिए क्या हुक्म है।

जवाब:- अगर कुछ देर भी खड़ा हो सकता है अगर चे इतना ही कि खड़ा होकर अल्लाहु अकबर कहले तो फर्ज़ है कि खड़ा होकर उतना कहे फिर बैठे वर्ना नमाज़ न होगी।

सवाल:- बीमारी के सबब अगर रुकू सजदा भी न कर सकता हो तो क्या करे **JANNATI KAUN?**

जवाब:- ऐसी सूरत में रुकू सजदा इशारा से करे मगर रुकू के इशारा से सजदा के इशारा में सर को ज्यादा झुकाए।

सवाल:- अगर बैठ कर भी नमाज़ न पढ़ सकता हो तो क्या करे ?

जवाब:- ऐसी सूरत में लेट कर नमाज़ पढ़े इस तरह कि चित लेट कर किंबला की तरफ पांव करे मगर पांव न फैलाए बल्कि घुटने खड़े रखे और सर के नीचे तकिया वगैरा रख कर जरा ऊँचा करले और रुकू सजदा सर झुका कर इशारा से करे यह सूरत अफ़ज़ल है। और यह भी जाइज़ है कि दाहिने या बांए

करवट लेटकर मुंह किंवता की तरफ करे ।

सवाल:- अगर सर से इशारा भी न हो सके तो क्या करे ?

जवाब:- अगर सर से भी इशारा न हो सके तो नमाज़ साकिंत हो जाती है फिर अगर नमाज़ के छः (6) वक़्त इसी हालत में गुज़र जाएं तो कृजा भी साकिंत हो जाती है ।

سجادए तिलावत का ब्यान

सवाल:- सجادए तिलावत किसे कहते हैं ।

जवाब:- कुरआन में चौदा मुकामात (जगह) ऐसे हैं कि जिन के पढ़ने या सुनने से सजदा करना बाजिब होता है उसे सجادए तिलावत कहते हैं ।

سवाल:- سجادए तिलावत का तरीका क्या है ।

जवाब:- सجادए तिलावत का मसनून तरीका यह है कि खड़ा होकर अल्लाहु अकबर कहता हुआ सजदा में जाए और इस से कम तीन बार सुबहान रब्बियल अल्लाह कहे फिर अल्लाहु अकबर कहता हुआ खड़ा हो जाए बरा । न इसमें अल्लाहु अकबर कहते हुए हाथ उठाना है और न इसमें तशह्व हुद है और न सलाम ।

सवाल:- अगर बैठकर सजदा किया तो सजदा अदा होगा या नहीं ।

जवाब:- अदा हो जाएगा मगर मसनून यही है कि खड़ा हो कर सजदा में जाए और सजदा के बाद फिर खड़ा हो ।

सवालः- सजदए तिलावत के शाराइत क्या हैं ।

जवाबः- सजदए तिलावत के लिए तहरीमा के अलावा वह तमाम शरतें हैं जो नमाज़ के लिए हैं मस्लन (जैसे) तहारत, सत्रे औरत, इस्तिक़बाले किब्ला और नीयत वगैरा ।

सवालः- सजदए तिलावत की नीयत किस तरह की जाती है ।

जवाबः- नीयत की मैंने सजदए तिलावत की अल्लाह तआला के वास्ते मुंह मेरा तरफ़ काबा शरीफ़ के अल्लाहु अकबर ।

सवालः- उर्दू जुबाना में आयते सदजा का तर्जुमा पढ़ा तो सजदा वाजिब होगा या नहीं ।

जवाबः- उर्दू जुबान या किसी जुबान में आयते सजदा का तर्जुमा पढ़ने और सुनने से भी सजदा वाजिब होता है ।

सवालः- क्या आयते सजदा पढ़ने के बाद फौरन सजदा करना वाजिब होता है ।

जवाबः- अगर आयते सजदा नमाज़ के बाहर पढ़ी है तो फौरन सजदा कर लेना वाजिब नहीं हाँ बेहतर है कि फौरन कर ले और यजू हो तो ताखीर मकरूह तनज़ीही है ।

सवालः- अगर नमाज़ में आयते सजदा पढ़ी तो क्या हुवम है ।

जवाबः- अगर नमाज़ में आयते सजदा पढ़ी तो फौरन सजदा कर लेना वाजिब है । तीन आयत से ज्यादा की ताखीर करेगा तो मुनाहगार होगा । और अगर फौरन नमाज़ का सजदा कर लिया यानी आयते सजदा के बाद तीन आयत से ज्यादा न पढ़ा

और रुकू करके सजदा कर लिया तो अगरचे सजदए तिलावत की नीयत न हो सजदा अदा हो जाएगा (बहारे शरीअत)।

सवाल:- एक मजिलस में सजदा की एक आयत को कई बार पढ़ा तो एक सजदा वाजिब होगा या कई सजदा।

जवाब:- एक मजिलस में सजदा की एक आयत को कई बार-बार पढ़ने या सुनने से एक ही सजदा वाजिब होता है।

सवाल:- मजिलस में आयत पढ़ी या सुनी और सजदा कर लिया फिर उसी मजिलस में वही आयत पढ़ी या सुनी तो दूसरा सजदा वाजिब होगा या नहीं।

जवाब:- दूसरा सजदा नहीं वाजिब होगा वही पहला सजदा काफी है।

JANNATI KAUN?

सवाल:- मजिलस बदलने और न बदलने की सूरतों क्या हैं ?

जवाब:- दो एक लुक़मा खाना, दो एक घूंट पीना, खड़ा हो जाना, दो एक कदम चलना, सलाम का जवाब देना, दो एक बात करना, और मस्जिद या मकान के एक गोशा से दूसरे गोशा की तरफ़ चलना इन तमाम सूरतों में मजिलस न बदलेगी। हाँ अगर मकान बड़ा है जैसे शाही महल तो ऐसे मकान में एक गोशा से दूसरे में जाने से बदल जाएगी, और तीन लुक़मा खाना, तीन घूंट पीना, तीन कलिमे बोलना, तीन कदम मैदान में चलना और निकाह या खरीदो फ़रोख्त करना इन तमाम सूरतों में मजिलस बदल जाएगी।

मुसाफिर की नमाज़ का बयान

सवालः-- मुसाफिर किसे कहते हैं ?

जवाबः-- शारीअत में मुसाफिर वह शर्क्स है जो तीन रोज़ की राह जाने के इरादा से बस्ती (अपने रहने के स्थान) से बाहर हुआ ।

सवालः-- मील के हिसाब से तीन रोज़ की राह की मिक़दार कितनी है ।

जवाबः-- खुश्की में तीन रोज़ के राह की मिक़दार 57 3/8 मील है (यानी तक़रीबन 92 किलो मीटर)

सवालः-- अगर कोई शर्क्स मोटर, रेलगाड़ी या हवाई जहाज़ वगैरा से तीन दिन की राह थोड़े क़क्कत में त्रै कर ले तो मुसाफिर होगा या नहीं ।

जवाबः-- मुसाफिर हो जाएगा रुक्खाह कितनी ही जल्दी तै करे ।

सवालः-- मुसाफिर पर नमाज़ के बारे में क्या हुक्म है ।

जवाबः-- मुसाफिर पर वाजिब है कि क़स करे यानी जुहर, अस्त्र और इशा चार रक्झत वाली फ़र्ज़ नमाज़ को दो रक्झत पढ़े कि उसके हक़ में दो ही रक्झत पूरी नमाज़ है ।

सवालः-- अगर किसी ने क़सदन (जानबूझ कर) चार ही पढ़ी तो क्या हुक्म है ।

जवाबः-- अगर जान बूझ कर चार पढ़ी और दोनों क़ादा (वैठक) किया तो फ़र्ज़ अदा हो गया और आखरी दो रक्झतें नफ़्ल हो

गई मगर गुनाहगार व मुस्तकिकेनार हुआ तौबा करे और दो रक्खत पर कादा न किया तो फर्ज अदा न हुआ ।

सवालः- फ़ज्ज, मगरिब और वित्र में क़स्त्र है कि नहीं है ।

जवाबः- नहीं फ़ज्ज, मगरिब, और वित्र में क़स्त्र नहीं है ।

सवालः- सुन्नतों में क़स्त्र है या नहीं ।

जवाबः- सुन्नतों में क़स्त्र नहीं । अगर मौका हो तो पूरी पढ़े वर्ना मुआफ़ हैं ।

सवालः- मुसाफ़िर किस वक्त से नमाज़ में क़स्त्र शुरू करे ।

जवाबः- मुसाफ़िर जब बस्ती की आबादी से बाहर हो जाए तो उस वक्त से नमाज़ में क़स्त्र शुरू करे ।

सवालः- बस स्टैंड और रेलवे स्टेशन पर क़स्त्र करेगा या नहीं ।

जवाबः- अगर आबादी से बाहर हों और तीन दिन की राह तक सफ़र का इरादा भी हो तो बस स्टैण्ड और रेलवे स्टेशन पर क़स्त्र करेगा वर्ना नहीं ।

सवालः- अगर दो ढाई दिन की राह के इरादा से निकला वहाँ पहुंच कर फिर दूसरी जगह का इरादा हुआ वह भी तीन दिन से कम का रास्ता है तो वह शरञ्जन मुसाफ़िर होगा या नहीं ।

जवाबः- वह शरञ्जन मुसाफ़िर न होगा उस वक्त तक कि जहाँ से चले वहाँ से तीन दिन की राह का इकट्ठे इरादा न करे यानी अगर दो ढाई ढाई दिन की राह के इरादा से चलता रहा तो इसी तरह अगर सारी दुनियाँ घूम आए मुसाफ़िर

न होगा ।

सवालः- मुसाफिर कब तक क़स्त करता रहे ।

जवाबः- मुसाफिर जब तक किसी जगह पन्द्रह (15) दिन या इससे ज्यादा ठहरने की नीयत न करे या अपनी बस्ती में न पहुंच जाए क़स्त करता रहे ।

सवालः- मुसाफिर अगर मुक़ीम के पीछे नमाज़ पढ़े तो क्या करे ।

जवाबः- मुसाफिर अगर मुक़ीम के पीछे नमाज़ पढ़े तो पूरी पढ़े क़स्त न करे ।

सवालः- मुक़ीम अगर मुसाफिर के पीछे नमाज़ पढ़े तो क्या करे ।

जवाबः- मुक़ीम अगर मुसाफिर के पीछे पढ़े तो इमाम के सलाम फेर देने के बाद अपनी बाक़ी दो रक्खतें पढ़े और उन रक्खतों में किराअत बिल्कुल न करे बल्कि सूरये फ़ातहा पढ़ने की मिक़दार चुप चाप खड़ा रहे ।

जुमा का व्यान

सवालः- जुमा की नमाज़ फ़र्ज़ है या वाजिब ।

जवाबः- जुमा की नमाज़ फ़र्ज़ है और उसकी फ़र्जीयत जुहर से ज्यादा मुअक्कद है ।

सवालः- जुमा फ़र्ज़ होने की कितनी शरतें हैं ?

जवाबः- जुमा फ़र्ज़ होने को निम्नलिखित ग्यारह (11) शर्तें हैं (1-2) शहर में मुक़ीम और आज़ाद होना इसलिए मुसाफ़िर और गुलाम पर जुमा फ़र्ज़ नहीं (3) सेहत यानी ऐसे मरीज़ पर कि जुमा मस्जिद तक न जा सके जुमा फ़र्ज़ नहीं (4-5-6) मर्द और आकिल बालिग होना यानी औरत, पागल, और नाबालिग पर जुमा फ़र्ज़ नहीं (7-8) अखियारा होना और चलने पर क़ादिर होना इसलिए अंधे, लुंजे, और फ़ालिज वाले पर कि जो मस्जिद तक न जा सकता हो जुमा फ़र्ज़ नहीं । (9) कैद में न होना मगर जबकि किसी (दिन) कर्ज़ की वजह से कैद किया गया हो और अदा करने पर क़ादिर हो तो फ़र्ज़ है (10) हाकिम या चोर वगैरा किसी ज़ालिम का ख़ौफ़ न होना (11) बारिश या आंधी वगैरा का इस कदर न होना कि जिससे नुक़सान का कोई अदेशा (सरक्त ख़तरा) न हो ।

सवालः- जिन लोगों पर जुमा फ़र्ज़ नहीं है अगर वह लोग जुमा में शारीक हो जाएं तो उनकी नमाज़ हो जाएगी या नहीं ।

जवाबः- हो जाएगी यानी जुहर की नमाज़ उनके ज़िम्मे से उत्तर जाएगी

सवालः- जुमा जाइज़ होने के लिए कितनी शर्तें हैं ।

जवाबः- जुमा जाइज़ होने के लिए छः (6) शर्तें हैं कि उनमें से अगर एक भी नहीं पाई गई तो जुमा होगा ही नहीं ।

सवालः- जुमा जाइज़ होने की पहली शर्त क्या है ।

जवाबः- जुमा जाइज़ होने की पहली शर्त मिस्र या फ़नाये मिस्र होना है।

सवालः- मिस्र और फ़नाये मिस्र किसे कहते हैं।

जवाबः- मिस्र वह जगह है कि जिसमें कई कूचे (गली) और बाज़ार हों और वह ज़िला या तहसील हो कि उसके मुतअल्लिक देहात गिने जाते हों। और मिस्र के आस पास की जगह जो मिस्र की मसलहतों के लिए हो उसे फ़नाए मिस्र कहते हैं जैसे स्टेशन कबरस्तान वगैरा।

सवालः- क्या गांव में जुमा की नमाज़ पढ़ना जाइज़ नहीं है।

जवाबः- नहीं। गांव में जुमा की नमाज़ पढ़ना जाइज़ नहीं लेकिन जहां कायम हो बन्द न किया जाए कि अवाम जिस तरह भी अल्लाह व रसूल का नाम ले ग़नीमत है (फ़तावा रज़वीया)

सवालः- गांव में जुमा की नमाज़ पढ़ने से उस दिन की जुहर नमाज़ साकित होती है या नहीं।

जवाबः- नहीं। गांव में जुमा की नमाज़ पढ़ने से उस दिन की जुहर की नमाज़ नहीं साकित होती।

सवालः- कुछ लोग गांव में जुमा पढ़ने के बाद चार रक्ऊत इहतियातु ज़जुहर पढ़ते हैं क्या यह सही है।

जवाबः- नहीं बल्कि गांव में इस के बजाय चार रक्ऊत जुहर फ़र्ज़ पढ़ना जरूरी है अगर नहीं पढ़ेगा तो गुनाहगार होगा।

सवालः- जुमा जाइज़ होने की दूसरी शर्त क्या हैं।

जवाबः- दूसरी शर्त यह है कि बादशाह या उसका नायब जुमा कायम करे। और अगर इस्लामी हुकूमत न हो तो सबसे बड़ा सुन्नी सही अकोदा रखने वाला आलिम काइम करे कि बगैर उसकी इजाजत के जुमा नहीं कायम हो सकता। और अगर यह भी न हो तो आम लोग जिस को इमाम बनाएं वह कायम करे।

सवालः- जुमा जाइज़ होने की तीसरी और चौथी शर्त क्या है।

जवाबः- तीसरी शर्त जुहर के वक्त का होना है इसलिए वक्त से पहले या बाद में पढ़ी न हुई या दरमियाने नमाज़ में अस्त्र का वक्त आ गया जुमा बातिल हो गया जुहर की क़ज़ा पढ़े। और चौथी शर्त यह है कि जुहर के वक्त में नमाज़ से पहले खुतबा हो जाये। **JANNATI KAUN?**

सवालः- जुमा के खुतबा में कितनी बातें सुन्नत हैं।

जवाबः- उन्नीस (19) बातें सुन्नत हैं खुतबा पढ़ने वाले का पाक होना, खड़े होकर खुतबा पढ़ना, खुतबा से पहले खुतबा पढ़ने वाले का बैठना खुतबा पढ़ने वाले का मिम्बर पर होना, और सुनने वालों की तरफ मुँह और क़िबला की तरफ पीठ होना, हाज़िर रहने वालों का खुतबा पढ़ने वाले की तरफ मुतवज्जेह होना, खुतबा से पहले अऊजु बिल्ला आहिस्ता पढ़ना, इतनी बुलन्द आवाज़ से खुतबा पढ़ना कि लोग सुनें। लफ़्ज़ अलहम्दु से शुरू करना, अल्लाह तआला की सना करना, अल्लाह तआला की बहदानीयत (इकताई) और हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम

की रिसालत की गवाही देना, हुजूर पर दुर्द भेजना, कम से कम एक आयत की तिलावत करना, पहले खुतबा में वाज व नसीहत होना, दूसरे में हम्द व सना, शहादत और दुर्द का इआदा करना, दूसरे में मुसलमानों के लिए दुआ करना, दोनों खुतबों का हत्का होना, और दोनों खुतबों के बीच तीन आयत की मिक़दार बैठना ।

सवाल:- उर्द में खुतबा पढ़ना कैसा है ।

जवाब:- अरबी के अलावा किसी दूसरी जवान में पूरा खुतबा पढ़ना या अरबी के साथ किसी दूसरी जवान को मिलाना दोनों बातें सुन्नते मुतावारिसा के खिलाफ़ और मकरुह हैं ।

सवाल:- खुतबा की अज्ञान इमाम के सामने मस्जिद के अन्दर पढ़ना सुन्नत है या बाहर ?

जवाब:- खुतबा की अज्ञान इमाम के समाने मस्जिद के बाहर पढ़ना सुन्नत है कि हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम और सहाब्यक्तिराम के जमाना में खुतबा पढ़ने वाले के सामने मस्जिद के दरवाज़ा ही पर हुआ करती थी जैसा कि हदीस की मशहूर किताब अबूदाऊद जिल्द अब्बल सफ़ा 162 में है कि हज़रते साइब यजीद रज़ियाल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है उन्होंने फ़रमाया कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम जुमा के रोज़ मिम्बर पर तशरीफ़ रखते तो हुजूर के सामने मस्जिद के दरवाजे पर अज्ञान होती और ऐसा ही हज़रते अबूबकर व उमर रज़ियल्लाहु अनहुमा के ज़माने में । इसी लिए फ़तावा क़ाज़ी खां, आलम गीरी, बहराइक़ और फ़तहु-ल क़दीर वगैरा

में मस्जिद के अन्दर अज्ञान देने को मना फ़रमाया और तहतावी अलामराकिल फ़लाह ने मकरूह लिखा ।

सवालः- जुमा जाइज़ होने की पांचवी और छठी शर्त क्या है ।

जवाबः- पांचवी शर्त जमाअत का होना है जिसके लिए इमाम के अलावा कम से कम तीन मर्द का होना जुरूरी है । और छठी शर्त इज़नेआम है इसका मतलब यह है कि मस्जिद का दरवाज़ा खोल दिया जाए ताकि जिस मुसलमान का जी चाहे आये किसी की रोक टोक न हो ।

ईद व बक़रईद का बधान

सवालः- ईद व बक़रईद की नमाज़ वाजिब है या सुन्नत ।

जवाबः- ईद व बक़रईद की नमाज़ वाजिब है मगर इनके वाजिब और जाइज़ होने की बही शर्तें हैं जो जुमा के लिए हैं, सिर्फ़ फ़र्क़ इतना है कि जुमा में खुतबा शर्त है और ईदेन में सुन्नत, दूसरा फ़र्क़ यह है कि जुमा का खुतबा नमाज़ से पहले है और ईदेन का खुतबा नमाज़ के बाद और तीसरा फ़र्क़ यह है कि ईदेन में अज्ञान व इक़ामत नहीं है सिर्फ़ दो बार “अस्सलातु जामिअह” कहने की इजाज़त है ।

सवालः- ईद व बक़रईद की नमाज़ का वक़्त कब से कब तक है ।

जवाबः- ईद व बक़रईद की नमाज़ का वक़्त एक नेज़ा आफ़ताब (सूरज) बुलन्द होने के बाद से ज़वाल के पहले तक है ।

सवालः- ईद की नमाज़ पढ़ने का तरीका क्या है।

जवाबः- पहले इस तरह नीयत करे। नीयत की मैंने दो रक्खत नमाज़ वाजिब ईदुलफ़ित्र या ईदुल अज़हा की छः तकबीरों के साथ अल्लाह तआला के लिए (मुक़्तदी इतना और कहे पीछे इस इमाम के) मुंह मेरा तरफ़ काबा शरीफ़ के फिर कानों तक हाथ उठाये और अल्लाहु अकबर कह कर हाथ बांध ले फिर सना पढ़े फिर कानों तक हाथ ले जाए और अल्लाहु अकबर कहता हुआ हाथ छोड़ दे। फिर हाथ उठाए और अल्लाहु अकबर कहता हुआ हाथ छोड़ दे फिर तीसरी बार हाथ उठाए और अल्लाहु अकबर कह कर हाथ बांध ले। इसके बाद इमाम आहिस्ता अऊजु बिल्लाह व बिसमिल्लाह पढ़कर बुलन्द आवाज़ से अलहम्दु के साथ कोई सूरत पढ़े फिर रुकू और सजदे से फ़ारिग़ होकर दूसरी रक्खत में पहले अलहम्दु के साथ कोई सूरत पढ़े फिर तीन बार कानों तक हाथ ले जाए और हर बार अल्लाहु अकबर कहे और किसी मर्तबा हाथ न बांधे और चौथी बार बगैर हाथ उठाये अल्लाहु अकबर कहता हुआ रुकू में जाए और बाकी नमाज़ दूसरी नमाज़ों की तरह पूरी करे। सलाम फेरने के बाद दो खुतबे इमाम पढ़े फिर दुआ मांगे खुतबये ऊला (पहला खुतबा) शुरू करने से पहले इमाम मिमबर पर खड़ा होकर 5 बार आहिस्ता अल्लाहु अकबर कहे कि यही सुन्नत है।

सवालः- ईदुल फ़ित्र के दिन कौन कौन से काम मुस्तहब हैं।

जवाबः- हजामत बनवाना, नाखुन तरशावाना, गुस्त करना,

मिस्वाक करना, अच्छे कपड़े पहनना, खुश्बू लगाना, सुबह की नमाज़ मुहल्ला की मस्जिद में पढ़ना, ईदगाह सवेरे जाना, नमाज़ से पहले सदक़ये फित्र अदा करना, ईदगाह तक पैदल जाना, दूसरे रास्ते से वापस आना, नमाज़ के लिए जाने से पहले ताक यानी तीन या पांच या सात खजूरें खा लेना और खजूरें न हों तो कोई मीठी चीज़ खाना, खुशी ज़ाहिर करना, आपस में मुबारकबाद देना और ईदगाह इत्मिनान व विकार के साथ नीचे निगाह किए हुए जाना । यह सब बातें ईदुलफित्र के दिन मुस्तहब हैं ।

सवाल:- ईदुल अज़हा के तमाम अहकाम ईदुलफित्र की तरह हैं या कुछ फ़र्क़ हैं ।

जवाब:- ईदुलफित्र की तरह हैं सिफ़ बाज़ बातों में फ़र्क़ है और वह यह हैं (1) ईदुलअज़हा में मुस्तहब यह है नमाज़ अदा करने से पहले कुछ न खाए अगरचे कुर्बानी न करनी हो और अगर खलिया तो कराहत नहीं (2) ईदुलअज़हा के दिन ईदगाह के रास्ता में बुलन्द आवाज़ से तकबीर कहता हुआ जाए (3) कुर्बानी करनी हो तो मुस्तहब यह है कि पहली से दसवीं ज़िलहिज्जा तक न हजामत बनवाये और न नाखुन तरशावाये (4) नवीं ज़िलहिज्जा की फ़ज़ द्वारा तेरहवीं की अस्त्र तक हर नमाज़े फ़र्ज़ पंजगाना के बाद जो जमाअत मुस्तहब्बा के साथ अदा की गई हो एक बार बुलन्द आवाज़ से तकबीर कहना वाजिब है और

तीन बार अफ़्ज़ूल । इसे तकबीरे तपशीक कहते हैं वह यह है ।
 “अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर लाइलाह इल्लल्लाहु वल्लाहु
 अकबर अल्लाहु अकबर व लिल्लाहिलहम्दु”

कुर्बानी का व्याख्यान

सवालः- कुर्बानी करना किस पर वाजिब है ।

जवाबः- कुर्बानी करना हर मालिके निसाब पर वाजिब है ।

सवालः- कुर्बानी का मालिके निसाब कौन है ।

जवाबः- कुर्बानी का मालिके निसाब वह शत्रुह है जो साढ़े बाबन (52 $\frac{1}{2}$) तोला चांदी या साढ़े सात (7 $\frac{1}{2}$) तोला सोना या उनमें से किसी एक की कीमत का सामाने तिजारत या सामाने गैरे तिजारत का मालिक हो या उनमें से किसी एक की कीमत भर के रूपया का मालिक हो और ममलूका (जो उसकी मिलकियत हो) चीजें हाजते असलीया से ज़ाइद हों ।

सवालः- मालिके निसाब पर अपने नाम से ज़िन्दगी में सिर्फ़ एक बार कुर्बानी करना वाजिब है या हर साल ।

जवाबः- अगर हर साल मालिके निसाब है तो हर साल अपने नाम से कुर्बानी करना वाजिब है और अगर दूसरे की तरफ़ से भी करना चाहिता हो तो उसके लिए दूसरी कुर्बानी का इन्तज़ाम करे ।

सवालः- कुर्बानी करने का तरीक़ा क्या है ।

जवाबः- कुबनी करने का तरीका यह है कि जानवर को बायें पहलू पर इस तरह लिटाए कि मुँह उसका क़िबला की तरफ़ हो और अपना दायां पांव उस के पहलू पर रख कर तेज़ छुरी लेकर यह दुआ पढ़े । “इन्नी वज्जहतु वजहिय लिल्लजी फ़तरस्स मावाति वल अरज़ हनीफ़ै व मा अना मिनल मुशरिकी न इन्न सलाती व नुसुकी व महयाय व ममाती लिल्लाहि रब्बिल आलमीन लाशारीक लहु व बिजालि क उमिरतु व अना मिनल मुस्लिमीन अल्लाहुम्म मिन क व ल क बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर” पढ़ कर ज़बह करे फिर यह दुआ पढ़े “अल्लाहुम्म तक़ब्बल मिन्नी कमा तक़ब्बल त मिन खलीलि क इब्राहीम अलैहिस्सातु वस्सलामु व हबीबि क मुहम्मदिन सललल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम” अगर दूसरे की तरफ़ से कुबनी करे तो “मिन्नी” के बजाय “मिन” कह कर उसका नाम ले ।

सवालः- साहिबे निसाब अगर किसी बजह से अपने नाम कुबनी न कर सका और कुबनी के दिन गुजर गए तो उसके लिए क्या हुक्म है ।

जवाबः- एक बकरी की कीमत उस पर सदका करना वाजिब है ।

अक़ीक़ा का बयान

सवालः- अक़ीक़ा किसे कहते हैं ।

जवाबः- बच्चा पैदा होने के शुक्रिया में जो जानवर ज़बह किया

जाता है उसे अकीका कहते हैं।

सवालः- किन जानवरों को अकीका में ज़बह किया जाता है।

जवाबः- जिन जानवरों को कुर्बानी में ज़बह किया जाता है।

उन्हीं जानवरों को अकीका में भी ज़बह किया जाता है।

सवालः- लड़का और लड़की के अकीका में कैसा जानवर मुनासिब है।

जवाबः- लड़का के अकीका में दो बकरा और लड़की के अकीका में एक बकरी ज़बह करना मुनासिब है। और लड़का के अकीका में बकरियां और लड़की में बकरा कियी जब भी हर्ज नहीं और पहुंचान न हो तो लड़का में एक बकरा भी ज़बह कर सकते हैं। और अकीका में बड़ा जानवर ज़बह किया जाए तो लड़का के लिए सात हिस्से में से दो हिस्से और लड़की के लिए एक हिस्सा काफ़ी है।

सवालः- अवाम में मशहूर है कि बच्चा के मां बाप, दादा, दादी और नाना नानी अकीका का गोश्त न खाएं क्या यह सही है।

जवाबः- ग़लत है। मां बाप, दादा दादी और नाना नानी वगैरा सब खा सकते हैं।

सवालः- अकीका के लिए कौन सा दिन बेहतर है।

जवाबः- अकीका के लिए बच्चा की पैदाइश का सातवां दिन बेहतर है और सातवें दिन न कर सकें तो जब चाहें करे सुन्नत अदा हो जाएगी।

सवाल:- लड़का के अकीका की क्या दुआ है ।

जवाब:- लड़का के अकीका की दुआ यह है “अल्लाहुम्म हाजिही अकीकतु इबनी फुलां (फुलां की जगह बेटे का नाम ले अगर दूसरे के बेटे का अकीका करे तो इबनी फुलां की जगह लड़का और उसके बाप का नाम ले) दमुहा बिदमिही व लह मुहा बिलह मिही व शहमुहा बिशहमिही व अजमुहा बिअज़ियाही व जिलदुआ बिजिलदिही व शअरुहा बिशअरिही अल्लाहुम्म जअल्हा फिदाअन लिइबनी फुलां (इस जगह भी फुलां की जगह बेटे का नाम ले । और अगर दूसरे के लड़के का अकीका करे तो लि के बाद उसका और उसके बाप का नाम ले) मिन्नारि व तक़बलहा मिन्हु कमा तक़बल तहा मिन नबीइकल मुस्तफा वहबीबिकल मुजतबा अलैहित तहीयतु वस्सना इन्न सलाती व नुसुकी व मह्याय व ममाती लिल्लाहि रब्बल आलमीन । ला शारीक लहू व बिजालि क उमिरतु व अना मिनल मुस्लमीन । अल्लाहुम्म मिन क व ल क बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर कह कर ज़बह करे ।

सवाल:- लड़की के अकीका की क्या दुआ है ।

जवाब:- लड़की के अकीका की दुआ यह है “अल्लाहुम्म हाजिही अकीकतु बिनती फुलां (फुलां की जगह अपनी बेटी का नाम लो । अगर दूसरे की लड़की का अकीका करे तो बिनती फुलां की जगह लड़की और उसके बाप का नाम ले) ”

दमुहा बिदमिहा व लह मुहा बिलह मिहा व शहमुहा बिशहमिहा व अज़मुहा बिअज़िमहा व जिलदुआ बिजिलहिदा व शअरुहा

बिशअरिहा । अल्लाहुम्मजअल्हा फिदाअन लिबिनती फुला । (इस जगह भी फुला की जगह बेटी का नाम ले । अगर दूसरे की लड़की का अकीका करे तो लि, के बाद लड़की और उसके बाप का नाम ले) मिन्नारि व तकब्बल्हा मिन्हा कमा तक़ब्बल्त्तहा मिन नबी इकलमुस्तफ़ा व हबीबिकलमुज्जिबा अलैहित्तहीयतु वस्सना इन्ना सलाती व नुसुकी व मह्याय व नमाति लिल्लाहि रब्बिल आलमीन । ला शारीक लहु व बिजालि क उमिरतु व अना मिनल मुसिलमीन अल्लाहुम्म मिन कव ल क बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर कह ज़बह करे ।

सवालः- अगर यह दुआ न पढ़े तो अकीका होगा या नहीं ।

जवाबः- अगर यह दुआ न पढ़े और अकीका की नीयत से बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर कह कर ज़बह कर दे तो भी अकीका हो जाएगा । (बहारे शारीअत)

नमाज़े जनाज़ा का व्याख्यान

सवालः- नमाज़े जनाज़ा फ़र्ज़ है या वाजिब ।

जवाबः- नमाज़े जनाज़ा फ़र्ज़ किफ़ाया है यानी अगर एक शरूस ने पढ़ली तो सब छुटकारा पा गए और अगर खबर हो जाने के बाद किसी ने पढ़ी तो सब गुनाहगार हुए ।

सवालः- जनाज़ा में कितनी चीज़े फ़र्ज़ हैं ।

जवाबः- दो चीज़े फ़र्ज़ हैं चार बार “अल्लाहु अकबर” कहना,

कियाम यानी खड़ा होना ।

सवालः- नमाज़े जनाज़ा में कितनी चीज़े सुन्नत हैं ।

जवाब:- नमाजे जनाज़ा में तीन चीज़ें सुन्नते मुअक्कदा हैं।
अल्लाह तआला की सना, हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम पर
दुर्घट, और मैइत के लिए दुआ।

सवालः- नमाजे जनाजा पढ़ने का तरीका क्या है ।

जवाब:- पहले नीयत करे। नीयत की मैंने नमाज़े जनाज़ा की चार तकबीरों के साथ अल्लाह तआला के लिए दुआ इस मैइत के लिए (मुक़्तदी इतना और कहे, पीछे इस इमाम के) मुंह मेरा तरफ़ काबा शरीफ़ के फिर कानों तक दोनों हाथ उठाकर अल्लाहु अकबर कहता हुआ हाथ वापस लाए और नाफ़ के नीचे बांध ले फिर यह सना पढ़े “सुब्हानَ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَبِسْمِ اللَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَاللَّهُ أَكْبَرُ وَلَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ” फिर बगैर हाथ उठाए अल्लाहु अकबर कहे और दुरुद इब्राहीमी पढ़े जो पांच वक़्त की नमाज़ में पढ़े जाते हैं। फिर बगैर हाथ उठाए अल्लाहु अकबर कहे और बालिग़ का जनाज़ा हो तो यह दुआ पढ़े। अल्लाहुम्ममग्फ़र लिहैयिना व मैयितिना व शहिदिना व ग़ाइबिना सगीरिना व कबीरिना व ज क रिना व उनसाना अल्लाहुम्म मन अहयैतहू मिन्ना फ़अह यही अलल्लामि व मन तवफ़ैतहू मिन्ना फ़तवफ़ैतहू अलल्लामान” इसके बाद चौथी तकबीर कहे फिर बगैर कोई दुआ पढ़े हाथ खेलकर सलाम फेर दे और नाबालिग़ बच्चे का जनाज़ा

हो तो यह दुआ पढ़ी जाए “अल्लाहुम्मज्जल्लु लना फ़रतौं वज्जल्लु लना अज्जौं व जर्बौं वज्जल्लु लना शफिओं व मुशफ़क़आ” और अगर नाबालिग़ लड़की का जनाज़ा हो तो यह दुआ पढ़े। “अल्लाहुम्मज्जल्लहा लना फ़रतौं वज्जल्लहा लना अज्जौं व जुर्बौं वज्जल्लहा लना शा फिअतौं व मुशफ़क़अत् ।”

सवालः- अख या फज्ज की नमाज़ के बाद जनाज़ा पढ़ना कैसा है।

जवाबः- जाइज़ है और यह जो अवाम में मशहूर है कि नहीं जाइज़ है ग़लत है।

सवालः- क्या सूरज निकलने, झूबने और ज़वाल के वक्त नमाज़ जनाज़ा पढ़ना मकरूह है।

जवाबः- जनाज़ा अगर उन्हीं वक्तों में लाया गया तो नमाज़ उन्हीं वक्तों में पढ़े कोई कराहत नहीं कराहत उस सूरत में है कि पहले से तैयार मौजूद है और देर की यहां तक कि वक्ते कराहत आ गया (बहारे शरीअत, आलमगीरी)

ज़कात का व्यान

सवालः- ज़कात फ़र्ज़ है या वाजिब।

जवाबः- ज़कात फ़र्ज़ है। उसकी फ़रज़ीयत का इन्कार करने वाला काफ़िर और न अदा करने वाला फ़ासिक़ और अदायगी में देर करने वाला गुनाहगार मरदूदश्शहादत हैं। (गवाही न देने

के योग) (बहारे शरीअत)

सवाल:- ज़कात फ़र्ज़ होने की शर्तें क्या हैं।

जवाब:- चन्द शर्तें हैं। मुसलमान आक़िल बालिग़ होना, माल बक़दरे निसाब का पूरे तौर पर मिलकियत में होना, निसाब का हाजते अस्लीया और किसी के बकाया से फ़ारिग़ होना, मालेतिजारत या सोना चांदी होना और माल पर पूरा साल गुज़र जाना।

सवाल:- सोना चांदी का निसाब क्या है और उनमें कितनी ज़कात फ़र्ज़ है।

जवाब:- सोने का निसाब साढ़े सात तोला है जिसमें चालीसवां हिस्सा यानी सवा दो माझा ज़कात फ़र्ज़ है। और चांदी का निसाब साढ़े बावन तोला है जिस में एक तोला तीन माझा छ़रत्ती ज़कात फ़र्ज़ है। सोना चांदी के बजाय बाज़ार भाव से उनकी कीमत लगा कर रूपया बगैरा देना भी जाइज़ है।

सवाल:- क्या सोना चांदी के ज़ेवरात में भी ज़कात वाजिब होती है।

जवाब:- हाँ सोना चांदी के ज़ेवरात भी ज़कात वाजिब होती है।

सवाल:- तिजारती माल का निसाब क्या है।

जवाब:- तिजारती माल की कीमत लगाई जाए फिर उससे सोना चांदी का निसाब पूरा हो तो उसके हिसाब से ज़कात

निकाली जाए ।

सवालः- कम से कम कितने रुपये हों कि जिन पर ज़कात वाजिब होती है ।

जवाबः- अगर सोना चाँदी न हो और न माले तिजारत हो तो कम से कम इतने रुपये हों कि बाज़ार में साढ़े बावन तोला चाँदी या साढ़े सात जोला सोना खरीदा जा सके तो उन रुपयों की ज़कात वाजिब होती है ।

सवालः- हाजते अस्लीया किसे कहते हैं

जवाबः- ज़िन्दगी बसर करने के लिए जिस चीज़ की ज़रूरत होती है जैसे जाड़े और गर्भियों में पहनने के कपड़े, खानादरी के सामान, पेशावरों के औजार और सवारी के लिए साईकिल और मोटर बगैरा यह सब हाजते अस्लीया में से हैं इनमें ज़कात वाजिब नहीं ।

सवालः- निसाब का दैन से फ़ारिग़ होने का क्या मतलब है ।

जवाबः- इसका मतलब यह है कि मालिके निसाब पर किसी का बाक़ी न हो या इतना हो कि अगर बाक़ी अदा कर दे तो भी निसाब बचा रहे तो इस सूरत में ज़कात वाजिब है और अगर बाक़ी इतना हो कि अदा कर दे तो निसाब न रहे तो इस सूरत में ज़कात वाजिब नहीं ।

सवालः- माल पर पूरा साल गुज़र जाने का क्या मतलब है ।

जवाबः- इसका मतलब यह है कि हाजते अस्लीया से जिस

तारीख को पूरा निसाब बच गया उस तारीख से निसाब का साल शुरू हो गया फिर साले आइन्दा अगर उसी तारीख को पूरा निसाब पाया गया तो ज़कात देना वाजिब है। अगर दरमियाने साल में निसाब की कमी हो गयी तो यह कमी कुछ असर न करेगी।

उश्श का बयान

सवाल:- किन चीजों की पैदावार में उश्श वाजिब है।

जवाब:- गेहूं, जौ, ज्वार, बाजरा, धान और हर किस्म के ग़ल्ले और अल्सी, कुसुम, अखरोट, बादाम और हर किस्म के मेवे, रुई, फूल, गन्ना, खरबूज़ा, तरबूज़, खीरा, ककड़ी, बैगन और हर किस्म की तरकारी सब में उश्श वाजिब है। थोड़ा पैदा हो या ज्यादा।

सवाल:- किन सूरतों में दसवां हिस्सा और किन सूरतों में बीसवां हिस्सा वाजिब होता है।

जवाब:- जो पैदावार बारिश या ज़मीन की नमी से हो उसमें दसवां हिस्सा वाजिब होता है और जो पैदावार चरसे डोल, पम्पिंग मशीन या ट्यूबविल वगैरा के पानी से हो या खरीदे हुए पानी से हो उसमें बीसवां हिस्सा वाजिब होता है।

सवाल:- क्या खेती के अखराजात (खर्च) हल बैल और काम करने वालों की मज़दूरी निकाल कर दसवां बीसवां वाजिब होता

है ?

जवाब:- नहीं । बल्कि पूरी पैदावार का दसवां बीसवां वाजिब होता है ।

सवाल:- गौरमिन्ट को जो माल गुज़ारी दी जाती है वह उश्श की रक़म से मुजरा की जाएगी या नहीं ?

जवाब:- वह रक़म उश्श से मुजरा नहीं की जाएगी ।

सवाल:- ज़मीन अगर बटाई पर दी तो उश्श किस पर वाजिब है ?

जवाब:- ज़मीन अगर बटाई पर दी तो उश्श दोनों पर वाजिब है ।

ज़कात का माल किन लोगों पर खर्च किया जाए ।

सवाल:- ज़कात और उश्श का माल किन लोगों को दिया जाता है ?

जवाब:- जिन लोगों को दिया जाता है उनमें से कुछ यह हैं
 (1) फ़कीर यानी वह शरूस कि जिसके पास कुछ माल है लेकिन निसाब भर नहीं (2) मिसकीन यानी वह शरूस कि जिसके पास खाने के लिए ग़लता और बदन छिपाने के लिए कपड़ा भी न हो (3) कर्जदार यानी वह शरूस कि जिसके ज़िम्मा कर्ज़ हो और

उसके पास क़र्ज़ से फ़ाज़िल कोई माल बक़दरे निसाब न हो (4) मुसाफिर जिसके पास सफ़र की हालत में माल न रहा उसे ज़रूरत भर को ज़कात देना जाइज़ है ।

सवाल:- किन लोगों को ज़कात देना जाइज़ नहीं ?

जवाब:- जिन लोगों को ज़कात देना जाइज़ नहीं उनमें से कुछ यह हैं (1) मालदार यानी वह शारूस जो मालिके निसाब हो (2) बनी हाशिम यानी हज़रते अली, हज़रते जाफ़र, हज़रते अकील और हज़रते अब्बास व हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब की औलाद को देना जाइज़ नहीं (3) अपनी नस्ल और फ़रा यानी मां, बाप, दादा दादी, नाना नानी वगैरहुम और बेटा, बेटी, पोता, पोती, नवासा नवासी को ज़कात देना जाइज़ नहीं । (4) औरत अपने शौहर को और शौहर अपनी औरत को अगरचे तलाक़ दे दी हो जब तक की इहत में हो ज़कात नहीं दे सकता (5) मालदार मर्द के नाबालिग़ बच्चे को ज़कात नहीं दे सकता और मालदार की बालिग औलाद को जबकि मालिके निसाब न हो दे सकता है । (6) वहाबी या किसी दूसरे मुरतद बद मज़हब और काफ़िर को ज़कात देना जाइज़ नहीं ।

सवाल:- सैयद को ज़कात देना जाइज़ है या नहीं ?

जवाब:- सैयद को ज़कात देना जाइज़ नहीं इसलिए कि वह भी बनी हाशिम में से हैं ।

सवाल:- ज़कात का पैसा मस्जिद में लगाना जाइज़ है या नहीं ?

जवाबः- ज़कात का माल मस्जिद में लगाना, मदरसा तामीर करना या उससे मैयित को कफ़न देना या कुआं बनवाना जाइज़ नहीं यानी अगर इन चीज़ों में ज़कात का माल खर्च करेगा तो ज़कात अदा न होगी (बहारे शरीअत)

सवालः- कुछ लोग अपने आप को खानदानी फ़कीर कहते हैं उनको ज़कात और ग़ल्ला का उश्श देना जाइज़ है या नहीं ?

जवाबः- अगर वह लोग साहिबे निसाब हों तो उन्हें ज़कात और उश्श देना जाइज़ नहीं ।

सवालः- किन लोगों को ज़कात देना अफ़ज़ल है ?

जवाबः- ज़कात और सदक़ात में अफ़ज़ल यह है कि पहले अपने भाई बहनों को दे फिर उनकी औलाद को फिर चचा और फूफियों को फिर उनकी औलाद को फिर मासू और खाला को फिर उनकी औलाद को फिर दूसरे रिस्तादारों को फिर पड़ोसियों को फिर अपने पेशा वालों को फिर अपने शहर या गांव के रहने वालों को । और ऐस तालिबे इल्म को भी ज़कात देना अफ़ज़ल है जो इल्मेदीन हासिल कर रहा हो बशर्ते कि यह लोग मालिके निसाब न हों ।

सदक़ये फ़िन्न का बयान

सवालः- सदक़ये फ़िन्न देना किस पर वाजिब होता है ?

जवाबः- हर मालिके निसाब पर अपनी तरफ़ से और अपनी

हर नाबालिग् औलाद की तरफ से एक एक सदक्ये फ़ित्र देना ईदुल फ़ित्र के दिन वाजिब होता है।

सवाल:- सदक्ये फ़ित्र की मिक़दार क्या है ?

जवाब:- सदक्ये फ़ित्र की मिक़दार यह है कि गेंहूं या उसका आटा आधा साअ दें। और खजूर, मुनक्क़ा या जौ या उस का आटा एक साअ दें और अगर इन चारों के अलावा कोई दूसरा मूल्ला बगैरा देना चाहें तो कीमत का लिहाज़ करना यानी उस चीज़ का आधे साअ गेंहूं या एक साअ जौ की कीमत का होना ज़रूरी है।

सवाल:- साअ कितनी मिक़दार का होता है ?

जवाब:- आला दर्जा की तहकीक़ और इहतियात यह है कि साअ का वज़न तीन सौ इक्कयावन (35) रुपया भर होता है और आधा साअ एक सौ पच्चहत्तर (175) रुपये अठन्नी भर ऊपर।

सवाल:- नए वज़न से साअ कितने का होता है ?

जवाब:- नए वज़न से एक साअ चार किलो और तक़रीबन 94 ग्राम होता है। और आधा साअ दो किलो तक़रीबन 47 ग्राम का होता है।

सवाल:- अगर गेंहूं या जौ देने की बजाय उनकी कीमत दी जायेतो क्या हुक्म है।

जवाब:- गेंहूं या जौ देने के बजाय उनकी कीमत देना अफ़ज़ल है।

सवालः- सदक़्ये फ़ित्र किन लोगों को देना जाइज़ है ?

जवाबः- जिन लोगों को ज़कात देना जाइज़ है उनको सदक़्ये फ़ित्र भी देना जाइज़ है और जिन लोगों को ज़कात देना जाइज़ नहीं उनको सदक़्ये फ़ित्र भी देना जाइज़ नहीं ।

रोज़ा का बयान

सवालः- रोज़ा किसे कहते हैं ?

जवाबः- सुबह सादिक़ से गुरुबे आफ़ताब (सूर्य अस्त) तक नीयत के साथ खाने, पीने और जिमा (संभोग) से रुकने का नाम रोज़ा है ।

सवालः- रमज़ान शरीफ के रोजे किन लोगों पर फ़र्ज हैं ?

जवाबः- रमज़ान शरीफ के रोजे हर मुसलमान आकिल बालिग मर्द और औरत पर फ़र्ज हैं । उनकी फ़रज़ीयत का इन्कार करने वाला काफ़िर और बिला उज़्ज़ छोड़ने वाला सख्त गुनाहगार और फ़ासिक़ मरदूदुश्शहादत है । और बच्चा की उम्र जब दस साल हो जाये और उसमें रोज़ा रखने की ताक़त हो तो उस से रोज़ा रखवाया जाए और न रखे तो मार कर रखवायें ।

सवालः- किन सूरतों में रोज़ा न रखने की इजाज़त है ?

जवाबः- जिन सूरतों में रोज़ा न रखने की इजाज़त है उनमें से बाज़ यह हैं (1) सफ़र यानी तीन दिन की राह के इरादा से बाहर निकलना लेकिन अगर सफ़र में मशक्कत न हो तो रोज़ा रखना अफ़ज़ल है । (2.3) हामिला और दूध पिलाने वाली औरत को अपनी जान या बच्चा का सही अदेशा हो तो इस

हालत में रोज़ा न रखने की इजाज़त है (4) मर्ज़ यानी मरोज़ को मर्ज़ बढ़ जाने या देर में अच्छा होने या दन्दुरुस्त को बीमार हो जाने का गालिब गुमान हो तो उस दिन रोज़ा न रखना जाइज़ है (5) शैख़े फ़ानी यानी वह बूढ़ा कि न अब रोज़ा रख सकता है और न आइन्दा उसमें इतनी ताक़त आने की उम्मीद है कि रख सकेगा तो उसे रोज़ा न रखने की इजाज़त है। और हैज़ व निफ़ास की हालतों में रोज़ा रखना जाइज़ नहीं।

सवालः- क्या ऊपर व्यान किए हुए लोगों को बाद में रोज़ा की क़ज़ा करना फ़र्ज़ हैं।

जवाबः- हाँ उज़ खत्म हो जाने के बाद सब लोगों को रोज़ा की क़ज़ा करना फ़र्ज़ है और शैख़े फ़ानी अगर जाड़ों में क़ज़ा रख सकता है तो रखे वर्ता हर रोज़ा के बदले दोनों वक़्त एक मिस्कीन को पेट भर खाना खिलाए या हर रोज़ा के बदले सदक़ए फ़ित्र की मिक़दार मिस्कीन को दे दे।

सवालः- जिन लोगों को रोज़ा न रखने की इजाज़त है क्या वह किसी चीज़ को अलानियह खा पी सकते हैं।

जवाबः- नहीं। उन्हें भी अलानियह किसी चीज़ को खाने पीने की इजाज़त नहीं।

सवालः- रमज़ान के रोज़े की नीयत किस तरह की जाती है।

जवाबः- नीयत दिल के इरादा का नाम है मगर जुबान से कह लेना मुस्तहब है अगर रात में नीयत करे तो यूँ कहे नवैतु अन असू म ग़दन लिल्लाहि तआला मिन फ़ रज़ि र म ज़ा न और

दिन में नीयत करे तो यूं कहे नवैतु अन असू म हाजल यौम
लिल्लाहि तआला मिन फ़ र ज़ि र म जा न।

सवालः- रोज़ा इफ़तार करने के वक़्त कौन सी दुआ पढ़ी जाती है।

जवाबः- यह दुआ पढ़ी जाती है। अल्लाहुम्म लक सुम्तु व बि
क आमन्तु व अलै क तबक्कलतु व अला रिज़कि क अफ़तरतु
फ़गफिरली मा क़द्दम्तु व मा अख्बररतु।

रोज़ा तोड़ने और न तोड़ने वाली चीज़ों का व्यान

सवालः- किन चीज़ों से रोज़ा दूट जाता है ?

जवाबः- खाने पीने से रोज़ा दूट जाता है जबकि रोज़ादार होना
याद हो और हुक्का बोड़ी सिगरेट वगैरा पीने और पान या सिर्फ़
तम्बाकू खाने से भी बशर्ते कि याद हो रोज़ा जाता रहता है।
कुल्ली करने में बिला इरादा पानी हल्क से उतर गया या नाक
में पानी चढ़ाया और दिमाग् तक चढ़ गया या कान में तेल
टपकाया या नाक में दवा चढ़ाई अगर रोज़ादार होना याद है
तो रोज़ा दूट गया वर्ना नहीं। क़सदन (जान बूझकर) मुँह भर
कै की और रोज़ादार होना याद है तो रोज़ा जाता रहा। और
मुँह भर न हो तो नहीं। और अगर बिला इरिक्तियार कै हो और
मुँह भर न हो तो रोज़ा गया और अगर मुँह भर हो तो लौटाने
की सूरत में जाता रहा वर्ना नहीं (बहारे शरीअत)

सवालः- किन चीजों से रोज़ा नहीं दूटता ।

जवाबः- भूलकर खाने पीने से रोज़ा नहीं दूटता, तेल या सुर्मा लगाने और मक्खी, धुंवा या आटे बगैरा का गुबार (गर्दा) हल्क में जाने से रोज़ा नहीं जाता, कुल्ली की और पानी बिल्कुल उगल दिया सिर्फ कुछ तरी मुंह में बाकी रह गयी थी यूक के साथ उसे निगल गया या कान में पानी चला गया या खंकार मुंह में आया और खा गया अगर चे कितना ही हो रोज़ा न जायेगा । इहतिलाम (स्वप्नदोष) हुआ या ग़ीबत (चुगली) की तो रोज़ा न गया अगर चे ग़ीबत सख्त कबीरा (बड़ा) गुनाह है । और जनाबत (नापाकी) की हालत में सुबह की बल्कि अगर चे सारे दिन जुनुब (नापाक) रहा रोज़ा न गया । मगर इतनी देर तक जान बूझकर गुस्ता न करना कि नमाज़ करा हो जाए गुनाह और हराम है ।

रोज़ा के मकरूहात

सवालः- किन चीजों से रोज़ा मकरूह हो जाता है ।

जवाबः- झूट, ग़ीबत, चुगली, गाली देने, बेहूदा बात करने और किसी को तकलीफ देने से रोज़ा मकरूह हो जाता है ।

सवालः- क्या रोज़ादार को कुल्ली करने के लिए मुंह भर पानी लेना मकरूह है ।

जवाबः- हाँ रोज़ादार को कुल्ली करने के लिए मुंह भर पानी

लेना मकरूह है।

सवालः- क्या रोज़ा की हालत में खुशबू सूधना, तेल मालिश करना और सुर्मा लगाना मकरूह है।

जवाबः- नहीं रोज़ा की हालत में खुशबू सूधना, तेल मालिश करना और सुर्मा लगाना मकरूह नहीं। मगर मर्दों को जीनत के लिए सुर्मा लगाना हमेशा मकरूह है और रोज़ा की हालत में बदरजए औला (ज़रूर) मकरूह है। (बहारे शरीअत दुर्मुखतार)

सवालः- क्या रोज़ा में मिसवाक करना मकरूह है।

जवाबः- नहीं। रोज़ा में मिसवाक करना मकरूह नहीं बल्कि जैसे और दिनों में मिसवाक करना सुन्नत है वैसे ही रोज़ा में भी मिसवाक करना मसनून है। चाहे मिसवाक खुशक हो या तर (गीली) और ज़वाल से पहले करे या बाद में किसी बदूत मकरूह नहीं।

निकाह का व्यान

सवालः- निकाह करना कैसा है।

जवाबः- जो शर्क्स नान व नफ़क़ा की कुदरत रखत हो अगर उसे यक़ीन हो कि निकाह नहीं करेगा तो गुनाह में मुब्तिला हो जाएगा तो ऐसे शर्क्स को निकाह करना फ़र्ज़ है। और अगर गुनाहगार का यक़ीन नहीं बल्कि सिर्फ़ ख़तरा है तो निकाह करना

वाजिब है। और शहवत(लालसा) का बहुत ज्यादा ग़लबा न हो तो निकाह करना सुन्नते मुअक्कदा है। और अगर इस बात का खतरा है कि निकाह करेगा तो नान व नफ़क़ा न दे सकेगा या निकाह के बाद जो फ़राइज़ मुतअल्लिक़ा हैं उन्हें पूरा न कर सकेगा तो निकाह करना मकरूह है। और इन बातों का खतरा ही नहीं बल्कि यक़ीन हो तो निकाह करना हराम है (इस मुख्तार, बहारे शारीअत)

सवालः- किन औरतों से निकाह करना हराम है।

जवाबः- माँ, बेटी, बहिन, फूफी, खाला, भतीजी, भाजी, दूध पिलाने वाली माँ, दूध शारीकी बहिन, सास, मदखूला बीबी की बेटी, नसबी बेटा की बीबी, दो बहनों को इकट्ठा करना, शौहर वाली औरत, काफ़िर स्त्रीया और मुरतहा वहाबीया इन सब से निकाह हराम है। इस मसला की मज़ीद तफ़सील बहारे शारीअत बगैरा से मालूम करें।

सवालः- अगर लड़की-लड़का नाबालिग हों तो निकाह कैसे होगा।

जवाबः- अगर नाबालिग हों तो उनके बली की इजाज़त से होगा।

सवालः- बली होने का हक़ किसको है।

जवाबः- अगर औरत मजनून (पागल) है और बेटे वाली है तो उस के बेटे को बली होने का हक़ है। फिर उस के पोता पर

पोता वगैरा को । अगर यह न हों या जिसका निकाह है वह नाबालिग हो तो बाप वाली होगा । अगर यह न हो तो दादा फिर परदादा वगैरहुम । फिर हकीकी भाई । फिर सौतेला भाई फिर हकीकी भाई का बेटा फिर सौतेले भाई का बेटा । फिर हकीकी चचा फिर सौतेला चचा । फिर हकीकी चच का बेटा फिर सौतेला चचा का बेटा । फिर बाप का हकीकी चचा फिर सौतेले चचा का बेटा । खुलासा यह कि उस खानदान में सब से ज्यादा करीब का रिश्तेदार जो मर्द हो वही वली होगा । और अगर यह सब न हों तो माँ वली हैं । फिर दादो फिर नानी फिर बेटी फिर पोती वगैरा फिर नाना ।

JANNATI KAUN?

निकाह पढ़ने का तरीका

सवाल:- निकाह पढ़ने का तरीका क्या है ।

जवाब:- निकाह पढ़ने का बेहतर तरीका यह है कि दुल्हन अगर बालिग हो तो निकाह पढ़ने वाला दुल्हन से वर्णा उसके वली से इजाज़त लेकर मजिलसे निकाह में आये । दूल्हा को पांचों कलिमे या कलिमये तथ्यिबा और ईमाने मुजमल व मुफ़स्सल पढ़ाये फिर खड़े होकर खुतबये निकाह पढ़े और बैठ कर पढ़ना भी जाइज़ है । फिर दूल्हा की तरफ़ मुखातिब हो कर यूँ कहे कि मैंने बहैसियत बकील फुलां बिन्ते फुलां (जैसे हिन्दा बिन्ते

जैद) को इतने महर के बदले आपके निकाह में दिया क्या आपे ने कुबूल किया । जब दूल्हा कबूल कर ले तो निकाह पढ़ने वाला दूल्हा दुल्हन के दरमियान उल्फ़त व महब्बत की दुआ करे ।

तलाक़ का व्यान

सवालः- तलाक़ किसे कहते हैं ।

जवाबः- औरत निकाह से शौहर की पाबन्द हो जाती है उस पाबन्दी के उठा देने को तलाक़ कहते हैं ।

सवालः- तलाक़ देना कैसा है ।

जवाबः- तलाक़ देना जाइज़ है लेकिन बगैर वजहे शरयी मना है । और वजहे शरयी हो तो तलाक़ देना मुबाह है बल्कि अगर औरत शौहर को या दूसरों को तकलीफ़ देती हो या नमाज़ न पढ़ती हो तो तलाक़ देना मुस्तहब है । और अगर शौहर नामद हो या उस पर किसी ने जादू कर दिया हो कि हमविस्तरी (सम्भोग) नहीं कर पाता और उसके दूर करने की भी कोई सूरत नज़र नहीं आती तो इन सूरतों में तलाक़ देना वाजिब है । अगर तलाक़ नहीं दी तो गुनाहगार होगा । (दुर्भुखतार, बहारे शरीअत)

सवालः- तलाक़ देने का बेहतरीन तरीक़ा क्या है ।

जवाबः- तलाक़ देने का बेहतरीन तरीक़ा यह है कि जिस तुहर में हमविस्तरी (सम्भोग) न की हो उसमें एक तलाक रजयी दे

और औरत के करीब न जाए यहां तक कि इदत गुजर जाए । और एक तलाके बाइन दे तो भी जाइज़ है और आगर औरत मदखूला हो यानी शौहर उससे हमविस्तरी (सम्भोग) कर चुका हो तो तीन तलाक न दे कि इस सूरत में बगैर हलाला दोबारा निकाह न होगा । और आगर शौहर ने उससे हमविस्तरी नहीं की है तो इन लफ़ज़ों के साथ तलाक न दे कि मैंने उसे तीन तलाक दी या तलाके मुग़ल्ला दी कि इस सूरत में वह भी बगैर हलाला तलाक देने वाले के लिए हलाल न होगी ।

इदत का व्याख्यान

सवाल:- इदत कितने दिन की होती है ।

जवाब:- बेवह (विधवा) औरत आगर हामिला हो तो उसकी इदत बच्चा पैदा होना है और आगर हामिला न हो तो उसकी इदत चार महीने दस दिन है । और तलाक वाली औरत आगर हामिला हो तो उसकी इदत भी बच्चा जनना है । और तलाक वाली औरत आगर आइसा यानी पचपन साला या नाबालिग हो तो उसकी इदत तीन माह है । और तलाक वाली औरत आगर हामिला, नाबालिग या पचपन साला न हो यानी हैज़ वाली हो तो उसकी इदत तीन हैज़ है । चाहे यह तीन हैज़ तीन माह या तीन साल या उससे ज्यादा में आये ।

नोट:- (1) तलाक वाली गैर मदखूला औरत यानी जिससे

शैहर ने हमविसतरी नहीं की है उसके लिए कोई इदत नहीं (2) अवाम में जो मशहूर है कि तलाक वाली औरत की इदत तीन महीने तेरह दिन है तो यह बिल्कुल ग़लत और बे बुनियाद है। जिसकी शरीअत में कोई अस्ल नहीं।

खाने का बयान

सवाल:- खाना खाने से पहले और बाद में दोनों हाथ ग़द्दों तक धोए। सिर्फ़ एक हाथ या सिर्फ़ उंगलियां न धोए कि सुन्नत अदा न होगी। खाने से पहले हाथ धोकर पोंछना मना है और खाने के बाद हाथ धोकर पोंछ ले कि खाने का असर बाकी न रहे बिस्मिल्लाह पढ़ कर खाना शुरू करें अगर शुरू में बिस्मिल्लाह पढ़ना भूल जाये तो जब याद आये यह दुआ पढ़े। “बिस्मिल्लाहि फ़ी अब्बलिही व आखिरिही” रोटी पर कोई चीज़ न रखी जाए और हाथ रोटी से न पोंछें। नंगे सर खाना अदब के खिलाफ़ है। खाना दाहिने हाथ से खायें बायें हाथ से खाना शैतान का काम है। खाने के बक़्त बायां पांव बिछा दें और दाहिना खड़ा रखें या सुरीन (पुट्ठा) पर बैठे और दोनों घुटने खड़े रखें। खाने के बक़्त बातें करता रहे। बिल्कुल चुपचाप रहना मजूसियों का तरीक़ा है मगर बुरी बातें न बके बल्कि अच्छी बातें करें। खाने के बाद उंगलियां चाट ले और बर्तन को भी उंगलियों से पोंछ कर चाट ले। खाने की शुरूआत नमक से की जाए और खत्म

भी उसी पर करे कि उस से बहुत सी बीमारियां खत्म हो जाती हैं। खाने के बाद यह दुआ पढ़े।

अलहम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अत अम ना व सकाना व कफ़ाना व
ज अ लना मिनल मुस्लिमीन।

पीने का बयान

पानी बिस्मिल्लाह पढ़ कर दाहिने हाथ से पीये। बायें हाथ से पीना शैतान का काम है और तीन सांस में पीये हर मर्तबा बर्तन को मुंह से हटा कर सांस ले। पहली और दूसरी मर्तबा एक एक धूंट पिये और तीसरी सांस में जितना चाहे पी डाले खड़े होकर पानी हरगिज़ न पीये। हदीस शारीफ़ में है कि जो शर्क्स भूलकर ऐसा कर डाले वह कै कर दे और पानी को चूस कर पीये ग़ट ग़ट ग़ट बड़े धूंट न पीये जब पी चुके तो अलहम्दु लिल्लाह कहे। पीने के बाद गिलास बगैरा का बचा हुआ पानी फेंकना इसराफ़ व गुनाह है। सुराही में मुंह लगाकर पानी पीना मना है इसी तर लोटे की टोंटी से भी पानी पीना मना है मगर जब कि देख लिया हो कि उनमें कोई चीज़ नहीं है तो हर्ज नहीं।

लिबास (पहनावा) का बयान

इतना लिबास ज़रूर पहनें कि जिसे से सत्रे औरत हो जाये। औरतें बहुत बारीक और चुस्त कपड़ा हरगिज़ न पहनें कि जिससे

बदन के हिस्से ज़ाहिर हों कि औरतों को ऐसा कपड़ा पहनना हराम है और मर्द भी पाजामा या तहबन्द इतना हल्का न पहनें कि जिस से बदन की रंगत झलके और सतर (झुपाव) न हो कि मर्दों को भी ऐसा पाजामा व तहबन्द पहनना हराम है। और धोती न पहनें कि धोती पहनना हिन्दुओं का तरीका है और उससे सतर भी नहीं होता कि चलने में रान का पिछला हिस्सा खुल जाता है। मुसलमानों को इस से बचना ज़रूरी है। और नैकर जाधिया हरगिज़ न पहनें कि हराम है। लेकिन तहबन्द वगैरा के नीचे पहनें तो कोई हर्ज नहीं।

ज़ीनत (सिंगार) का व्यान

मर्दों को सोने की अंगूठी पहनना हराम है और चांदी की सिर्फ़ एक अंगूठी एक नग वाली जो वज़न में साढ़े चार माशा से कम हो पहन सकते हैं। और कई अंगूठी या एक अंगूठी या कई नग वाली या छल्ले नहीं पहन सकते कि नाजाइज़ हैं और औरतें सोना चांदी की हर किस्म की अंगूठियां और छल्ले पहन सकती हैं लेकिन दूसरी धातों की अंगूठियां जैसे तांबा, पीतल, लोहा और जस्ता वगैरा तो यह मर्द व औरत दोनों के लिए नाजाइज़ हैं। लड़कियों को सोने चांदी के ज़ेवर पहनाना जाइज़ है। लड़कों को हराम है पहनाने वाले गुनाहगार होंगे। इसी तरह लड़कियों के हाथ पांव में मेंहदी लगाना जाइज़ है और लड़कों के हाथ

पांव में जीनत के लिए मेंहदी लगाना नाजाइज़ है ।

सोने का बयान

मुस्तहब यह है कि बावजूँ सोये और कुछ देर दाहिनी करवट पर दाहिने हाथ को रुख़सार (गाल) के नीचे रख कर किंबला की तरफ़ मुँह करके सोये फिर उसके बाद बायें करवट पर । पेट के बल न लेटे हदीस शारीफ़ में है कि इस तरह लेटने को अल्लाहतआला पसन्द नहीं फ़रमाता । और पांव पर पांव रखना मना है जब कि चित लेटा हो और यह उस सूरत में है जबकि तहबन्द पहने हो और एक पांव खड़ा हो कि इस तरह बेस्तरी (बिपरदगी) का अदेशा (ख़तरा) है । और ऐसी छत पर सोना मना है कि जिस पर चिरने से कोई रोक न हो और लड़का जब दस साल का हो जाए तो अपनी मां या बहन दगैरा के साथ न सुलाया जाए । बर्तिक इस उम्र का लड़का इतने बड़े लड़कों या मह़ों के साथ भी न सोये । और दिन के शुरू हिस्सा में सोना या मगरिब व इशां के दरमियान सोना मुक़ब्लह है । और हमारे भुल्क (दिश) में उत्तर जानिब पांव फैला कर सोना बिला शुबहा जाइज़ है । उसे नाजाइज़ समझना गलती है । और जब सो कर उठे तो यह दुआ पढ़े ।

“अल्लाहमु लिल्लाहिलज़ी अहयाना बाद मा अमा त ना व दलैहि त्तुशूर”

फ़ातिहा का आसान तरीक़ा

पहले तीन या पांच या सात बार दुर्लद शरीफ़ पढ़े फिर कम से कम चारों कुल, सूरए फ़ातिहा और अलिफ़ लाम्मीम से मुफ़्लिहून तक पढ़े फिर आखिर में तीन या पांच या सात बार दुर्लद शरीफ़ पढ़े और बारगाहे इलाही में हाथ उठा कर यूं दुआ करे या अल्लाह हमने जो कुछ दुर्लद शरीफ़ पढ़ा है और कुरआन मजीद की आयतें तिलावत की हैं उनका सवाब (अगर खाना या शीरीनी हो तो इतना और कहे कि इस खाना और शीरीनी का सवाब) मेरी तरफ़ से हुजूर सरबरे कायनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को नज़्र पहुंचा दे फिर उनके बसीले से तमाम अवियायेकिसाम अलैहिमुस्सलाम व सहाबा और तमाम औलिया व उलमा को अता फ़रमा (फिर अगर किसी खास बुजुर्ग को सवाब पहुंचाना हो तो उनका नाम खुसूसियत से ले जैसे यूं कहे कि) खुसूसन हज़रते गौसे पाक रज़ियल्लाहु तआला अनहु या ख्वाजये अजमेरी रज़ियल्लाहु तआला अनहु को नज़्र पहुंचा दे और फिर तमाम मूमिनीन व मूमिनात की अरवाह को सवाब अता फ़रमा । और किसी आम आदमी को सवाब पहुंचाना हो तो उसका ज़िक्र खुसूसियत से करे । जैसे यूं कहे कि खुसूसन हमारे बालिद, बालिदा या दादा, दादी या नाना नानी की रूह को सवाब पहुंचा दे और तमाम मोमिनीन व मोमिनात की रूहों को सवाब पहुंचा दे आमीन या रब्बल आलमीन बिरहमति क या अरहमर राहिमीन ।

इस्लामी कलिमे

(1) अब्बल कलिमये तैइब

ला इलाह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह ।

(2) दूसरा कलिमये शाहादत

अश्हदु अल्ला इलाह इल्लल्लाहु व अश् हदु अन्ल मुहम्मदन
अब्दुहु व रसूलुह ।

(3) तीसरा कलिमये तमजीद

सुबहानल्लाहि वल्हम्दुलिल्लाहि व लाइला ह इल्लल्लाहु वल्लाहु
अकबर वला हौ ल वला कू व त इल्ला विल्लाहिल अलीयिल
अज़ीम ।

(4) चौथा कलिमये तौहीद

लाइला-ह इल्लल्लाहु वहदु ला शरी क लहू लहुल मुल्कु व
लहुल हम्दु युह यी व युमीतु व हु व हय्युल्लायमूतु बि यदि हिल
खैरु व हुव अला कुल्ल शैइन कदीर ।

(5) पांचवा कलिमये रदे कुफ़्र

अल्लाहुम्म इन्नी अऊजु बिक मिन अन उशरिक बि क शै औं
वअना अअलमु बिही व असत्तगफ़िरु क लिमाला अअलमु बिही
तुब्तु अनहु वतबर्रतु मिनल कुफ़रि वश शिर कि वल मआसी
कुल्लहा व अस्लम्तु व आमन्तु व अकूल ला इलाह
इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह ।

ईमाने मुजमल

आमन्तु बिल्लाहि कमा हु व बि अस्माइहि व सिफ़ातिही व
कविल्लु जमी अ अह कामिही ।

ईमाने मुफ़्स्सल

आमन्तु बिल्लाहि व मलाइ क तिही व कुतु बिही व रुसुलिही
वल योमिल आखिर वल कदरि खैरिही व शाररिही मिनल्लाहि
तआला वल बअ् सि बअदल मौत ।

दुरूद शरीफ़ और मुफीद दुआये

(1) सललल्लाहु अलन्नबीयिल उम्मीयि व आलिही सललल्लाहु
अलैहि वसल्लम सलातों वसलामन अलय क या रसूलुल्लाह ।
इस दुरूद शरीफ़ को बाद नमाज़ जुमा दस्त बस्ता मदीना
मुनब्वरह की तरफ़ मुतवज्जिह होकर सौ बार पढ़े दीन व दुनियां
की बेशुमार नेमतों से सरफ़राज़ हो ।

(2) पहले दाहिना कदम रखकर मस्जिद में दाखिल हो और यह
दुआ पढ़े । “अल्लाहुम्म तहू ली अबवा ब रह मतिक”

(3) पहले बांया कदम मस्जिद से निकाले और यह दुआ पढ़े ।
“अल्लाहुम्म इन्नी असअलु क मिन फ़ज़लि क व रहमतिक”

(4) चांद देख कर यह दुआ पढ़े ।

“अल्लाहुम्म अहिल्लहु अलयना बिल अम ने वल ईमान

वस्सलामति वल इस्लाम रब्बी व रब्बुकललाहु या हिलाल ।

(5) जब बुरा ख्वाब देखे और जग जाए तो तीन बार “अऊजु बिल्लाहि मिनश्शायता निर्जीम” पढ़े और तीन बार बायें तरफ थूके फिर सोना चाहे तो करवट बदल कर सोये ।

(6) जब आसमान से तारा टूटता हुआ देखे तो निगाह नीची कर ले और यह दुआ पढ़े “माशअल्लाहु लाहै ल वला कूवत इल्ला बिल्लाह ।

(7) अंधे, लांगड़े और कोढ़ी वगैरा किसी मुसीबत ज़दा को देखे तो यह दुआ पढ़े । मगर आशेबे चश्म (आंख उठना) जुकाम और खारिश के मरीजों को देख कर यह दुआ न पढ़ें कि इन बीमारियों से बदन की इस्लाह होती है वह दुआ यह है ।

“अलहम्दु लिल्लाहिल्लज़ी आफ़ानी मिम्मबतला क बिही व फ़ज्जलनी अला कसीरिम मिम्मन ख़ ल क तफ़ज़ीला ”

(8) जब सोना चाहें तो यह दुआ पढ़ें ।

“अल्लाहुम्म बिइस्मिक अमूतु व अह या” और दूसरे सभी अवराद से फ़ारिग़ होकर सूरये काफिरून पूरी पढ़े और खामोश सो जाए । उसके बाद अगर बात चीत की ज़रूरत पड़ जाए तो दोबारा फिर पूरी सूरह पढ़ ले ।

(9) जब नींद से वेदार हो (जागे) यह दुआ पढ़े ।

“अलहम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अह याना बअद मा अमातना व इलयहिन्नुशूर ।”

(10) ज़हरीले जानवरों से हिफ़ाज़त की दुआ ।

“अऊजु बिकलिमातिल्लाहित्ताम्माति मिन शररिमा ख़ ल क ”

इस दुआ को जो सुबह के वक्त पढ़ ले तमाम दिन ज़हरीले जानवरों से महफूज़ रहेगा और जो शाम को पढ़ ले तो वह सुबह तक अमान में रहेगा ।

(11) क़र्ज़ से सुबकदोश (उत्तीर्ण) होने के लिए दुआ ।

“अल्लाहुम्म इकफ़िनी बिहलालि क अन हरामि क व अग्निनी बिफ़ज़लि क अम्मन सि वा क” हर नमाज़ के बाद ग्याहर ग्यारह बार और सुबह व शाम सौ सौ बार रोज़ाना अब्बल व आखिर दुरूद शरीफ़ । इसी दुआ की निस्वत्त मौला अली करमल्लाहु तआला बजतहहुल करीम ने फ़रमाया कि अगर तुझ पर पहाड़ के बराबर भी क़र्ज़ होगा तू उसे अदा कर देगा

(12) बरकते रिज़क के लिए अमल ।

“सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही सुब्हानल्लाहिल अज़ीम व बिहम्दिही अस्तग़फ़िरल्लाह” रोज़ाना तुलूये सुबह के साथ ही सौ बार अब्बल व आखिर दुरूद शरीफ़ के साथ पढ़ा करें । बेहतर यही है कि नमाज़े फ़ज़्र से पहले पढ़े । वर्ना अगर जमाअत काइम हो जाए तो बादे नमाज़ बहर सूरत सूर्य निकलने से पहले पढ़ ले ।

(13) बाज़ार में दाखिल हो तो यह दुआ पढ़े ।

“ला इलाह इल्लल्लाहु वह दहू ला शरीक लहू लहुल्मुल्कु व लहुल्हम्दु युह यी व युमीतू व हु व हैय्युल्ला यमूतु बियदिहिल खैर व हु व अला कुल्ल शैइन क़दीर ।

(14) नया लिवास (वस्त्र) पहने तो यह दुआ पढ़े अल्हम्दु लिल्लाहिल्लजी कसानी मा उवारी बिही औरती व अ त जम्मलु बिही फ़ी हयाती ।

(15) आईना देख कर पढ़े

“अल्लाहु लिल्लाहि अल्लाहुम्म कमा हस्सन त खल की फ़हस्सन
खुलकी”

(16) जब किसी को रुख़सत करे तो यह दुआ पढ़े
“अस्तौ दि उल्लाह दी न क व अमा न त क व खवाती म अ
म लि क”

सफ़र में जाते वक़्त अहबाब व अइज्जा से रुख़सत होते वक़्त
कहे

“अस्तौदि उ कुमुल्ला हल्लजी ला युजीउ व दाइअह”

(17) वक़्ते सफ़र यह दुआ पढ़े
अल्लाहुम्म बि क असूलु व बि क अहूलु व बि क असीरु”
जब सफ़र पर रवाना हो जाये तो यह दुआ पढ़े।

“अल्लाहुम्म इन्न नस्अलु क फ़ी स फ़ रिना हाजल बिर्र वत्तक़वा
व मिनल अ म लि मा तिरज़ा” **KAUN?**

फिर यह दुआ पढ़े अल्लाहुम्म हन्विन अलयना हाजस्स फ़ र वत
विअन्ना बुअूदू अल्लाहुम्म अन्तस साहि बु फ़िस्सफ़रि वल
खलीफतु फ़िल अहलि अल्लाहुम्म इन्नी अऊजु बि क मिंव व
असाइस्स फ़ रि व कआ बतिल मन जरि व सूइल मुन क ल
बि फ़िल मालि वल अहलि वल व ल दि”

(18) सफ़र से बापसी पर यह दुआ पढ़े।

“आइबू न ताइबू न आबिदू न लिरब्ब्ला हामिदू न”

(19) शहर में दाखिल होते वक़्त पढ़े

“अल्लाहुम्म बारिक लना फ़ीहा” तीन बार “अल्लाहुम्मरजुकना
जनाहा व ह छ्ला इला अहलिहा व ह ब्बिब सालिही अहलिहा

इलयना”

(20) जब मज़िल पर पहुंचे यह दुआ पढ़े ।

“रब्बि अनज़िलनी मुनज़्लम्मुबारकन व अन त खयरुल्मुनज़िलीन”

(21) आंधी और अंधेरे के वक़्त की दुआ ।

“अल्लाहुम्म इन्ना नस्ज़लु क मिन खयरि हाजिहरूरीहि व खयरि मा फ़ीहा व खयरी मा उमिरत बिहिव नऊजुबिक मिन शरूरिहाजिहरूरीहि व शरूरिमा फ़ीहा व शरूरीमा उमिरतबिहि”

समाप्त

विऔनिही तआला सुम्न बिऔनिरसू लिहिल अजला जल्ल जलालुहु व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ।

JANNATI KAUN?

سُورَةُ الْفُلْكٍ وَهِيَ سُورَةٌ مَّا يَأْتِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ مَلِكِ

بِوْهِ الدِّينِ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينَ اهْدِنَا

الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ صِرَاطًا الَّذِينَ أَنْعَمْتَ

عَلَيْهِمْ هُدًى عَيْرِ الْمَعْصِيَةِ بَلِّيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ

سُورَةُ النَّاسِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ فِيْيَنِيْ ابْرَأُ

قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ مَلِكِ النَّاسِ اللَّهِ النَّاسِ

مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِيْنَ الَّذِي يُوَسِّعُ

فِيْ صُدُورِ النَّاسِ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ

سُورَةُ الْفُلْكِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ وَلِلْحَمْدِ لِلَّهِ

قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفُلْقِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ وَ

مَنْ شَرِّعَ عَمَّا يُنِيبُ إِذَا وَقَبَ وَمَنْ شَرِّيْرُ النَّفَّاثَاتِ

فِي الْعُقَدِ وَمَنْ شَرِّيْرُ حَمِيدٍ إِذَا حَسَدَ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ وَبِسْمِ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ

قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ أَللَّهُ الصَّمَدُ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ

يُوْلَدُ وَلَمْ يَكُنْ لَّهُ كُفُوًا أَحَدٌ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ وَبِسْمِ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ

تَبَدَّى يَدَ أَبْنَى لَهُيْبٍ وَتَبَدَّى مَا أَخْفَى عَنْهُ

مَالُهُ وَمَا كَسَبَ سَيَصْلِي نَارًا ذَاتَ

لَهُيْبٍ وَمَا هُرَأَتْهُ حَمَالَةُ الْحَطَبِ فِي

جَنَدِ الْحَبَلِ مَنْ هَسِدَ

بِسْمِ رَبِّ الْمُصْرِفِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ وَبِسْمِ رَبِّ الْعِزَّةِ

إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللَّهِ وَالْفَتْحُ وَرَأَيْتَ أَنَّكَ مِنْ

يَدِ خُلُونَ رَفِيْدِ بْنِ اللَّهِ أَفْوَاجًا فَسَبَّهُ

بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرَةَ رَبِّكَ كَانَ تَوَسِّاً بِكَمْ عَلَيْكَ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ وَمَتَّ أَبَكَ
وَقَالَ الْكُفَّارُ هُوَ
لِسْنَةِ اللَّهِ الْأَكْبَرِ وَمَنْ يَكُونُ

قُلْ يَا يَهُودَا الْكَفِرُونَ لَا أَعْبُدُ مَا تَعْبُدُونَ

وَلَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ يَعْلَمُ مَا أَعْبُدُ وَلَا أَنَا عَابِدٌ

مَا عَبَدْتُمْ وَلَا أَنْتُمْ عَبْدُونَ مَا أَعْبَدْتُمْ

لَكَمْ دِيدِ يَشْكُرُ وَالْمَدِينَ عَ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝
يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَكْبُرٌ فَلَمَّا
مَرَّ مَنْ وَهْرَنْ بَلَقْ بَلَقْ بَلَقْ

إِنَّمَا أَعْطَيْنَاكَ الْكِتَابَ فَصَلِّ لِرَبِّكَ

وَإِنْ حَرْطَانْ شَانْكَ هُوَ الْأَبْرَعُ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ وَهِيَ سَبْعَ آيَاتٍ
وَقَوْلًا مَا يَعْكِسُهُ

أَرَيْتَ اللَّهَ مَنْ يَكْنِي بِاللَّهِ يُنْ فَنِّي لَكَ اللَّهُمَّ

يَدِيْعَ الْبَيْتِ الْمَكْرُونِ وَلَا يَجْعَلْ عَلَى طَعَامِ الْمُسْكِينِ طَ

فَوَيْلٌ لِلْمُهَمَّلِينَ ۝ الَّذِينَ هُمْ عَنْ حَدَائِقِهِمْ

سَاهُونَ^{٦٦} الَّذِينَ هُمْ يُرَاءُونَ^{٦٧} وَيَمْنَعُونَ الْمَأْعُونَ^{٦٨}

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ^{٦٩} وَهَلْ يَرَى بَعْدَهُ

لَا يُلْفِتُ قُرْبَشٌ^{٧٠} الْفِهْمُ رِحْلَةَ الشِّتَاءِ وَالصِّيفِ^{٧١}

فَلَيَعْلُمَ وَارِبُّ هَذَا الْبَيْتِ^{٧٢} الَّذِي أَطْعَمَهُمْ^{٧٣}

مِنْ جُوعٍ^{٧٤} وَأَمْنَاهُمْ مِنْ خُوفٍ^{٧٥}

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ^{٧٦} وَهَلْ يَرَى بَعْدَهُ

الْأَوْتَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ^{٧٧} بِأَصْحَابِ الْفِيلِ^{٧٨} الَّذِي

يَجْعَلُ كَيْدَهُمْ^{٧٩} فِي تَضْلِيلٍ^{٨٠} وَأَرْسَلَ عَلَيْهِمْ^{٨١}

ظَلَّرًا^{٨٢} أَبَابِيلَ^{٨٣} تَرْمِيمَهُمْ^{٨٤} بِحِجَارَةٍ^{٨٥} مِنْ سِجِّيلٍ^{٨٦}

فَجَعَلَهُمْ كَعَصِيفٍ^{٨٧} مَا كُوِّلَ^{٨٨}

